इएह थिक जीवन

ISBN: 978-93-5408-593-2

दाम : 250 रूपया

सर्वाधिकार सुरक्षित © : रबीन्द्र नारायण मिश्र

पहिल संस्करण :2020

लेखक एवम् प्रकाशक :रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP: 201315
M-9968502767

इएह थिक जीवन

A collection of reminiscences
by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

एहि पोथीक सर्वाधिकार पुस्तकक लेखक श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र लग सुरक्षित अछि। काँपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छायाप्रति एवम् रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

इएह थिक जीवन

संस्मरण

रबीन्द्र नारायण मिश्र

समर्पण

पूज्य पितामह स्वर्गीय श्रीशरण मिश्रकेँ

संस्मरणमे

ई पोथी सादर ससिनेह हुनके समर्पित

लेखक परिचयः

नाम : रबीन्द्र नारायण मिश्र
पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र
माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी
जन्म तिथि :२ जनबरी १९५४(प्रमाण पत्र)

२४ अगस्त १९५२(जन्मपत्र)

पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह
मातृक : सिन्घिआ ड्योढ़ी
वृति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवा निवृत्त)/
स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवा निवृत्त)
शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक
प्रकाशित कृति :
मैथिलीमे:-
१. 'भोरसँ साँझ धरि' (आत्म कथा) २. 'प्रसंगवश' (निवंध) ३. 'स्वर्ग एतहि अछि' (यात्रा प्रसंग) ४. 'फसाद' (कथा संग्रह) ५. `नमस्तस्यै' (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध)

७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास) ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास) १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण) १५.ढहैत देबाल(उपन्यास) १६.पाथेय(संस्मरण) १७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास) १९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास) २१. बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)२२.राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास)२५.दीप जरैत रहए(उपन्यास) २६.ठेहा परक मौलायल गाछ(उपन्यास)

२७. पटाक्षेप(उपन्यास) २८. माटि बजा रहल अछि(यात्रा प्रसंग)

In English: -
1.The Lost House (Collection of short stories)
2.Life is an art
हिन्दी में –
१.न्याय की गुहार(उपन्यास)

(उपरोक्त पोथीसभ pothi.com, amazon.com आओर www.flipcart.com पर सँ किनल जा सकैत अछि)

इमेल : mishrarn@gmail.com
ब्लोग : mishrarn.blogspot.com
Mobile -9968502767
एमजोनक लेखक पृष्ठ : amazon.com/author/rnmishra

आभार

देश/विदेशक विभिन्न भागमे रहि रहल मैथिलीप्रेमीसभ हमर पुस्तकसभ पढ़ि रहल छथि आ अपन उत्साहवर्धक प्रतिक्रियासँ हमरा लिखबाक हेतु निरंतर प्रेरित करैत रहलाह अछि। ओ सभ धन्यवादक पात्र छथि ।हम हुनकासभक प्रति सादर आभार व्यक्त करैत छी ।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

15.08.2020

अनुक्रम

1.यशस्वी भव! दीर्घाउ भव!/9

2.सरिसवबाली काकी/19

3.कमाल चौक- अड़ेर/25

4.स्वामी आनंद वैराग्य/32

5.आल्हाबला/39

6.जगले रहब यौ/43

7.उच्च विद्यालय एकतारा/47

8.अष्टयाम आ नबाह/58

9.अखबारक अमल/61

10.पिताक देहावसान/65

11.एहनो होइत छैक/72

12.ग्रामोफोन/79

13.इसकूलिआ संगी श्रीनारायणजी/83

14.माधवी नानी/92

15.लोधी गार्डेन/97

16. गामक दाहा/108

17.दिल्लीक दुरंगी दुनिआ/112

18. रेल डायरी/118

19.माएक नाम पत्र/135

१

यशस्वी भव ! दीर्घायु भव !

“रे मिआँजान! महीस चुकरि रहल छौ ।”

“कतए छैं रे!”

“सुनि नहि रहल छैँ?”

“जल्दीसँ पड़रुकेँ खोल । हम आबि रहल छी ।”

बाबा नित्य भोर आ साँझ चिकरि कए मिआँजानकेँ अबाज दैत छलाह । मिआँजान तुरंत महीस लग पहुँचितए । बाबा तुरंत दलानपरसँ ओलारपर पहुँचितथि आ थोड़ेकालक बाद भरिडोल फेनाएल दूध लेने वापस अबितथि । ई घटनाक्रम चारि-पाँच मास धरि चलैत । तकरबाद महीसक दूध कम होमए लागैत । जौँ-जौँ दूध कम होइत तौँ-तौँ ओकर स्वाद बढ़िआँ होइत जाइत । कहल जाइत छल जे महीस बकेन भए गेल अछि। तकरबाद जखन महीसकेँ गर्भाधानक समय अबैत तँ मिआँजान ओकरा लेने बाधेबाध घुमैत चिकरैत छल-अर्र! चहत -चहत -चहत... अर्र! चहत- चहत -चहत...आ कतहुसँ पाड़ा कुदैत-फनैत अबैत। गोटैक

दिन बाबा प्रसन्नतापूर्वक घोषणा करितथि-“महीस बाहि गेल।”तकरबाद महीस दूध देनाइ क्रमशः बंद कए दैत ।

बादमे मिआँजान नौकरी करए सहर चलि गेल । ओकरा बदलामे कैकबेर कैकटा चरबाह आएल गेल। मुदा केओ स्थिर नहि रहि सकल । हारि कए बाबा महीसकेँ पोसिआ लगा देलाह । दूध-दही उठओना आबए लागल । मुदा ओहि दूधक स्वाद घरक महीस दूध सन नहि होइत छल। नव बिआएल महीसक दूध किछुदिन धरि अशुद्ध रहैत छल । ओकर खिरसा बनैत छल । बादमे ओसभ दुर्लभ भए गेल। बाबा अपन महीसक बहुत गाढ़ दूध पीबाक अभ्यस्त छलाह । जखन महीस पोसिआ लागि गेल आ परिवारमे लोक बढ़ि गेल तँ उठओना लेल गेल दूधसँ बाबाकेँ राबड़ीसन गाढ़ दूध भेटब मोसकिल भए गेलनि । एहिबातक अफसोच करैत हुनका कतेको बेर देखिअनि ।

हमरसभक दलान आ ओलारक बीचमे पोखरि छल । पोखरिक उतरबारि मोहारक बाटे एकपेरिआ रस्ता छलैक । ओही देने ओलारपर पहुँचल जा सकैत छल । क्रमशः ओ एकपेरिआ रस्ता लग-पासक जमीनक मालिकसभ धकिअबैत गेलाह । किछु समयक बाद ओ रस्ता नहि रहि गेल । ओलारपर जाएब-आएब मोसकिल भए गेल । तथापि बहुतदिन धरि वैकल्पिक रस्तासभक ओरिआओन होइत रहल । ओहो रस्तासभ गाहे-बगाहे बंद होइत गेल। बादमे हमरसभक घरे लग उतरबरिआ कातमे माल-जालक घर बनल । दलानसँ सटले पूब बड़दक थरि बनल ।

एते बात तँ भए गेल मुदा अहाँ कहि सकैत छी जे अखन धरि बाबाक नाम नहि कहलहुँ । तँ से सुनिए लिअ। हुनकर नाम रहनि स्वर्गीय श्रीशरण मिश्र (पिताक नाम स्वर्गीय गुमानी मिश्र गाम

अड़ेर डीह परगना जरैल) ।हुनकर पिता स्वर्गीय गुमानी मिश्र ओहि समयमे इलाकामे संपन्न व्यक्ति मानल जाइत छलाह ।

बाबा अन्हरोखे उठैत छलाह ।जौं जन अढ़ाबक होनि तँ अहल भोरे सिनुआरा टोल जइतथि आ तकरबाद नित्यकर्म करबाक हेतु नवका पोखरिपर चलि जइतथि ।नवका पोखरिपर हुनकोसँ पहिने कैकगोटे पहुँचल रहैत छलाह जाहिमे प्रमुख छलाह बंगटकाका,बरमाबालीकाकी आ सरिसवबाली काकी ।नवका पोखरिसँ सटले बसल लोकसभमे सँ कैकटा महिलासभ सेहो स्नान करबाक हेतु ओतए भोरे पहुँचि जाइत छलि ।जँ खेतमे जन काज करैत होइत तँ बाबा ओकरसभक पनपिआइ लए कए जैतथि आ खेतक काज समाप्त भेलाक बादे ओ स्नान-पूजा करैत छलाह । तकरबाद वापस घर अबितथि ।

बहुत दिन धरि बाबा शालीग्राम भगवानक पूजा करैत छलाह ।पूजामे जँ कोनो व्यवधान भेल तँ हुनका कैकबेर बहुत तमसाइत देखिअनि । कैकबेर तँ ओ तमसा कए भगवानकेँ शर्माजीक ओहिठाम पठा दैत छलाह ।फेर कहिओ मोन होइतनि तँ हुनका ओहिठामसँ भगवानकेँ वापस मंगा लितथि । ईसभ कैकबेर हमसभ देखिऐक ।

बाबा स्वभावसँ बहुत कर्मठ,मेहनती,स्वावलंबी मुदा तमसाह छलाह ।चौहत्तरिम वर्षक बएस धरि ओ खेती स्वयं करैत छलाह ।हुनका खेतीसँ हटितहि घरक आर्थिक स्थिति गड़बड़ाइत गेल ।तकरबाद खेतसभ बटाइ लागए लागल ।परिवार पैघ भए गेल छल ।हमसभ नौ भाए-बहिन रही ।बाबूजी,माए आ बाबा लगाकए बारहगोटे भेलहुं।बादमे हमर नानी सेहो आबि गेल रहथि। ओ मसोमात छलीह आ हमर माए हुनकर एकमात्र संतान रहथिन।

एकाधटा पाहुन रहितहि छलाह । अस्तु, कुलमिलाकए सोलहगोटेक नियमित आश्रम छल। एतेकगोटेक जलखैसँ लए कए भोजनधरिक ओरिआन करबामे माए दिन-राति व्यस्त रहैत छलि । ओहिमे हमसभ इसकूल जाइ। बाबूजी सेहो अपन काजपर जाथि। बाबाक पूजा-पाठ होनि । सभ काजक जिम्मेबारी एकसरि हमर माए सालक-साल निर्वाह करैत रहलि ।

बाबाकेँ छओटा भाए आ दूटा बहिन रहथिन । एकटा बहिन तँ नैहरेमे बसाओल गेल रहथिन आ दोसरक बिआह वभनगामा(जनकपर,नेपाल)क एकटा संपन्न परिवारमे भेल रहनि। हमरा जतेक मोन पड़ि रहल अछि बाबाक दुनू बहिन देखबामे गोर-नार आ अतीब सुन्दरि छलि । दुर्गा दाइ गामेमे बसल रहथि । तेँ हुनकामे बहुत ठसक छलनि। भाएसभक घरे-घर घुमि कए भौजीसभपर हुकुम चलबथि। बभनगामाबाली पीसी स्वभावक बहुत मृदुल रहथि । दुर्भाग्यवश ओ विधवा भए गेलीह। हुनका दूटा पुत्र रहथिन। हुनकर वभनगामामे नीक संपत्ति रहनि। मुदा दियादसभ गड़बड़ करैत छलनि । बाबा कैकबेर एहि प्रसंगसभमे वभनगामा जाइत छलाह आ पिसीक काज सोझरा अबैत छलाह। बाबा जखन कोनो बातपर रुसि जाइत छलाह तँ वभनगामा चलि जाइत छलाह । ओहिठाम दस-बीस दिन रहितथि। वापसीमे गृहस्थ हेतु उपयोगी किछु-किछु बस्तु जेना हर,बैलगाड़ी उपहार जरूर भेटैत छलनि । वभनगामासँ लौटलाक बाद बाबाक रोहानी बदलल रहैत छलनि। ओ स्फूर्तिसँ भरल रहैत छलाह आ वापस आबि अपन गृहस्थीक काजमे जोर-सोरसँ लागि जाइत छलाह।

बाबा अपना लेल पनही मधुबनीसँ अनैत छलाह । ओहिमे पहिने कैकदिन धरि अंडीक तेल दए कए ओकरा नरम कएल जाइत

छल । गाममे पनही पहिरि कए ओ साँझमे टहलैत नवका पोखरि स्थित महादेव मंदिर धरि जाइत छलाह । ओहिठाम नित्य हुनकर दू-तीन घंटा समय बितैत छलनि । एकदिन एहिना टहलैत काल सड़कपर एकटा साइकलसँ टकरा गेलाह । तकरबादतँ तमासा लागि गेल । ओहि साइकलबलाकेँ तँ जे भेलैक,से भेलैक,मुदा ओकर साइकिल सेहो छिनने चलि अएलाह । बादमे ओ बहुत गोहरेलक आ घटी मानलक तखन ओकर साइकिल वापस भेल ।

बाबा अपन युवावस्थामे सशक्त पहलवान रहथि । कहाँदनि एकदिस कैकगोटे आ दोसर दिस एसगरे चार चढ़ा दैत छलाह । हमसभ तँ हुनका जखन देखलिअनि आ जखनसँ हुनकर आकृति मोन अछि ओ बूढ़े देखाइत छलाह । मुदा ओ छलाह एकदम चुस्त । सभटा खेतीबारी ओ एसगरे करैत छलाह । ककरो मजाल नहि छल जे हुनकर खेतमे बिदति कए दैत । कैकबेर घराड़ीक सीमाक हेतु,कलमक बाँस हेतु वा खेतमे पानि पटेबाक हेतु हुनका झंझट करए पड़ैत छलनि । एकबेर एहीसभ विषयमे दियादेमे बाता-बाती भए गेल । बात किछु आगा भए गेल । बाबाक कहलापर हम बंगट काकाकेँ पंचैतीक हेतु बजाबए गेल रही। बंगटकाका ओहि समयमे गामक मानल पंच होइत छलाह । पहलवान तँ छलाहे संगहि ठाँइ-पठाँइ अपन बात कहबाक हेतु प्रसिद्ध छलाह । पंचैती भेल आ संबंधित व्यक्ति बाबासँ घटी मानलनि । बात ओतहि खतम भए गेल । आइ-काल्हि एहन स्थितिमे कहि ने की-की होइत? मुदा हुनकासभमे एतेक छल-प्रपंच नहि रहनि । आएल पानि गेल पानि बाटे बिलाएल पानि- से बला हाल रहैक ।

बाबाक बिआह सोतीपुर सलमपुर(समस्तीपुर लग) शीलानाथ झा पाँजिमे भेल रहनि । ओहि समयमे पाँच सए चानीक सिक्का हमरसभक परबाबा दए ई बिआह ठीक केने रहथि कारण जाति-पाँजि बला कन्या आनब ओहि समय बहुत प्रतिष्ठाक गप्प बूझल जाइत छल । बादमे बाबाक सारसभ जनाढ़मे जा कए बसि गेल रहथि । जनाढ़सँ बहुत दिन धरि हुनकर सारसभ बाबासँ भेंट करए आबथि आ मासक मास बाबा लग रहि जाथि । ओहिमे बाबाक एकटा सार स्वर्गीय सतंजीव मिश्र तँ हमरा गाममे रहि कए बहुत दिन पढ़लो रहथि। बादमे सभाक समय ओ अवश्य आबथि आ कैक मास धरि पहुनाइ केलाक बाद जनाढ़ वापस जाथि । बाबाक हेतु कैकटा उपहार जेना चक्कू,सरौता आनथि ।

बाबाकेँ एकमात्र जीवित संतान हमर बाबूजी रहथिन । हुनकर हार्दिक इच्छा रहनि जे ओ नीकसँ पढ़थि । ताहि हेतु हुनका वाटसन इसकूल मधुबनीमे छात्रावासमे राखि पढ़ाइ करबाक ब्योंत केने रहथि । मुदा बाबूजीक ध्यान गेनखेलीपर बेसी आ पढ़ाइपर कम रहैत छलनि । गेनखेलीमे बाबूजीकेँ कतेको तगमासभ भेटल रहनि । किछुदिनक हेतु जखन ओ कोलकाता गेल रहथि तँ हुनकर चयन मोहनबगानक फुटबालटीममे भए गेल रहनि । मुदा ओ कोलकातामे बेसीदिन नहि टिकलाह आ गाम वापस आबि गेलाह। ओ आगा नहि पढ़ि सकलाह जखन कि हुनकर कैकटा संगी बहुत आगू गेलाह । बादमे एहि बात हेतु हुनका बहुत अफसोच करैत देखिअनि । बाबाक कहाँदनि दूटा आओर संतान भेल रहथिन जे अकाल कालक गालमे समा गेलाह। तेँ बाबूजी एसगरे रहि गेलथि।

बाबा अपन एकमात्र संतान स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्रक बिआह टेकटारि टीसन लग सिंघिआ ड्योढ़ीमे बहुत संपन्न परिवारमे

स्वर्गीय रामप्रसाद झाक एकमात्र संतान(स्वर्गीया दयाकाशीदेबी)सँ करबओने रहथि । ओहि समय हमर माएक बएस नओ साल आ बाबूजीक बएस बाइस साल छलनि। हमर नानाक देहांत बहुत पहिने(हमर माएक जन्मसँ किछु मास पूर्बहि) भए गेल रहनि । एतेक कम बएसमे सासुर अएलाक बाद हमर माए पचासी साल सासुरमे रहलीह आ निरंतर संपूर्ण परिवारक सेवा करैत रहलीह । हमर दाइक असामयिक मृत्युकबाद माए तीस वर्षधरि बाबाक सेवा केलथि। एहन पुतहु आब कतए पाबी?

हमर दाइ बहुत कमे बएसमे मरि गेलीह । बाबाक बएस ओहि समयमे पचास साल रहल होएतनि। दाइकेँ पेचिस भए गेल रहनि । ओहि समयमे कोनो इलाज रहैक नहि । बैदक पुड़िआ बहुत दिन धरि खाइत रहलीह। मुदा हुनकर स्वास्थ्य गड़बड़ाइते गेल । आखिर ओ कमे बएसमे चलि गेलीह । हुनकर पोताक मुँह देखबाक मनोरथ लागले रहि गेलनि । हमर चारिटा बहिनक जन्म भए गेल रहनि । ताबेधरि हमर जन्म नहि भेल छल । एहिबातसँ ओ बहुत दुखी रहैत छलीह । हुनका मृत्युक बाद एकटा आओर बहिनक जन्म भेलनि । कहक माने जे पाँच बहिनक जन्मक बाद छटम संतान हम भेलिअनि । हमर जन्मसँ बाबा बहुत प्रसन्न भेल रहथि।

हमर परिवारमे जखन कोनो संतानक जन्मक समय होइत तँ बाबा सिनुबारा टोलसँ चमाइनकेँ बजबितथि। दिन होइ वा दूपहर राति ओएह ओ काज करैत छलाह । पहिनेसँ बकरीकेँ ठेकना कए राखल जाइत जाहिसँ जनमौटी नेनाकेँ बकरीक दूध जनमितहि देल जा सकए ।

कहाँदनि जखन हमर जन्म भेल तँ बाबाकेँ ई समाचार दैत हुनकर बहिन कहलखिन जे नेनाक नाक पीचल छैक । बाबा कहलखिन-

"जएह दही गे भुलिआ । हिनकर नाककेँ के देखैत अछि।"- से कहि ओ महादेवकेँ बहुत धन्यवाद देबए लागल रहथि। हमर जन्मसँ पूर्व बाबा महादेवकेँ पोताक हेतु बहुत प्रार्थना करथि। हुनका एकदिन लगेक इनार लग एकटा डमरु भेटलनि । ओहि डमरुकेँ बजा-बजा कए ओ महादेवक नचारी गबैत छलाह आ महादेवसँ पोताक जन्मक हेतु मनता करैत छलाह । बाबा कहथि-

"डमरु बजओलासँ प्रसन्न भए महादेव चारिटा पोता देलथि ।"

ओहि डमरुकेँ बजबैत हमहूँ बादमे बाबाकेँ देखने छलिअनि । बहुत बादमे जा कए बाबा ओहि डमरुकेँ नवका पोखरिपर महादेव मंदिरमे राखि देलखिन ।

परिवारमे ज्येष्ठ हेबाक कारण बाबा बहुत गोटेक गुरु छलाह । ताहिमेसँ प्रमुख छलाह भैया(हमर पितिऔत -श्री शशिभूषण मिश्र) । हुनका आ भौजी -दुनूगोटेकेँ बाबाक प्रति बहुत श्रद्धा रहनि । ओ सभ हुनकेसँ मंत्र लेने छलाह । बाबा हुनकर बरोबरि चर्चा करथि । कहल करथि जे अपने प्रयाससँ पढ़िकए ओ छोटे नौकरी कए पूरा परिवारक नक्सा बदलि देलनि । बातो सही। हुनकर चारूपुत्र उत्तम सँ उत्तम शिक्षा प्राप्त केलथि आ बहुत उच्च पद धरि पहुँचलथि । गाम-घरमे बहुत संपत्ति अर्जित केलाह । हमसभ नेनेसँ हुनका भैया कहिअनि । हुनकामे आश्चर्यजनक फुरती

सभदिन देखबामे आएल । सरकारी नौकरीसँ सेवानिवृत्तिक बादो ओ निरंतर सक्रिय रहलाह ।

एकदिन बाबा नवका पोखरिपर साँझक पूजाक समयमे मंदिरेपर बेहोस भए गेलाह । तुरंते ई बात सौंसे गाममे पसरि गेल । देखिते-देखिते लोकक करमान लागि गेल । केओ हुनका पंखा करथि तँ केओ पानि पिआबथि,केओ भगवानक नाम लेथि । लोकसभके भेलैक जे आब ओ गेलाह । मुदा थोड़बे कालक बाद हुनकर हालतमे सुधार होमए लागल आ घंटाभरिक बाद स्वयं चलि कए ओ घर पहुँचि गेलाह ।

बाबा मजगूत गृहस्थ छलाह । घर-बहारक सभटा काज हुनका बूझल रहनि । खाट घोरब, जौर बनाएब,धान रोपनीसँ कटनी धरि ओ मुस्तैद रहैत छलाह । जखन दलानपर धानक कटनीक बाद दाउन होइत तँ बाबा भोरे ऊठिकए बरदक ओरिआन करैत छलाह। स्वर्गीय बच्चाकाका(उदयकान्त मिश्र)क बरद सभदिन मेहिआमे बहैत छल । कहक माने जे जँ सातटा बरद दाउनमे लागल अछि तँ सभसँ शुरुमेमे जे बरद होइत तकरे मेहिआ कहल जाइत छल । सामान्यतः सभसँ अहदी आ अबल बरदकेँ मेहिआ मे राखल जाइत छल । जखन दाउन भए गेल तँ धानकेँ तौलल जाइत छल। गामक किछुगोटेकेँ एहिकाजमे महारत छलनि। हुनका धान तौलबाक हेतु बजाओल जाइत छल । ओ धानकेँ तौलितथि-

रामहि राम एक-एक,रामहि राम दू-दू, एहि तरहें गनैत धानक तौलनाइ होइत । तकरबाद एकसूप धान कात कए राखि देल जाइत जे कोनो गरीब ब्राहमणकेँ दानमे देल जानि । एहि तरहेँ अगहनसँ शुरू भए मास-दूमास ई प्रक्रिया चलैत रहैत। अधिकांश

धानकेँ दरबाजाक कोनपर बनल बखारीमे राखि देल जाइत छल । तकरबाद बँचल धानकेँ घरमे राखल ढक,कोठी आदिमे राखल जाइत छल । बादमे ई परिस्थिति नहि रहल ।

बाबाक जीवन बहुत मानेमे एकाकी रहनि । कमे बएसमे हमर बाबीक देहांत भए जेबाक कारण ओ व्यक्तिगत रूपसँ नितांत एसगर रहथि । ई बात कैकबेर हुनकर व्यवहारमे परिलक्षित होइतो छल । ओना तँ एकहि पुत्रसँ हुनका भरल-पूरल परिवार रहनि । नओटा पोता-पोती,बेटा-पुतहुसभ रहनि। ओ ओहीमे लागलो रहैत छलाह। मुदा जौँ-जौँ हुनकर बएस बढ़ैत गेल हुनकर मोनक उदासी साफे देखल जा सकैत छल । तकर मूल कारण परिवारक आर्थिक स्थितिक ह्रास छल । बहुत रास एहन घटनासभ भेल जे ओ सपनोमे सोचने नहि रहल हेताह । मुदा भावी प्रबल होइत अछि । जे हेबाक रहैत अछि से होइते अछि । जे सुख-दुख हुनका लिखल छलनि ,से भेलनि।

बाबा ८६ साल जीलाह । जीवनक अंतिम समयमे बहुत कमजोर भए गेल रहथि । दरबाजापर दिन-राति समय कटैत छलनि। जँ केओ मजगूत युवक देखितथि तँ ओकरासँ जतबितथि। कैकबेर ब्रम्हुजीकेँ अपन सुखाएल हड्डीपर चढ़ा लैत छलाह । ओहो भरिमोन हुनकर सेवा करितथि । पहलवानीक समयक भग्नावशेष हुनकर देहमे तखनो बहुत जान छल । व्यायाम छुटि गेलाक कारण हड्डी दुखाइत रहैत छलनि । तखन होनि जे केओ हुनका जतैत रहए। मुदा एतेक समय ककरा लग रहैक?

सन् १९७५मे हम दरभंगामे दूरभाष निरीक्षक रही। बेलामे हमर डेरा रहए । नौकरीक संगहि प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी करैत रही । एकदिन भोरे पता लागल जे बाबा मरि गेलाह । किछुदिनसँ

ओ अस्वस्थ छलाह । अफसोचक बात जे अंतिम समयमे हमरा हुनकासँ भेंट नहि भए सकल ।

बाबा बहुत अध्यात्मिक व्यक्ति रहथि । दुपहरिआमे ओ नियमित रामायण पाठ करथि। एकादशी-चतुर्दशी सहित अनेको व्रत-उपवास ओ नियमित करैत छलाह । महादेवक भक्त छलाह। सभसँ बेसी ओ बहुत कर्मठ आ सशक्त गृहस्थ छलाह । जाधरि हुनका शरीर संग देलक ताधरि परिवारकेँ प्रतिष्ठापूर्वक पालन-पोषण करैत रहलाह। सही मानेमे ओ हमर परिवारक लक्ष्मी छलाह। जखन कखनो एकांतमे रहैत छी,बाबा ध्यानमे आबि जाइत छथि। नमगर-पोरगर, फुरतीसँ भरल, हाथमे छड़ी लेने जेना अखनो ओ हमरा लग ठाढ़ भए आशीर्वाद दए रहल होथि । जेना कहि रहल होथि-“यशस्वी भव ! दीर्घायु भव !”

१९.०३.२०२०

२

सरिसवबाली काकी

हम जहिआसँ मोन पाड़ैत छी,सरिसवबाली काकीकेँ ओहिना देखलिअनि । उज्जर चक-चक नुआ पहिरने माथ झपने,बहुत नहू-नहू बजैत अपन बात कहितथि । अन्हरोखेमे अपन दियादिनी बरमाबाली काकीक संगे नवका पोखरिपर स्नान-पूजा करबाक हेतु जइतथि । रस्तामे एकाधगोटे आओर संग भए जइतथिन । सभगोटे घाटपर स्नान करैत घर-बाहरक गप्प-सप्प करितथि , महादेवकेँ जल ढारितथि आ वापस घर जखन आबि रहल होइतथि तखन गामक लोकसभ ओछाओन छोड़बाक

उपक्रममे रहैत । जाड़क मास रहैत तँ अधिकांश लोक घूरक सेवन करैत रहैत । भोरे-भोर चाह पीबाक चलनि ओहि समय गामसभमे नहि रहैक । मुदा केओ-केओ चाह पीबैत छलाह,से सभ अड़ेरचौकपर पहुँचि जइतथि । किसानसभ जन अढ़बए चलि जइतथि । जँ अगहनक मास अछि तँ दरबजे-दरबजे दाउन होमए लगैत। क्रमशः मौसम बदलैत,लोकक दिनचर्या तदनुकूल बदलि जाइत । मुदा सरिसवबाली काकीकेँ नित्य ओहिना देखिअनि । माघोमासमे हुनका ओढ़ना ओढ़ने नहि देखिअनि । स्नान-पूजा कए लौटैत काल जाड़क मासमे थर-थर कपैत किछु-किछु मंत्र पढ़ैत ओ वापस अपन घर आबि जइतथि ।

हमसभ नेना रही, जबान भेलहुँ । मुदा सरिसवबाली काकी ओहिनाक-ओहिना रहथि । हुनका कहिओ भरिमोन हँसैत नहि देखलिअनि । जखन कखनो हुनकर आङन जाइ तँ ओ कोनो -ने -कोनो काजमे बाझल रहतथि। हुनकर हाथक बनाओल भोजनक प्रशंसा जतेक करी ततेक कम । कैकबेर हमरा हुनका ओहिठामसँ नोत होइत छल। आब सोचैत छी तँ सोचिते रहि जाइत छी । कतेक मनोयोगपूर्वक ओ भोजन बनबैत छलीह । आङनमे जाइते लगैत जेना कोनो बहुत पवित्र स्थानपर आबि गेल छी । सौंसे आङनमे एकटा खढ़ नहि देखाइत । सदिखन चमचम करैत रहैत छलनि हुनकर आङन ।

ओहि आङनमे गेलाक बाद एकटा अद्भुत शांतिपूर्ण वातावरण रहैत छल । कुलमिला कए चारिगोटे ओहिघरमे रहथि । भाइजी(स्वर्गीय अनुग्रह नारायण झा),सरिसवबाली काकी,बरमाबाली काकी, आ कामदेव भाइ। यद्यपि संबंधमे ओ काका लगितथि तथापि हमसभ नेनेसँ हुनका भाइजी कहैत

छलिअनि ।ओ काशीसँ संस्कृत पढ़ने छलाह ।ज्योतिष रहथि । हमर गामक मुखिआ सेहो निर्विरोध चुनल गेल रहथि । भूदान आंदोलनमे विनोबा भावे संगे बहुत सक्रिय छलाह ।एकबेर तँ ओ अपनसभटा जमीन भूदान आंदोलनमे दान कए देने रहथि। हुनका लोकनिक ओएह जमीनसँ जीविका चलैत छलनि ।तेँ लगैत अछि जे भावाबेसमे ओ ई काज कए देने रहथि बादमे बरमा बाली काकीक प्रयाससँ ओ जमीनसभ वापस भेल छल ।

हमर प्रपितामह स्वर्गीय गुमानी मिश्र बहुत संपन्न लोक रहथि । हुनका छओटा पुत्र आ दूटा पुत्री रहथिन । एकटापुत्र बिआहक बाद कमे बएसमे मरि गेलखिन । एकटाकेँ कोनो संतान नहि भेलनि। चारिटाकेँ संतानसभ भेलनि ।एकटा कन्याक बिआह वभनगामा(जनकपुर लग ,नेपालमे} रहनि । दोसर कन्याकेँ बिआहक बाद गामे बसाओल गेलनि । ओहि समयमे बेटीकेँ बसेनाइ,गाममे भगिनमानकेँ राखब, गौरवक बात बूझल जाइत छल । हुनका जमीन,कलम,पोखरि सभचीजमे हिस्सा देल गेल रहनि । हुनका तीनटा पुत्र भेलनि। ओहिमेसँ एकटा रहथि भाइजी। दोसर रहथि-स्वर्गीय जगदीश झा ।ओ वाटसन इसकूल मधुबनीमे पढ़ैत रहथि । गेनखेलीमे नाम केने रहथि । मुदा कमे बएसमे टीबी बिमारीसँ हुनकर मृत्यु भए गेलनि। हुनके पत्नीकेँ हमसभ बरमा बाली काकी कहिअनि। (बरमा बेतिआ लग कोनो गाम छैक ।) हमसभ नेनामे हुनकर एकटा ग्रूपफोटो देखने रही जे हुनकर परिवार लगमे हुनकर एकटा निसान छल ।गेनखेलीमे ओ बहुत रास तगमासभ जितने रहथि । सेहो हमसभ नेनामे देखने रही। बरमाबाली काकी बहुत जोगा कए ई दुनू बस्तु रखने रहथि । हुनका एकटा पुत्र छथि कामदेव भाइ ।बाबाक बहिनक नाम रहनि

दुर्गा दाइ । दुर्गा दाइक तेसर पुत्रक बिआह सरिसवबाली काकीसँ रहनि। हम कहिओ हुनका नहि देखलिअनि । लोकसभ कहैत जे ओ बिआहक किछुए दिनक बाद टीबी बिमारीसँ मरि गेलथि । तकरबाद सरिसवबाली काकी विधवा भए गेलीह । हुनकर सौंसे जीवन ओहिना उजरा सारी पहिरने बीति गेलनि।

हम जखन करवनो ओहि आङन जाइ,सरिसवबाली काकीकेँ काजे करैत देखिअनि । घरक काजसँ जखन फुरसति होनि तँ चरखा काटथि । ओहि समयमे चरखा चलेबाक एकटा हवा बहल रहैक । हमरसभक गामेमे खादी भंडार रहैक । ओहि माध्यमसँ कतेको गरीब महिलासभक गुजर होइत छलैक। महिला कत्तिनसभ महीन सँ महीन ताग काटथि । जतेक महीन ताग तकर ततेक बेसी दाम भेटितैक । ताग कतेक महीन भेल तकर निर्णय खादी भंडारक कार्यकर्ता करैत छलाह। चरखासभ सेहो कैक प्रकारक होइत छलैक । सभसँ पैघ चरखाकेँ अंबर चरखा कहल जाइक । ओहि चरखामे एकहि संगे कैकटा सूत निकलैत छल । ओकरा चलबएमे बेसी परिश्रम जरूर होइत छल मुदा सूतक उत्पादन सेहो कैक गुना बेसी होइत छल । कत्तिनसभ अपन-अपन सूत खादी भंडारमे जमा कए देथि आ तकरा बदलामे बेसीकाल खादी कपड़ा देल जाइत छल । टाका कमे काल दैत छल । एहि तरहसँ कठोर परिश्रम कए ओ सभ अपन देह झपैत छलीह आ पेटो भरैत छलीह । सरिसवबाली काकी आ बरमा बाली काकी दुनूगोटे अंबरक चरखा चलबैत छलि ।

सरिसवबाली काकीक स्वरमे अद्भुत मधुरता रहनि । भगवतीक गीत,बिआहक समयक गीत ,बरक परिछन आ बेटीक

जेबा काल समदाउन ओ ततेक मधुर गबैत छलीह जकर वर्णन करब मोसकिल अछि ।

सामाजिक काजमे मदति करबाक जबरदस्त प्रवृत्ति हुनकामे छलनि । ककरो घरमे बिआह,उपनयन होइत तँ ओ दिन-राति एक कए दितथि । उपनयनक मरबामे लिखिआ-पढ़िआ करबामे हुनका महारत छल । सौंसे मरबामे तरह-तरहक चित्रसभ हाथसँ बनबैत छलीह । आजुक समय रहैत तँ हुनकर एहि प्रतिभासभकेँ समाजमे प्रचार होइत ,हुनका किछु आर्थिक लाभो होइतनि । मुदा ओहि समयमे से सभ तँ नहि रहैक । मधुबनी चित्रकलाक प्रचार-प्रसार भेलैक जरूर मुदा बहुत देरीसँ । ताबे हुनका सन-सन कतेको मौलिक कलाकारसभ साधना करैत-करैत एहि संसारकेँ छोड़ि देलथि।

गाममे ककरो बेटीक बिआह होइतैक तँ मधुश्रावणीमे कनिआकेँ खिस्सा कहबाक हेतु ओ जाइत छलीह । हुनका सभकिछु कंठाग्र रहनि । लग-पासक महिलासभ बैसितथि,कनिआ बैसितथि , जँ बर आएल छथि तँ ओहो बैसितथि आ सभगोटे नियमपूर्वक हुनकर खिस्सा सुनितथि ।

मधुश्रावणीक समाप्तिपर जे विध-व्यवहार होइक से सभ ओ करबैत छलीह । बदलामे हुनका की भेटैत छलनि? जँ कनिआक सासुरसँ हुनको लेल नुआ आबि गेल तँ से हुनका भेटि जाइत छलनि नहि तँ फोकला । मुदा हुनका एहिसभसँ निर्लिप्त देखिअनि । जेना ओ एहि पृथ्वीपर चुपचाप सभकिछु सहि जेबाक हेतु आएल होथि । कहिओ ककरो कोनो तरहक प्रतिवाद नहि,आग्रह नहि,इच्छा-अभिलाषा नहि ।

कैकबेर पाबनिसभमे हुनका अपना ओहिठाम किछु-किछु बनबैत देखिअनि । जेना तिलासंक्रांतिमे चुरलाइ बनबएमे ओ हमर माएकेँ मदति करितथि । एहि काजमे तँ बरमाबाली काकी सेहो लागल देखिअनि । सभगोटे गप्प-सप्प करितथि आ चुरलाइओ बनबैत रहतथि । एहि तरहे छिट्टाक-छिट्टा चुरलाइ बनैत छल आ हमसभ तकरा कतेको दिन धरि खाइत रहैत छलहुँ ।

सरिसवबाली काकीकेँ अपन कोनो संतान नहि रहनि । भाइजीकेँ सेहो अपन कोनो संतान नहि रहनि । हुनकर पत्नी कहि नहि कहिआ शुरुएमे मरि गेलखिन । कहाँदनि हुनकासभकेँ एकटा पुत्र भेल रहनि जे दस वर्षक भए कए मरि गेलथि । बरमा बाली काकी सेहो शुरुएमे विधबा भए गेलथि । मुदा संयोगसँ हुनका एकटा पुत्र भेल रहथिन-कामदेव भाइ । तीनू फरिकेनमे ओएहटा संतान रहथि । ओ अरवन अस्सी वर्षक छथि । हुनका भरल-पुरल परिवार छनि । सरिसवबाली सभदिन हुनके अपन संतान बूझि जीबि गेलीह । कहिओ ककरोसँ किछु अपेक्षा नहि। भगवान छोड़ि केओ मदति केनहार नहि । कहिओ काल हुनका माएक लग नोर पोछैत देखिअनि । साइत मोनमे गड़ल कष्ट असह्य भए जाइत होनि। कतहुँ तँ ओकरा अभिव्यक्ति चाहैत छलैक ।

नौकरीक क्रममे हम बाहर चलि गेलहुँ । एकदिन सुनलिऐक जे सरिसवबाली काकी नहि रहलीह । सदा-सर्वदाक लेल एकटा दुखी आत्मा एहि संसारकेँ छोड़ि गेलीह । बिना किछु कहने,बिना किछु मंगने ।

2/3/2020

३

कमाल चौक,अड़ेर

कोनो पैघसँ छोट घरक नीव केओ नहि देखैत अछि,देखिओ नहि सकैत अछि । नीव होइते अछि तपस्या करबाक लेल । अपन समस्त शक्तिसँ सभक सभटा भार बिना कोनो प्रतिवादकैं सहि लेबाक हेतु । ओकरा इहो नहि बूझल रहैत छैक जे जकर ओ भार सहि रहल अछि से खोपरी अछि की महल? ओ तँ बस अपन कर्तव्य कए निश्चिंत भए जाइत अछि । कोनो पुरस्कार,कोनो मान-सम्मानक अभिलाषा नहि । सएह हाल छलनि अड़ेर पुबारिटोलक कमालजीकैं जे नित्य भोरसँ साँझ धरि अड़ेर चौकपर एकटा मचानपर टिनहा पेटी लेने बैसल रहैत छलाह । ओहि टिनहा पेटीसँ निकलैत छल पानक पात आ ओहिमे देल जाए जोकर रंग-विरंगक सचार जेना चून,कत्थ,जरदा,किमाम । सुपारी आ करवनो काल इलाइचीक सेहो ओरिआन रहैत छल । कमाल देखबामे गोर-नार,बेस नमगर आ बगए बानि पातर छितर छलनि। हमरा अखनो कथसँ रंगल हुनकर हाथ ध्यानमे आबि रहल अछि ।

डीह टोल,पुबारिटोल ,बेलौंजा,सिनुआरा,विष्णुपुरक युवकसभ अड़ेर चौकपर अबिते रहैत छलाह । लग-पासक गामक लोकसभ सेहो कोनो-ने-कोनो काजे ओतए देखल जैतथि । ओ सभ गाहे-वगाहे कमालजीक पानक दोकानपर अवश्य अबितथि । पान खैतथि आ ठोर लाल केने आगा बढ़ि जैतथि । एहिक्रममे कमालजी युवकसभक संगे हँसी ठठ्ठा सेहो करैत रहैत छलाह । ओ निरंतर प्रसन्न रहैत छलाह । एहि तरहे सालक-साल ओ अपन काजमे लागल रहलाह । कोनो भारी बात नहि जे बहुतदिन धरि अड़ेर चौककैं कमाल चौकक नामसँ लोक सुमार करैत छल ।

कहबी छैक -जे ननुआ से गर्भहि ननुआ । ओएह हाल कमाल चौक ,अड़ेरोक छल । किछुसालक बाद कमालक मृत्य भए गेलनि । ताबे ओहि लग-पासमे कठघरामे दूटा दोकान खुजि गेल छल । एकटा कठघरा सड़कक बामा दिस तँ दोसर दहिना दिस रहैक । दुनू दोकानमे एकहि तरहक समानसभ रहैत छल । लटगेनाक समानक अतिरिक्त पान सेहो ओतए भेटैत छल। बामाकात बला कठघरापर रेडिओ बजैत रहैत छल। रेडिओ सिलोनसँ पुरनका गीत भोरमे साढ़े सात बजेसँ नित्य बजैत छल । आधघंटाक एहि कार्यक्रमक अंतमे सहगलक कोनो गीत बजैत छल।

सड़कक बामा कात स्वर्गीय रामधनी साहुक मधुरक दोकान छल । ओतए लग-पासक गामसँ लोकसभ आबि चाह पीबैत गप्प-सप्प करैत रहैत छलाह । एक हिसाबे ओ ग्रामीण क्लब छल । हुनकर दुनूपुत्र ओहि दोकानकेँ चलबैत छलाह । थोड़बे दूर पश्चिम दिस हटि कए एकटा दोकान छल जतए चाह-पान-जलखैक जोगार रहैत छल । बुनिआ, सेओ ,घीमे तरल चूरा आ खोआक पेराक हेतु ओ दोकान प्रसिद्ध छल । भोर-साँझ ओतए लोकसभ अबैत छलाह आ आपसमे तरह-तरहक गप्प-सप्प करैत छलाह।

ओहि समयमे यातायातक प्रमुख साधन दूटा बस छल जे भोरमे मधुबनी जाइत आ साँझमे वापस भए जाइत । फटकीएसँ जहाँ उजरीबस देखाइत की यात्रीसभ सतर्क भए जइतथि। बस कनीक आगू बढ़ैत तँ ओकर छतपर जेना-तेना बैसल हिलैत-डोलैत यात्रीसभ सेहो देखैतथि । ओ कनीक आओर आगू बढ़ैत तँ दृश्य आओर फरिछाइत । बसक फाटक आ पछुअतिसँ लटकल यात्रीसभ सेहो देखाइत । से सभ मिलिकए बसक से भयावह दृश्य

लगैत जे बसक घंटोसँ प्रतीक्षा कए रहल यात्रीगण परेसान भए जइतथि । एकाध गोटे जिनकर जेबीमे टाका छलनि से तँ रिक्सा सँ आगू बढ़ि जइतथि। शेष यात्री उजरी बसक प्रतीक्षा करितथि । बस आबिओ जाइत । ठाढ़ो होइत मुदा ओहिमे चढ़ब केना? एहि समस्याक अंत कैकबेर सहयात्रीक संगे झंझटसँ होइत । कैकबेर बसक परिचालक संगे झगड़ा होइत । केओ कहुना कए बसमे घुसिआ सकितथि आ कैकगोटे बाटे तकैत रहि जइतथि आ बस खुजि जाइत । कैकबेर तँ बस ओतए ठाढ़े नहि होइत । किछु आगा बढ़ि कए यात्रीकेँ उतारबाक हेतु ठाढ़ होइत आ जाबे आगू गेनिहार यात्रीसभ दौरि ओतए पहुँचितथि ताबे बस खुजि जाइत । ई दृश्य नित्य भोरे कमाल चौक अड़ेरपर देखल जा सकैत छल ।

बसमे चढ़बाक हेतु एतेक मारामारीक मूल कारण छलैक बसक कमी । ओहि समयमे मात्र दूटा बस अड़ेरबाटे मधुबनी धरि जाइत छल । एकटा उजरीबस छल-जे साहरघाटसँ खुजि मधुबनी जाइत छल। दोसर बस कनीक पैघ छल । ओ बस बेनीपट्टीसँ अबैत छल । एहि दुनू बसक अतिरिक्त यातायातक साधन मानवचालित रिक्सा छल। जँ बस नहि भेटल तँ किछुगोटे तँ पैरे आगू बढ़ि जाइत छलाह। जिनका जेबीमे टाका रहनि से रिक्सा कए रहिका चलि जइतथि । एकटा रिक्सापर दूसँ तीनटा यात्री बैसि जाथि । एहिसँ किराया कम भए जाइत छल । एहि झंझटसँ बँचबाक हेतु लोकसभ बस पकड़बाक प्रयास करैत छलाह । ताहि हेतु नगवास,परजुआरि,एकतारा,जमुआरी,बेलौजा,कतेकोगामक लोकसभ भोरेसँ मुस्तैद रहैत छलाह । कहक माने जे ओहू समयमे अड़ेर चौक पर भोरेसँ आबा-जाही बनल रहैत छल ।

एकबेर हमहूँ एहिना चौकपर बसक प्रतीक्षा करैत रही। हमरा दरभंगा जेबाक रहए । बस आएल तँ ठसाठस भरल छल। हम बसक पछिलका बोनेटपर लटकि गेलहुँ । बस खुजलैक तँ ततेक जोरसँ झटका लागल जे हम बससँ नीचाँ फेका गेलहुँ। हाथ-पैर सौंसे छिला गेल । कैकठामसँ खून बहए लागल । चौकपर गप्प-सप्प करैत कैकगोटे हमरा खसल देखि दौड़लाह । जेना-तेना हम ठाढ़ भेलहुँ आ लङराइत चौकपर वापस अएलहुँ । हमरा ओहि समय जे चोटक निसान बनल से अद्यावधि अछिए ।

अड़ेर चौकक महत्व एहू लेल विशेष छल जे एहिठामसँ थोड़बे दूर उतरबारिकात रबि आ बुध दिन कए हाट लगैत छल। ओतए गाम-गामसँ आबि कए लोकसभ अपन जरूरतिक चीज-बस्तुसभ किनैत छलाह । कहिओ काल कए हाटपर बीड़ीक प्रचारक हेतु नटुआ अपन मंडलीक संग नचैत छल आ रहि-रहि कए बीड़ी फेकैत रहैत छल । चारूकात नाच देखैत लोकसभ बीड़ी लुटबाक हेतु झपट्टा मारैत छल । एहि तरहे लोककेँ बीड़ी मंगनीमे बाँटि कए बीड़ी पीबाक हेतु अभ्यस्त कएल जाइत छल । चौकपर दाढ़ी बढ़ओने एकटा बृद्ध गाजाक सोंटा लगबितो छलाह आ लोकोसभकेँ देथि । ओहिठाम कैकगोटे गाहे-वगाहे एहि काजमे संलिप्त रहैत छलाह । ओ बुढ़ा अपना आगूमे भगवानसभक फोटो सेहो रखने रहैत छलाह जाहिमे एकटा फोटोमे लिखल रहैत छल- “सभ तीरथ बार-बार,गंगा सागर एकबार ।”

चौकपर एकटा बड़ीटा पाकड़िक गाछ छल जकर छाहरिमे यात्रीसभ विश्राम करैत छल । कहिओ काल मुंसीजी एकटा पथिआमे नेना-भुटकामे लोकप्रिय बंबई मिठाइ सहित कैकटा चुसनासभ रखैत छलाह । मुंसीजी ओएह बस्तुसभ बेचबाक हेतु

हमरसभ मिडिल इसकूलपर सेहो कहिओ काल जाइत छलाह । हमसभ बहुत प्रयास कए पाइ अनैत छलहुँ। एक पाइ,दू पाइ सँ लए कए एक आना ,दू आना इसकूल जाइत काल जोगार कएल जाइत छल । एतबेमे काज चलि जाइत छल। जौं पाइक जोगार नहि भए सकल तँ उधारिओ चलि जाइत छल ।

चौकपर सटले पूबदिस कमला नहरिपर बनल पुल छल । कैकटा युवकसभ साँझमे ओहिठाम गप्प-सप्प करैत देखल जा सकैत छलाह । जखन धारमे पानि भरल रहैक तँ धिआ-पुतासभ ओहि पुलपर सँ नीचाँ कुदि जाइत छल । एकाध बेर हमहूँ ई काज केने रही । एकटा कुदल,दोसर कुदल तकरा देखाउँसे तेसर कुदल। एहि तरहें ई खेल चलैत छल । असलमे गाम-घरमे नेनासभकेँ खेलेबाक हेतु एहने जोगारसभ करए पड़ैत छलैक । ओहि समयमे रेडिओ,दूरदर्शन तँ रहैक नहि । तखन तँ इएह सभ होइक । कबड्डी,चिक्का,तास सभसँ जौँ मोन भरि गेल तँ नेनासभ कहिओ काल गेनखेली देखबाक हेतु सेहो चलि जाइत छल । ओना हमर गामक गेनखेली बहुत प्रसिद्ध रहैक । ओकरे बदौलत कैकटा खेलाड़ीसभकेँ रैयाम चीनी मीलमे नौकरी लागि गेल रहनि ।

कालान्तरमे अड़ेर चौकपर गतिविधि बढ़ैत गेल । हम नौकरीक दौरान जखन करवनो गाम जाइ तँ सभबेर ओतए किछु-ने-किछु नव देखाइत । जेना एकबेर गाम गेलहुँ तँ चौकसँ सटले डीहटोल जेबाक हेतु ग्रामद्वार बनल देखाएल जाहिमे श्री राज किशोर मिश्र(सेवानिवृत्त मुख्य महाप्रबन्धक,बीएसएनएल) आ ग्रामीण लोकनिक योगदानक चर्च अछि ।

हमसभ जखन सात-आठ वर्षक रही तँ अड़ेर चौकसँ सटले दछिनबारि दिस मीना बजार लागल छल । हमरा कनी-कनी

अखनो ओ मोन पड़ैत अछि । बड़ीटा हाताक द्वारिपर बड़का-बड़का रंगल-ढंगल घैलसभसँ स्वागत द्वार सजाओल गेल छल । भीतरमे बहुत रास बस्तुसभक प्रदर्शनी लागल छल। ओही साल हमर दोसर बहिनक बिआह भेल छल । हमर बहिनोइ स्वर्गीय सुखदेव झा (ग्राम-करहरा,मधेपुर,मधुबनी) ओहि प्रदर्शनीक आयोजकमे सँ छलाह । ओ राज्य सरकारक अधीन काज करैत छलाह ।

कालक्रमसँ अड़ेर चौकपर टेलीफोन एक्सचेंज,बैंक,एटीएम खुजल । अड़ेर थाना सेहो बनि गेल । ओकर कार्यालय सोसाइटी आफिसमे स्थापित भेल । चौकपर पूबसँ पश्चिम दूसएसँ बेसी दोकानसभ खुजि गेल । दबाइक एगारहटा दोकान खुजि गेल । आब जखन कहिओ गाम जाइत छी तँ चौकपर हेराएले रहैत छी । लोकसभक रंग-ढंग सेहो सहरुआ भए गेल । केओ ओतबे बाजत जतबा पुछबैक । जँ किछु भइओ गेल,कोनो तहरक प्रतिवादक बिना लोकसभ सहटि जाएत । मुदा भरिदिन लोकसभ चौकपर भरल देखाएत। आब तँ ई हाल अछि जे अड़ेर चौकपर आन-आन गामसँ आबिकए लोकसभ दोकान खोलि लेने छथि ।

अड़ेर होइत बेनीपट्टी ,पुपरी जाएबला रोड बेस चाकर भए गेल अछि । बसक संख्यासभमे जबरदस्त बृद्धि भेल अछि । रहि-रहि कए मधुबनी,दरभंगा,पटनाक बस चलैत रहैत अछि । टेकर आ छोटकाबस(मिनी बस) तँ चलिते रहैत अछि। दू सँ तीन मिनटक भीतर कोनो-ने-कोनो सबारी भेटिए जाएत। एतेक चलता रोड भए गेल अछि जे जँ कनिको ध्यान एमहर-ओमहर गेल तँ दुर्घटना भेनहि अछि । कैकगोटे एहनमे जान गमा चुकल छथि।

बात एतबेपर नहि ठहरल अछि । आब तँ सुनैत छिऐक जे अड़ेरक लग-पास होइत ट्रेन लाइनक सेहो सर्वे भए गेल अछि । कुलमिला कए अड़ेर चौकपर एकटा छोट सहरक धमक देखबामे आबि जाइत अछि । सुनबामे अबैत अछि जे अड़ेर चौकक लग-पासमे चालीस लाख रुपया कठ्ठा जमीन बिकाएल अछि (ई तँ सहरोकेँ कान काटि रहल अछि) ।

आजुक अड़ेर चौक आ पचास साल पूर्वक अड़ेर चौकमे आकाश-पातालक फरक आबि गेल अछि , हेबेक चाही । संभवतः पहिने केओ नहि सोचने होएत जे गामक एकटा चौक एतेक विकास कए लेत । हमरा तँ लगैत अछि जे किछु दिनमे ई मधुबनी सहरकेँ टक्कर दए सकत । मुदा किछु बात ककरो कचोटि सकैत अछि । जहिना ओहिठाम व्यापार बढ़ल अछि तहिना मानवीय मूल्यक ह्रास सेहो होइत गेल । ओहिठाम लोकसभक भीड़ सरिपहु बढ़ि गेल अछि,दोकानक संख्यामे बहुत बृद्धि भेल अछि मुदा लोकक आपसी अपनैती जेना विलुप्त भए गेल । छोट-छोट बात लए कए कैकबेर ओतए झंझट होइत देखल जाइत अछि । आशा करक चाही जे चौकक समृद्धिक संगहि लोकक आपसी बंधुत्व आ सिनेह सेहो बढ़ि सकत । से जँ भए सकल तँ सोनामे सुगंध । 1/4/2020

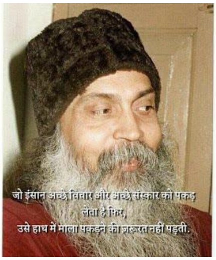

४

स्वामी आनंद वैराग्य

गोर-नार,नमगर,गुलाबक फूलसन सदिखन प्रफुल्लित हम अपन ओहि मित्रसँ जखन कखनो भेंट करए जाइ तँ माहौले बदलि जाइत छल । सभटा काज ओ छोड़ि दितथि । लग-पासमे जे केओ रहितथि तिनका छुट्टी कए दितथि आ एकटा तेहन अपूर्व मुस्कीक संगे स्वागत करितथि जकर वर्णन करब बहुत मोसकिल । जखन कखनो हम मधुबनी जइतहुँ तँ हुनकासँ अवश्य भेंट करितहुँ । कैकबेर तँ ओ मधुबनीक रस्तेपर देखा जइतथि । मधुबनी छैहे कतेक टा? पन्द्रह मिनटमे एहिपारसँ ओहि पार। ओना आब आवासीय क्षेत्र यत्र-तत्र पसरि गेल अछि आ तकर हिसाब केलासँ मधुबनी बहुत नमरि गेल अछि । मुदा ओहि समयमे तँ खादी भंडार सँ किशोरीलाल चौक,ओतएसँ आगू बढ़ब तँ शंकर टाकीज आ कनीक आओर आगू बढ़ जाएब तँ रेलवे टीसन । ओमहरेसँ आगू बढ़ैत जाएब तँ थाना मोड़ । बस खेल खतम ।

शंकर टाकीजक चर्च भेल तँ मोन पड़ि गेल गाइड सीनेमा। शंकर टाकीजमे गाइड सीनेमा हमर जीवनक पहिल सीनेमा छल जे हम मैट्रिकक परीक्षा समाप्त भए जेबाक उत्साहमे देखने रही । मैट्रिकक परीक्षाक हेतु एकतारा उच्च विद्यालयक विद्यार्थीसभक परीक्षा केन्द्र वाटसन इसकूल मधुबनीमे छल । विद्यार्थीसभ अलग-अलग गुटमे यत्र-तत्र डेरा लेने रहथि । मुदा परीक्षा केन्द्रपर सभक भेंट भए जाइत छल । मैट्रिकक परीक्षा उत्तीर्ण केलाक बादो ओ हमरसभक संगे आर.के.कालेज मधुबनीमे नाम लिखओने रहथि । अस्तु,कुल मिला कए पाँचसाल हमसभ इसकूलसँ कालेज धरि संगे पढ़ने रही । तकरबाद ओ लंगट सिंह कालेज मुजफ्फरपुर चलि गेलाह आ हम सी.एम.कालेज दरभंगामे नाम लिखओलहुँ । मुदा हमरा लोकनिक संपर्क बरोबरि बनल रहल ।

हुनकर साहित्यिक आ कलाक पक्ष नेनेसँ बहुत मजगूत छलनि । जौं ओ ओही दिसामे गेल रहितथि तँ निश्चय बहुत किछु केने रहितथि । मुदा ई अफसोचक बात नहि रहि गेल कारण ओ किछु अद्भुत तँ कइए गेलाह ।

हुनकर घर मधुबनीमे नीलम टाकीजसँ आगू उतरबारि कात बनल बाल्मीकि कालोनीमे छलनि । ओ ओहि कालोनीक संस्थापकमे सँ छलाह । तकर बाद तँ हमर कैकटा मित्र ,परिचित आ संबंधी ओहि कालोनीमे घर बनओलथि। हमर ससुर(स्वर्गीय गणेश झा-पण्डौल डीह) सेहो ओतहि घर बनओलथि । तेँ ओहिठाम हमर अबरजात बहुत दिनधरि बनल रहल आ ताहि क्रममे अपन पुरानसंगीसभसँ भेंट-घाँट सेहो होइत रहल ।

यद्यपि हम नौकरी करए दिल्ली आबि गेलहुँ आ ओ मधुबनीमे रहि गेलाह मुदा हमरा लोकनिक भेंट-घाँट निरंतर होइत

रहल । नेनाक दोस्ती बहुत गहींर होइत अछि जकर प्रभाव मोनपर अमिट भए जाइत अछि । ओ इसकूलिआ संगी आ हुनका लोकनिक संगे बिताओल गेल आनंदमय समय नहि बिसरल जा सकैत अछि ।

मधुबनी डेरापर हम एकबेर हुनकासँ भेंट करए गेल रही । हमर ससुरक घर सेहो ओही कालोनीमे रहनि । ओतहिसँ प्रातःकाल दस बजेक करीब हम हुनका ओतए पहुँचल रही । ओहि समय ओ ओतए नेनासभक हेतु आवासीय विद्यालय चला रहल छलाह । ओकर अलाबा मधुबनीमे दू-तीनटा आओर इसकूलसभ ओ चलबैत छलाह। बादमे ओ अपन पैतृक ग्राममे सेहो इसकूल स्थापित केलाह । डेरापर पहुँचलापर ओ हमर बहुत स्वागत केलाह। नाना-प्रकारक मेवा,फल,मधुर राखल छल,खाइत रहू जे खाएब,जतेक खाएब । मुदा ओ अपने किछु नहि खाथि । हम पुछबो केलिअनि तँ कहए लगलाह जे ओ यात्राक क्रममे ततेक मिठ्ठ खा लेने रहथि जे हुनकर सुगर तीनसए सँ बेसी भए गेल छनि । तेँ डाक्टरक परामर्शपर सभकिछु बंद भए गेल छनि।

हुनकर ज्येष्ठ पुत्र किछुसाल पूर्व घर छोड़ि भागि गेलखिन आ कतेको प्रयासक बादो हुनकर किछु अता-पता नहि लागि सकल। हुनकर श्रीमतीजी एहि घटनासँ बहुत आहत भेलीह । ओ निरंतर एहिबातसँ दुखी रहैत छलीह । मुदा ओ स्वयं एहिबातकेँ पचा गेल रहथि आ व्यवहारमे करवनो प्रकट नहि होमए देथि । हुनका करवनहु चिंतित नहि देखिअनि । असलमे नेनेसँ हुनका जीवनमे अंतर्विरोधक साक्षात्कार होइत रहलनि । हुनकर माएक देहावसान बहुत कमे बएसमे भए गेलनि। पिता दोसर बिआह कए लेलखिन । तकरबाद की भैलक की नहि, ओ बहुत दिन धरि अपन

पितासँ फराक नाना(स्वर्गीय यदुनंदन मौआर)क संगे एकतारामे रहलथि । नाना हुनकर पालन-पोषण केलखिन । हुनकर नाना बहुत संपन्न लोक छलाह । हमरा कैकबेर हुनका ओहिठाम जेबाक अवसर भेटल छल । हुनकर दलानपर गगनचुंबी पुआरक टालसभ देखितहुँ तँ देखितहि रहि जइतहुँ। सुनबामे आएल जे ओ फेकनजीकेँ किछु जमीन-जायदाद सेहो देने रहथिन । नानाक मृत्युक बाद हुनकर पिता (स्वर्गीय राम नंदन राय) आग्रहपूर्वक हुनका अपना संगे राखि लेलखिन आ एकबेर फेर ओ अपन पैतृक गाम मधेपुरा (पण्डौल टीसन लग) पहुँचि गेलाह। बादमे हुनकर पितासँ हमरो भेंट भेल आ दुनू पिता-पुत्रक अनुराग देखि हम बहुत प्रभावित भेल रही ।

हमरा हुनकासँ भेंट एकतारा उच्च विद्यालयमे भेल जतए ओहो हमरे किलासमे पढ़ैत छलाह । हुनका इसकूलमे हमसभ हुनका फेकनजी कहिअनि । हुनकर असली नाम छलनि चन्द्र भूषण राय । हुनकर फेकन नाम कोना पड़लनि सेहो रहस्ये थिक। आठमासँ एगारहमा धरि हमसभ एकहि किलासमे पढ़लहुँ । हमरासभक गणितक शिक्षक डुमरा गामक जटाधर बाबू छलाह। ओ हुनके ओहिठाम रहैत छलाह । ई सुनि कए आश्चर्य लागि सकैत अछि जे हुनकर व्यक्तिगत ट्युटर होइतहुँ ओ नंबर देबा काल हुनका कोनो पक्षपात नहि करथि । कैकबेर तँ हुनकर विषयमे ओ बहुत खराब करैत छलाह । तथापि केओ शिक्षकपर आङुर नहि उठओलक । आइ-काल्हिक समय रहैत तँ संभवतः सभसँ एहिने ओ शिक्षक हटा देल जइतथि । एकतारा उच्च विद्यालयक सचिव हुनके मामा छलाह । तथापि शिक्षक अपन निष्पक्षता बनओने रहथि से प्रशंसनीय छल ।

ई बात सन् १९६९ ई०क थिक । हम सी.एम.कालेज दरभंगामे पढ़ैत रही । ओहि समयमे कैकटा बाबासभ ऊपर भेल रहथि । ताहि समयमे ओशोक सेहो हवा बहि गेल छल । किछु बात हुनकामे जरूर छल जे तत्कालीन युवावर्ग बहुत जोर-सोरसँ हुनकासँ प्रभावित भेल । बहुत रास लोकसभ हुनकर चेला सेहो बनलथि । गेरुआ वस्त्र पहिरने,गर्दनिमे एकटा लाकेट लटकओने आ घर-गृहस्थीक सभकाज करितहुँ सन्यास लेने । ओहि समयमे फेकनजी सेहो ५ अगस्त १९७३ क दिन ओशोक शिष्य भए गेलाह। अपने तँ भेबे केलाह,संगहि अपन समस्त परिवार,इष्ट-मित्रकेँ सेहो हुनकर शिष्य बनबाक हेतु प्रेरित केलाह ।

मधुबनीक अस्तव्यस्त सड़कसभ पर पैरे वा रिक्सासँ गेरुआ वस्त्र पहिरने हुनकर एकटा तेहन पहिचान भए गेल छल जे ककरो कहिऔक सोझे हुनका लग पहुँचा देत । ओहि समयमे जे ओ ओशो भक्त भेलाह से बनले रहि गेलाह । ओहि काजमे रमि गेलाह । सौंसे देशमे सालभरि हुनकर कार्यक्रम होइत रहैत छल । सालभरि पहिनहि हुनकर यात्रासभक कार्यक्रम बनैत छल । तकरा तमाम ओशो भक्त लोकनिक संस्थासभमे प्रचारित कएल जाइत छल । ततबे नहि,एक समयमे तँ पूना स्थित ओशो आश्रममे ओ प्रतिस्पर्धाक कारण भए गेल छलाह ।

सन् १९७७ई.मे नौकरीक क्रममे हम दिल्ली चलि अएलहुँ। गाम-घरसँ बहुत फटकी चलि गेल रही । तथापि हुनकासँ संपर्क बनल रहल । ओ गाहे-बगाहे दिल्ली अबैत रहैत छलाह । कैकबेर ओ हमर डेरापर चलि अबैत छलाह आ देशभरिमे अपन आध्यात्मिक भ्रमणक चर्चा करैत छलाह। ओ निरंतर साहित्यिक काजमे सेहो लागल रहैत छलाह । अपन लिखल कैकटा

कविता,नाटक आ लेखसभ ओ हमरा देखबैत रहैत छलाह ।हुनका संगे कैकटा हुनकर सहयोगी आ मित्र लोकनि रहैत छलाह । कैकबेर तँ ओ हुनकालोकनिकेँ पाछूए छोड़ि हमरा लग आबि जाइत छलाह । हुनका एहि तरहें असगर अएबाक तात्पर्य निश्चिंत भए हमरासँ भरिपोख गप्प-सप्प करब रहैत छलनि ,ओहिना जेना नेनामे रहल होएतनि। किछु कालक हेतु हमसभ वाल्यावस्थामे पहुँचि जाइत छलहुँ ।

एकबेर दिल्लीक श्रीराम सेंटरमे हुनकर लिखल नाटक- ''बुद्धम् शरणं गच्छामि''क मंचन भए रहल छल । ओकर कलाकारसभ मूलतः हुनकर शिष्य वा सहकर्मी लोकनि छलाह । हमरा ओ रामकृष्णपुरम स्थित सरकारी डेरापर स्वयं आबि कए ओहि नाटककेँ देखाबक हेतु आग्रह कए गेल रहथि। हम ओ नाटक देखए गेबो केलहुँ ।सभागार खचाखच भरल छल ।ओ सभागारमे प्रथम पाँतिमे बैसल छलाह ।मुदा हमर चिंता हुनका रहनि ।हमरा देखितहि ओ तुरंत उठि कए अत्यंत भावुकताक संग भेंट केलाह , उठि कए ठाढ़ भए गेलाह आ हमरा नीकसँ बैसेबाक जोगारमे लागि गेलाह । से देखि लग-पासमे बैसल लोकसभ छगुन्तामे रहथि जे आखिर ई के छथि जिनकासँ स्वामीजी एतेक आदर आ भावुकतासँ भेंट कए रहल छथि ।फेर हुनकर अनुज सत्यार्थजी हमरा अपना संगे बैसबाक प्रबन्ध केलाह । हुनका संगे बैजू महराज दीप प्रज्ज्वलित कए नाटकक उद्घाटन केलाह । बुद्धक जीवनीपर आधारित ओ नाटक निश्चय बहुत मार्मिक छल । नाटक समाप्त भेलाक बाद ओ हमर हाल-चाल लैत रहलाह जाहिसँ हमरा घर वापस जेबामे कोनो परेसानी नहि होअए।

हम सन् १९८८ ई०मे मधुबनीमे मकान बनबैत रही । मकानक काज शुरु करबासँ पूर्व फेकनजी हमरा संगे ओहि स्थानपर गेलाह आ मकानक नक्सासँ हटि कए ओ किछु परामर्श देलथि जकर समावेश करैत मकानक निर्माण कएल गेल । मकानक निर्माणक क्रममे ओ कैकबेर निर्माणस्थलपर जा कए मार्गदर्शन करैत रहलाह । कतेको साल धरि ओ कोनो-ने-कोनो रूपमे मकानक काजसँ जुड़ल रहलाह। हुनकर एहि अमूल्य योगदानकेँ नहि बिसरल जा सकैत अछि ।

अपन मंडलीमे ओ स्वामी आनंद वैराग्यजीक नामसँ जानल जाइत छलाह । ओशोक शिक्षाक प्रचार-प्रसारमे ओ सालों लागल रहलाह । कालक्रममे ओ हरिद्वारमे एकटा पैघ संस्थान बनबएमे लागल रहथि जकर उद्देश्य आध्यात्मिक एवम् सांस्कृतिक क्षेत्रमे समाजक विकास करब छल । मुदा ओ काज पूर्णता दिस बढ़ैत ताहिसँ पहिनहि ओ अस्वस्थ भए गेलाह । एकाएक पता लागल जे हुनका आंतमे कैंसर भए गेल छनि । इलाजक क्रममे ओ लेडी हार्डींग मेडिकल कालेज सेहो आएल रहथि । हुनका संगे हुनकर अनुज स्वामी सिद्धार्थजी रहथिन।ओहि समयमे हम ओतए उप-निदेशक(प्रशासन)क काज देखैत रही। डाक्टरसभ हुनका देखबो केलकनि मुदा केओ उत्साहवर्धक समाधान नहि बता सकल रहथि । बादमे ओ काशी चलि गेलाह आ ओहीठाम करीब छओ मास धरि देसी इलाजसभ केलथि । आकस्मिक एहन अस्वस्थ भए गेलासँ ओ बहुत दुखी रहथि। कहथि-

“हमरा तँ अखन पचपने वर्ष भेल अछि । अखन बहुत काज करबाक छल ।”

मुदा कालक आगा ककर चलैत अछि । सन् २००५ई०मे एकदिन हुनकर अनुज शिद्धार्थजीक फोन आएल-“स्वामीजी नहि रहलाह ।”बहुत दुख भेल। एकटा बहुत प्रिय मित्र आ शुभचिंतक असमयमे हमरासभकेँ छोड़ि कए सदा-सर्वदाक लेल एहि दुनिआसँ चलि गेलाह । यद्यपि आब ओ नहि छथि ,मुदा कतेको बेर जखन हम अपन वाल्याबस्था दिस घुमैत छी तँ अखनहुँ हुनकर तेजस्वी छवि सद्यः प्रस्तुत भए जाइत अछि,जेना ओ पुछि रहल होथि –

“रबीन्द्रजी! कोना छी?”

२७.४.२०२०

५

आल्हाबला

ओहि घटनाकेँ कमसँ कम ५५ वर्ष भेल होएत । हम मोसकिलसँ दस वर्षक रहल होएब । जतबे जोरसँ हम आल्हा सुनबाक प्रयास करी ततबे सतर्कतासँ हमर बाबूजी ओकर विरोध करितथि आ जँ पता लागि जानि जे हम ओतए गेल छी तँ तुरंत ओतए पहुँचि हमरा ओहिठामसँ लेने अबितथि । ओहि समयमे हुनकर ई सभ करबाक एकमात्र उद्येश्य रहनि जे हम पढ़ी-लिखी, आओर किछु नहि करी । मोनकेँ एमहर-ओमहर नहि लगाबी । मुदा आल्हाक प्रति हमर आकर्षण ततेक जबरदस्त छल जे हम कहुना-ने-कहुना ओतए जेबाक ब्योंत कइए ली । कैकबेर सफल रही,कैकबेर पकड़ा जाइ । मुदा तेँ आल्हा सुनबासँ बाज नहि आबी।

असलमे ओहि समयमे गाम-घरमे मनोरंजनक साधन बहुत सीमित रहैक । आइ-काल्हि जकाँ दूरदर्शन,मोबाइल नहि रहैक।

सीनेमा,रेडिओ नहि रहैक । तखन तँ मनुक्ख मनोरंजन सद्यः निर्माण करैत छल जाहिमे शारिरिक संलिप्तता बहुत बेसी रहैत छलैक।लोक छोटो-छोटो बातसभमे मनोरंजनक जोगार कए लैत छल । कोनो बड़का आयोजन वा बहुत रास खर्चक प्रयोजन नहि होइत छलैक।तँ गाम-घरमे आल्हा गाएब,नटुआक नाच देखब वा रामलीला देखब बहुत लोकप्रिय मनोरंजन होइत छलैक । आमक मासमे लोक दू-तीन मास कलममे मचानपर बिता लैत छल । आमक रखबारीक संगहि पिकनिक करबाक आनंद सेहो होइत छलैक । हाटक दिनक कहिओ काल बीड़ी कंपनीक प्रचारक हेतु नटुआसभ फिल्मी गाना गाबि-गाबि लोककेँ आकर्षित करैत छल आ रहि-रहि कए बीड़ीक वर्षा कएल जाइत छल । एहि तरहें लोककेँ बीड़ी पीबाक अभ्यस्त कए ओकर बिक्री बढ़ाओल जाइत छल । एहने माहौलमे तत्कालीन ग्रामीण समाजमे मनोरंजनक सस्ता आ सर्वसुलभ साधनमे सँ एकटा छल आल्हा सुनब ।

गर्मी मासक गाम-घरक एकटा सहज मनोरंजन छल आल्हा ।आल्हा गेनिहार नटकेँ बेसी तामझाम नहि होइत छलैक , मात्र एकटा ढोल । बेसीकाल असगरे ओ ढोलकेँ पीटि-पीटि परोपट्टाक लोककेँ जमा कए लैत छल । एकाध बेर ओकरा संगे एकटा सहायक सेहो देखिऐक । मुदा कमे काल ।

इसकूलसँ कैकबेर हमसभ कोनो बहाना बना कए पहिने छुट्टी लए लैत छलहुँ । एकतारासँ पैरे झटकारि कए चलैत जखन जमुआरीसँ आगा बढ़ी तँ कैकबेर ढोलपर पड़ैत थाप सुनाइत । पैर अपने-आप आओर फुरतीसँ आगा बढ़ए लागैत छल । घर पहुँचि झोरा राखि चोट्टे पहुँचि जाइत छलहुँ । कतए? जतए आल्हा भए रहल होइत ।ढोलक थापक प्रतिध्वनि सुनि ई अंदाज लागि जाइत

छल जे कतए जेबाक अछि । थोड़बे कालमे हम ओहि दलानपर पहुँचि जाइत छलहुँ। ओहिठामक माहौले फराक रहैत छल । सौंसे दलान लोक भरल रहैत छल । सभक मोनमे प्रसन्नता भरल देखाइत। आल्हाबला ओहिठामक नायक होइत छल । हमरा सन-सन नेनासभक हेतु तँ ओ बहुत आदरणीय व्यक्ति छल । कारण जकरे देखितिऐक ओएह आल्हाबलाक गुनगान करैत भेटैत ।

अल्हा गाबए बला सामान्यतः अधबएसु होइत छल । कुल जमापूँजी एकटा ढोल । सामान्यतः असगरे गबैत छल । हँ जखन ओ तावमे अबैत छल आ जोसमे ढोलपर थापपर-थाप पीटैत छल तँ ओकर छवि देखएबला रहैत छल । जखन जोशीला भाव प्रकट करैत ओ सुर-तान धरैत छल तँ लागए जे ओ ढोलपर आब छरपत तँ ताब । कैकबेर एकटा ठेहुन ढोलपर राखि ओ भावपुर्ण मुद्रामे गबैत-गबैत मूरीकेँ जोर-जोरसँ पटकैत छल । कानपर एकटा हाथ राखि सभक ध्यान आकर्षित करैत छल-“बाबू सुनो हमारी बात,एकदिन की नहीं लड़ाई गाबत बीति जाइ बरहमास.... “। ओकर संगीतमय अभिनयक मनमोहक कथोपथनसँ समस्त श्रोतागण मंत्रमुग्ध रहैत छलाह । पूरा दलान मिस परैत रहैत छल । केओ टससँ मस नहि होइत । बाह रे कलाकार! साँझ होमएसँ पहिने आल्हा समाप्त होइत छल । कैकबेर अड़ेर चौकपर तकरबाद ओ देखाइत । नेनासभ बहुत आदरभावसँ ओकरा देखैत आ ओकरासँ गप्प-सप्प करबाक चेष्टा करैत छल ।

आल्हा सुनबाक हेतु उपस्थित लोकसभ एकदम बकोध्यान लगओने आल्हाबलाक संगे भावात्मक रूपसँ एकाकार भए जाइत छलाह । लगबे नहि करैत जे एतेक लोक ओतए जमा छथि । एहि तरहे दससँ पन्द्रह दिन धरि ई कार्यक्रम चलैत ।

अंतिमदिनक कार्यक्रममे अगिला कार्यक्रमक सूचना देल जाइत जे काल्हिसँ फलना बाबूक ओहिठाम आल्हाक कार्यक्रम होएत । लोकसभ अपना ओहिठाम आल्हा करेबाक हेतु पाँति लगओने रहैत छलाह ।

हमसभ नेनामे सोचिऐक जे आल्हाबला कतेक योग्य आदमी अछि । सभटा आल्हा ओकरा कंठाग्र रहैक । कैकबेर सुनिऐक जे ब्रह्माक लड़ाई जल्दी नहि गाओल जाइत छैक । ओकरा गेलासँ गाम-घरमे झगड़ाक संभावना रहैत छैक,आदि,आदि । कहि नहि ई कतेक सत्य रहैक । जे रहैक,से रहैक मुदा एतबा तँ निश्चित सही रहैक जे आल्हा गायन ओहि समयमे गाम-घरक लोकसभक हेतु मनोरंजनक प्रमुख साधन छल। गर्मीक मौसममे दुपहरिआ काटबाक ई बढ़िआँ जोगार छल । संगहि आल्हाबलाकेँ गुजर सेहो भए जाइत छलैक ।

बादमे कैक साल धरि ओ आल्हाबला हमर गाम नहि आएल। पता लागल जे ओ अपन डेराक लगीचेमे रहनिहार कोनो महिलाक संगे नेपाल दिस भागि गेल । की भेल,नहि भेल मुदा फेर कहिओ ओकर ढोलक थाप हमरा नहि सुनाएल । हमहूँ पढ़बाक हेतु गामसँ बाहर चलि गेलहुँ । मुदा गाममे दोसर,तेसर आल्हाबला अबिते रहल आ आल्हा होइते रहल ।

१८.५.२०२०

६

जगले रहब यौ!

हमसभ जखन नेना रही तँ परीक्षाक समयमे कैक बेर बहुत राति धरि जगले रही । ओसारापर लालटेनक मद्धिम प्रकाशमे औंघाइत-पौंघाइत पढ़ैत रहैत छलहुँ । कहि नहि एतेक नीन्न कतएसँ अबैक । एहि संघर्षक बीचमे एकाएक ध्यान तोड़ैत छल एकटा स्वरवद्ध कड़क अबाज-"जगले रहबै यौ । से कहैत-कहैत गामक चौकीदार आगा बढ़ि जाइत । ओकर अबाज तँ फटकिएसँ अएनाइ शुरु भए जाइत छल। सड़केपर सँ ओकर जागरण मंत्र कानमे पड़नाइ शुरु भए जाइत जकर तीव्रता क्रमशः बढ़िते रहैत । हमरा घर लग अबैत-अबैत ओ अबाज आओर जोर पकड़ि लैत । एहि तरहें चिकरैत-भोकरैत ओ सौंसे गाम घुमि जैतथि । अन्हरिआ रातिमे तँ ई कनी बेसीए होइत छल । गाम-घरमे चोरी नहि होइक, तें एहि तरहक व्यवस्था कएल गेल छल ।

चौकीदारसभ सरकारी महकमासँ जुड़ल तँ रहैत छलाह,थानेदारक हुकुम बजबैत छलाह मुदा हुनका सरकारी सेवकक सुविधा नहि भेटैत छलनि ने ओ नियमित सरकारी कर्मचारी मानल जाइत छलाह । हाथमे खूब नोकगर भाला ,देहमे हरिअरका पट्टी पहिरने जखन चौकीदार कोनो मामिलाक संदर्भमे थाना बजाओल जाइत छलाह तँ निश्चय हुनको होइत रहल हेतनि जे ओ किछु छथि । कैक बेर थानाक पुलिस आबि कए हुनका अपना संग कए लेथि । गामे-गाम पुलिसक संगे घुमथि किंवा कोनो मामिलाक तहकीकात करबामे सहयोग करथि मुदा ताहि एबजमे

हुनका गारि-फज्जतिक अतिरिक्त किछु भेटैत रहल हेतनि तकर कोनो उम्मीद नहि बुझाइत अछि । चौकीदारक सामान्य कर्तव्यक निष्पादन तँ ओ करिते छलाह ,तकर अतिरिक्त ओ थानाक एकटा स्थानीय जासूस सेहो छलाह । हुनकासँ अपेक्षा कएल जाइत छल जे हुनकर लग-पासमे भए रहल घटनासभक जानकारी थानेदारकेँ देथिन । एहिसभ काज करबाक एबजमे हुनका दस वा पन्द्रह टाका महिना थानाक तरफसँ भेटैत छल । एहि तरहैं कैक ठाम तँ कैक पुस्त चौकीदारी करिते बीति जाइत छलनि ।

चौकीदार जखन गाममे पहरा दैत छलाह तँ ककरो घर लग अएलाक बाद हुनकर नाम लए कैक बेर अबाज दितथि जाहिसँ ओ व्यक्ति जँ सुति रहल छथि तँ हुनकर उपस्थितिकेँ संज्ञान लेथि। कैक गोटे तँ खखसि कए तकर प्रतिउत्तर दैतो छलाह । ओहिमे हमर एकटा काकाजीक नाम प्रसंगवश मोन पड़ि जाइत अछि । ओ तँ रातिमे सुतलोमे ढहकैत रहैत छलाह जाहिसँ लग-पासक लोककेँ लगैत छलैक जेना ओ जगले छथि । परीक्षासभक तैयारीक क्रममे हम कैक बेर बहुत रातिधरि जागल रहैत छलहुँ । हमरा हुनकर अबाज सुनिकए लागए जेना ओ जगले छथि मुदा बात से रहैक नहि। ओ तँ सुतले-सुतल ई काज करैत छलाह । जे होइक मुदा चोरसभकेँ ओ अबाज सुनि कए जरूर परेसानी होइत रहल हेतैक।

सालक साल बीति गेल मुदा चौकीदारसभक स्थितिमे कोनो सुधार नहि भेल । हँ, एतबा जरूर भेल जे सहरीकरणक बाद गामसँ भागि कए लोकसभ सहरमे आबि गेल आ जकरा कोनो काज नहि भेटल से सभ चाहे ओ कतबो पढ़ल होथि वा मूर्ख होथि,चौकीदार बनि गेलाह । सहरमे चौकीदारक माने भेल सेक्युरिटीगार्ड । रंग-विरंगक परिधान पहिरने हाथमे डंडा लेने कोनो

पैघ मकानक द्वारिपर बारह-बारह घंटा निरंतर ठाढ़ रहए बला केओ आओर नहि चौकीदारे भए सकैत छथि । सोचल जा सकैत अछि जे जे आदमी बारह घंटा निरंतर ठाढ़ रहतैक ओ तँ अपन जान बँचा लिअए सएह बहुत ,ओ अहाँक रक्षा की करताह? चाहिओ कए नहि कए सकैत छथि ,कारण एक तँ देहमे कतहु दम बाँचल नहि रहि जाइत छनि,दोसर हुनकासभक हाथमे तँ एकटा लाठिओ नहि रहैत छनि। कहबी छैक जे विभुक्षितः किम् न करोति पापम्। तेँ कैक बेर सहरी चौकीदार स्वयं चोरी,डकैती वा एहने कोनो आओर जघन्य अपराध करैत पकड़ल जाइत छथि ? तरह-तरहसँ एहन व्यक्तिकेँ यातना देल जाइत अछि। मुदा साइते केओ सोचैत हेताह जे आखिर एना भेलैक किएक?

गामक चौकीदारसभ तँ कम सँ कम भाला लए कए चलैत छल, अपन घरमे रहैत छल आ जे किछु घरक बनल भोजन करैत छलाह मुदा सहरमे तँ हुनका लोकनिक भगवाने मालिक । ने खेबाक ठेकान ने रहबाक, ताहिपरसँ बारह-बारह घंटा काज आ पगार कतेक? बहुत तँ दस हजार । कोनो छुट्टी नहि । जँ मोन खराब भेल तँ दरमाहा कटत । बेसी दिन छुट्टी रहब तँ नौकरिओ खतम भए जाएत । कहक माने जे हुनकर जिनगी भगवानेक भरोसे चलैत अछि । एहन हालतमे ओ अनकर की रक्षा करताह? ओ तँ अपने रक्षा कए लेथि तँ बड़का बात ।

समाजक एतेक महत्वपूर्ण अंग जकर काजे सभक रक्षा करब थिक उपेक्षित रहए से कतहु सँ उचित नहि लगैत अछि । मुदा सएह भए रहल अछि । जरुरी अछि जे सरकारक नीति निर्माता लोकनि चौकीदारक सेवाक सही मूल्याङ्कन करथि आ ओकरासभक दरमाहा आ अन्य सुविधा कमसँ कम एतेक तँ हेबे करैक जाहिसँ

ओहोसभ अपना एहि देसक सम्मानित नागरिक हेबाक अनुभव करथि । से जँ हेतेक तँ ओकर फएदा सभकेँ हेतैक। इसकूलमे पढ़निहार नेना सुरक्षित रहत,ओकर अपहरण नहि भए सकतैक,गाम-घरमे रहनिहार किसानसभ अन्न-पानि सुरक्षित रहतैक आ सुरक्षित रहताह सहरमे रहनिहार श्रीमान लोकनि जिनकर घरक आगामे एकटा सशक्त व्यक्ति हुनकर सुरक्षा करत ने कि एकटा मजबूर,बिमार आ शक्तहीन व्यक्ति ।

उम्मीद पर दुनिआ कायम छैक। तें हमरा लोकनि आशा करी जे एकदिन चौकीदारो सभक दिन फिरतैक। देशमे बहि रहल विकासक बिहारि हुनको दरबाजा धरि पहुँचत । हुनको धिआ-पुता आधुनिक शिक्षा प्राप्त कए अपन जीवनमे सकारात्मक परिवर्तन आनि सकताह आ पुस्तक-पुस्त भाला लेने हकासल-पियासल गामक चौकीदारी करैत व्यक्ति बीतल बात भए जाएत ।

७

उच्च विद्यालय एकतारा

देहातक इसकूलमे नामी छल उच्चाङ्ल विद्यालय एकतारा। ओहि समयमे स्वर्गीय युगेश्वर झा प्रधानाध्यापक छलाह आ बेलौंजाक स्वर्गीय कृष्ण कुमार झा उपप्रधानाचार्य । इसकूलक सभ शिक्षक कोनो-ने-कोनो मामिलामे उत्कृष्ट छलाह । विद्यार्थीसभक हुजुममे सभ किलासमे चारि-पाँचटा उत्तम कोटिक विद्यार्थी होइत छलाह । किछु मध्यम कोटिक विद्यार्थी आ शेष दिनकट्ट सभ छलाह जे कोनो-ने-कोनो तात्कालिक उद्येश्यक पूर्ति होइतहि इसकूलसँ फराक भए जाइत छलाह आ जँ इसकूल अएबो करथि तँ नामे मात्र । बेसीकाल शिक्षक लोकनिक लप-लप करैत छड़ीसँ हुनका लोकनिक स्वागत होइत छल ।

ओहि समयमे हमर गाम(अड़ेर डीह)मे उच्च विद्यालय नहि रहैक । एहिठामक अधिकांश विद्यार्थी लोहा उच्च विद्यालयसँ मैट्रिक करैत छलाह । किछुगोटे रहिका आ एकतारा उच्च विद्यालयमे सेहो पढ़ैत छलाह । एकाध संपन्न परिवारक विद्यार्थी बेनीपट्टी वा मधुबनीमे पढ़ैत छलाह । हमर बाबूजीक मित्रसभ एकतारामे रहथिन । तेँ हमर नाम एकतारा उच्च विद्यालयमे लिखाओल गेल । गामसँ उत्तर दिस तीन माइलपर एकताराक इसकूल छल । एकतारा उच्च विद्यालयमे १९६३ ई०मे नामांकनक समय हमर बएस एगारह वर्ष मात्र छल । बेलौजा गामक स्वर्गीय कृष्ण कुमार बाबू एकतारा उच्च विद्यालयमे शिक्षक रहथि । तेँ हुनका गामक कैकटा विद्यार्थी एकतारामे पढ़ैत छलाह ।

सिनुआरा,विष्णुपुर,अड़ेरडीहटोल,जमुआरी,कुशमौल,बिचखाना, नवकरही,करही,नगवास,चंपा परजुआरि आदि गामसभसँ विद्यार्थीसभ ओतए पढ़बाक हेतु अबैत छलाह ।

ओहि समयमे इसकूलक पढ़ाइक माने भेल परीक्षामे नीकसँ नीक नंबर अननाइ । ताहि हेतु विद्यार्थीसभ जान लगओने रहैत छलाह । किताबक-किताब घोखि जाइत छलाह । किताबक अतिरिक्तो किछु होइत छैक तकर बोध नहि रहैक। बहुत तँ कहिओ काल स्काउटक परेड होइत छल । ताहूमे ओकर वर्दी बनेबाक हेतु विद्यार्थीसभकेँ बेस संघर्ष करए पड़ैत छलनि । हमहूँ बाबूजीकेँ स्काउटक वर्दी बनेबाक हेतु कतेक खुशामद केने रही । तखन जा कए वर्दी बनल । ओकरा पहिरने गामसँ एकतारा धरि गेल रही । कहि नहि सकैत छी जे हम एहि बातसँ कतेक प्रसन्न भेल रही ।

कहिओ काल इसकूलक ओसारापर बैसकमे गीत-नाद होइत छल । कोनो विशेष अवसरपर परिचर्चा सेहो भए जाइत छल जाहिमे विद्यार्थीसभ बजबाक हेतु भाषणकेँ रटने रहैत छलाह । दिक्कत तखन होइक जखन वक्ताकेँ बजैत-बजैत बीचेमे भाषण बिसरा जाइत छल। ओ विद्यार्थी अबाक भेल ठाढ़ रहि जाइत छलाह, जेना कि एकाएक बिजली चलि गेल होइक । बहुत मोसकिलसँ शिक्षक लोकनि ओहि विद्यार्थीकेँ वापस पठबैत छलाह। किछु विद्यार्थी तँ संगीत कार्यक्रममे अरबधि कए एकहिटा गीत गबैत छलाह । प्रायः हुनका दोसर गीत अबिते नहि छलनि । सालमे एकाधटा एहन कार्यक्रमकेँ जँ छोड़ि देल जाए तँ इसकूलक कार्यक्रममे कोनो परिवर्तन नहि होइत छल । एकघंटीसँ दोसर,दोसरसँ तेसर आ अंतमे छुट्टी । एहि तरहें सालक-साल बीति

जाइत छल । विद्यार्थीक प्रतिभाकेँ जे होइक से होउ मुदा इसकूल अपन निर्लिप्त भावसँ चलैत रहैत छल । एहन माहौलमे प्रतिभाशाली विद्यार्थीसभ तँ बढ़ि जाइत छलाह मुदा सामान्य कोटिक विद्यार्थी कोनो जोकर नहि रहि जाइत छलाह ।

हमसभ जखन नेना रही तँ नीक आ खराब इसकूल नहि बुझिऐक । इसकूल माने इसकूल । ओना किछु इसकूलक बहुत नाम रहैक जेना वाटसन इसकूल मधुबनी,खिरहर उच्च विद्यालय । लोहाक उच्च विद्यालयक सेहो नीक नाम रहैक । ओकर प्रधानाध्यापक रामकृष्ण बाबू बहुत सफल शिक्षक छलाह । हुनका शिक्षकक हेतु राष्ट्रपति पुरस्कार सेहो भेटल रहनि । कहाँदनि ओ बहुत सक्कत छलाह। मुदा उच्च विद्यालय एकतारा सेहो कोनो मामिलामे खराब नहि रहए । नीक-नीक विद्यार्थीसभ ओतहुसँ शिक्षा प्राप्त केलाह आ जीवनमे सफल रहलाह,उच्चस्थान प्राप्त केलाह ।

आब जखन सोचैत छिऐक तँ लगैत अछि जे किछु सुधार तँ बहुत जरूरी रहैक ,जेना कि पुस्तकालय ,प्रयोगशाला नीक होएब बहुत आवश्यक छल। मनोरंजनक नामपर फोकला छल इसकूल। कहिओ काल कबड्डी होइत छल,कहिओ काल इसकूलक ओसारापर बैसारमे गीतनाद होइत छल । बस एतबे । मुदा पढ़ाइ-लिखाइक अतिरिक्त आओर तरहक प्रतिभाक विकासक कोनो व्यवस्था तँ छोड़ू विचारो नहि रहैत छलैक । परिणाम ई होइत छल जे किलास पाछू पाँच-सातटा विद्यार्थी छोड़ि कए शेष विद्यार्थीकेँ तरह-तरहक अशोभनीय उपाधिसँ सुशोभित कए देल जाइत छल,जखन-तरवन ओकरा शारिरिक दंड देल जाइत छल। विद्यार्थीकेँ शिक्षक द्वारा हुथनाइ तँ आम बात रहैत छल ।

किछु एहनो शिक्षक छलाह जे चटिआक सुसुप्त प्रतिभाकेँ चमका दैत छलाह । ओहने शिक्षकमे छलाह डुमराक जटाशंकर बाबू । ओ एकतारामे स्वर्गीय स्वर्गीय यदुनंदन मौआरक ओहिठाम रहैत छलाह , हुनकर नातिकेँ पढ़बैत छलाह। मुदा इसकूलमे ओ एकदम निष्पक्ष रहैत छलाह , भरिदिन जी-जानसँ उच्च गणित विषय विद्यार्थीसभकेँ पढ़बैत छलाह । हमर गणित नीक बनबएमे हुनकर गंभीर योगदान छल । ततेक सहजतासँ विद्यार्थीसभक समस्याकेँ सोझरा दैत छलाह जे हुनकर किलास करब एकटा आनंदक विषय रहैत छल । मुदा किछुगोटे जबरदस्ती गणित लेने छलाह । हुनकासभकेँ गणितमे रूचि नहि रहनि । तेँ ओसभ बेर-बेर असफल होइत छलाह आ मैट्रिकक परीक्षा उत्तीर्ण करब हुनकासभक हेतु मोसकिल भए जाइत छल । असलमे एहि लेल अभिभावक सेहो दोषी छलाह कारण ओ अपन संतानकेँ कोनो हालमे इंजिनीयर बनबाक सपना देखैत रहैत छलाह । एहन कैकटा विद्यार्थी छलाह जे सात-सात बेर मैट्रिकक परीक्षामे एही कारणसँ असफल होइत रहलाह । एक हिसाबे हुनकर जीवने बरबाद भए गेलनि। एहन अधिकांश लोक पढ़ाइ छोड़ि देलनि आ खेती-बारीमे लागि गेलाह।

ई बात कोनो एक इसकूल धरि सीमित नहि छल । अपितु, अखनो अपना ओहिठाम अभिभावकक इच्छा रहैत छनि जे हुनकर संतान डाक्टर वा इंजीनियर बनथि । हम एकटा विद्यार्थीकेँ जनैत छिअनि जे डाक्टर बनबाक फिराकमे अपन सात-आठ साल समय बरबाद कए लेलनि । हारि कए आर्ट्स लेलथि आ कानूनमे डिग्री कए कोनो बड़का कंपनीमे विधि अधिकारी भए गेलाह । आब ओ ओहि विषयमे आगू बढ़ैत गेलाह आ बहुत नीक पदपर पहुँचि

गेलाह। कहबाक माने जे विद्यार्थीकेँ अपन रुचि आ क्षमताक अनुसार विषय चुनबाक अधिकार हेबाक चाही । अभिभावक अपन महत्वाकांक्षा ओकरापर नहि लादथि । से जँ हेतेक तँ कोनो-ने-कोनो विषयमे ओ आगू बढ़ि जाएत आ इज्जतिसँ अपन जीविका चला सकत ।

एकतारा इसकूलमे हमर प्रगतिमे बाबूजीक बहुत योगदान छलनि । ओ निरंतर हमरा उत्साहित करैत रहैत छलाह । परीक्षामे नीक करी,सभसँ बेसी नंबर आनी ताहि लेल बहुत ध्यान रखैत छलाह । हुनका एहिबातक बहुत अभिलाषा रहैत छलनि जे गणितमे हम सए मे सए नंबर आनी । ताहिबातसँ उत्साहित भए हम गणितपर बहुत मेहनति करी । हमरा तकर फएदो भेल आ सभ परीक्षामे गणितमे बढ़िआँ नंबर अबैत रहल । आठमासँ एगारहमा धरि इसकूलक परीक्षासभमे हमर नंबरमे निरंतर बृद्धि होइत रहल। एहिलेल गामपर हमर पिता आ इसकूलमे जटाशंकर बाबू बहुत अधिक प्रेरित करैत रहलाह ।

जहाँ इसकूलमे पैर रखितहुँ कि लगैत जेना एकटा नव दुनिआमे पहुँचि गेलहुँ। चारूकातसँ विद्यार्थीसभ इसकूल दिस बढ़ि रहल अछि । शिक्षक लोकनि सेहो इसकूल पहुँचि रहल छथि । केओ-केओ पहिने पहुँचि चुकल छथि । हमसभ अपन गामसँ पैरे-पैरे इसकूल नियत समयपर पहुँचि जाइत छलहुँ । हमरा मोन नहि पड़ैत अछि जे कहिओ कोनो मौसममे हम इसकूल विलंबसँ पहुँचल होइ । इसकूल पहुँचितहुँ,झोरा रखितहुँ,तकर बादे प्रार्थनाक घंटी बजैत । भोरुका इसकूलमे तँ हमसभ जमुआरीसँ आगा होइतहुँ तरवन सूर्योदय होइत रहैत । रस्ता भरि विद्यार्थीसभ भेटैत जइतथि।

एकतारा उच्च विद्यालयक सीमानमे पहुँचैत-पहुँचैत चारूकातसँ आबि रहल विद्यार्थीक हुजुम देखाइत ।

कोनो विद्यार्थीक व्यक्तित्व निर्माणमे शिक्षकक आ विद्यालयक वातावरणक बहुत योगदान होइत अछि । ताहि संगे इसकूलिआ संगीसभक सेहो बहुत योगदान रहैत अछि । एकतारा उच्च विद्यालय चारूकातसँ खुजल वातावरणमे बनल छल । कोनो प्रकारक लंफ-लंफाक माहौल नहि छल । दोकान- दौरीक नामो निसान नहि छल । कहिओ काल बंबई मिठाइ वा चिनिआबदाम बेचबाक हेतु केओ आबि जाइत छल । बस एतबे । तेँ विद्यार्थीलोकनिक ध्यान भुतिएबाक संभावना नहि छल । शिक्षक लोकनि अपना भरि विद्यार्थीसभक बहुत ध्यान करैत छलाह खास कए तेजगर विद्यार्थीसभपर । परिणाम होइत छल जे सभसाल किछु-ने-किछु विद्यार्थी उच्चस्तरीय महाविद्यालयसभमे नामांकन करबैत छलाह आ ओतएसँ जीवनक विभिन्न क्षेत्रमे नाम करैत छलाह ।

इसकूलक वातावरण बहुत सात्विक छल । एकतारा गामसँ हटि कए एकांत बाधमे इसकूल बनल छल । इसकूलक लग-पासमे एकहुटा एहन किछु नहि छल जाहिसँ विद्यार्थीसभक ध्यान एमहर-ओमहर होइत ,ककरो कोनो प्रकारक गलत आदति लागैक । उच्च विद्यालयसँ थोड़बे दूरपर मिडिल इसकूल छल । ओहि मिडिल इसकूलसँ बहुत रास विद्यार्थीसभ उच्च विद्यालय आएल छलाह । हुनकासभकेँ ओ वातावरण पचि गेल छल । तेँ कोनो सुविधा-असुविधाक गप्प नहि होइत छलनि । मुदा हमरा सन-सन कैकटा विद्यार्थी छलाह जे आठमामे एकताराक उच्च विद्यालयमे नाम लेखओने छलाह । हम अड़ेर मिडिल इसकूलसँ

सातमा उत्तीर्ण केलाक बाद एकतारा गेल रही । छओ मास धरि किलासमे गुमसुम समय बिताबी । आठमाक छमाही परीक्षामे कोनो स्थान हमरा नहि भेटल छल । अनिल प्रथम आएल छलाह। ओ ओहीठामक मिडिल इसकूलक विद्यार्थी छलाह आ हुनकर पिता ओही इसकूलमे शिक्षक सेहो रहथि । संभवतःओकर बाद ओ कहिओ प्रथम नहि केलाह । बादमे तँ हुनकर नंबर कमे होइत गेल।

जखन परीक्षाक परिणाम अबैक तँ बाबूजी एक-एक विषयक नंबरपर घमरथन करैत छलाह । दोसर नीक विद्यार्थीसभक नंबरपर सेहो विचार करैत छलाह । मुदा हमरा कहिओ हुतथि नहि,अपितु निरंतर प्रेरित करथि जे हम आओर नीक करी । हुनके प्रेरणाक परिणाम भेल जे हम निरंतर नीक करैत गेलहुँ आ एगारहमाक सभ परीक्षामे प्रथम स्थान प्राप्त केलहुँ । संयोगसँ हमरासभक किलासमे चारि-पाँचटा विद्यार्थी बहुत परिश्रमी आ प्रतिभाशाली छलाह आ तकरे परिणाम छल जे आपसमे एकटा सकारात्मक प्रतिस्पर्धा बनल रहैत छल ,जकर बहुत अनुकूल परिणाम भेल । अंततः, बोर्डक परीक्षामे चारिगोटेकेँ प्रथम श्रेणी भेलनि -हमरा,नारायणजी (नवकरही),श्रीनारायणजी (नगवास) आ विजयजी (नवकरही) ।

देहातक इसकूल होइतहु ओहिठाम पढ़ाइ बढ़िआँ होइत छल । प्रधानाध्यापक स्वर्गीय युगेश्वर झाक बहुत आदर रहनि । ओ मैथिली व्याकरणसँ संबंधित कैकटा किताब लिखने रहथि । हमरासभकेँ ओ सामान्य गणित पढ़बैत छलाह । तकर अतिरिक्त जे कोनो किलास खाली रहल,जकर शिक्षक कोनो कारणसँ अनुपस्थित रहथि ,तकरा ओएह सम्हारैत छलाह । हुनकर गाम हरिपुर (मजरही टोल) छलनि । एकबेर हम हुनका ओहिठाम गेलो

रही । ओ भगवतीक परम भक्त छलाह । हम संघ लोक सेवा आयोगक एससीआरए परीक्षाक साक्षात्कारक हेतु दिल्ली जाइत रही । ओ हमरा अपना ओहिठाम बजओलाह आ भगवतीसँ हमर सफलताक हेतु प्रार्थना केलथि आ हमरा एकटा यंत्र सेहो देलथि । अपन विद्यार्थीक प्रति एतेक कल्याणक भावना रहैत छलनि ओहि समयक शिक्षकमे तकर ई उदाहरण थिक।

इसकूलमे वार्षिक परीक्षाक परिणाम घोषित करबाक हेतु सभ चटिआकेँ इसकूलक सामनेक आङनमे ठाढ़ कएल जाइत छल। शिक्षक लोकनि ओसारापर ठाढ़ होइत छलाह । प्रधानाचार्यजीक हाथमे परिणाम तालिका रहैत छल । सभसँ पहिने आठमा किलासक परिणाम घोषित होइत छल । प्रथम,द्वितीय,तृतीय आ चतुर्थ स्थान पओनिहार विद्यार्थीक नाम बाजल जाइत छल । सभसँ पहिने प्रथम आबएबला विद्यार्थीक नाम लेल जाइत छल । ओ प्रसन्नतापूर्वक अपन नव किलासमे सभसँ पहिने जा कए बैसि जाइत छलाह । तकर बाद दोसर,तेसर आ चारिम स्थान पओनिहार विद्यार्थीक नाम क्रमशः घोषित होइत छल । सभसँ अंतमे दसमाक परीक्षाफलक घोषणा कएल जाइत छल । एगारहमामे तँ बोर्ड परीक्षा होइत छल । एहि तरहसँ सफल विद्यार्थीसभ अपन-अपन नव किलासमे पहुँचि गर्वक अनुभव करैत छलाह । एक हिसाबे प्रतिभा आ उपलब्धिकेँ सम्मान दए विद्यार्थीसभकेँ नीक सँ नीक करबाक हेतु प्रेरित कएल जाइत छल।

तत्कालीन विज्ञान शिक्षक आ०रामनरेश ठाकुरसँ विद्यार्थीसभ बहुत डराइत छल । कारण जँ व्यवहारिक परीक्षामे असफल कए गेलहुँ तँ मैट्रिकक परीक्षामे विद्यार्थी उत्तीर्ण नहि भए पबैत छल चाहे ओकरा आन विषयसभमे कतबो नीक नंबर

आबैक। अस्तु,लोक हुनकासँ बहुत बँचि कए रहैत छल । व्यवहारिक किलासक हेतु एकटा कोठरी छल जाहिमे पाँच-छओटा आलमारीमे नाना प्रकारक औजार,रसायनिक द्रव्य आदि राखल रहैत छल । हमसभ तँ एतबेसँ प्रसन्न भए जाइत छलहुँ जे प्रयोगशाला खुजल आ हमरा लोकनिकेँ किछु करबाक अवसर भेटल । जँ प्रयोगशालाक डिबिआमे स्पीरीट रहल तँ काँच नली के मोड़नाइ सिखाओल जाइत , नहि तँ एमहर-ओमहरक किछु- किछु कए विद्यार्थीसभ सन्तोष कए लैत छल ।

उच्च विद्यालय एकतारा हमरा लोकनिक शिक्षाक आधारशिला छल । हमहीटा नहि,अपितु,ओहि समयक कतेको विद्यार्थीक जीवनक दिशा ओतए बदलि गेल । मामूली खर्चामे एतेक बढ़िआँ शिक्षा भेटब भाग्यकक बात छल । एकाध अपवाद छोड़िकए अधिकांश शिक्षक बहुत परिश्रम आ निष्ठासँ अपन कर्तव्यक निष्पादन करैत छलाह । यद्यपि किछु शिक्षक निजी ट्यूशन करैत छलाह मुदा तकर माने ई नहि होइत छल जे ट्यूशन नहि पढ़निहार विद्यार्थीक संगे कोनो भेदभाव कएल जाइत। इसकूलक पढ़ाइमे कोनो कोताही नहि होइत छलैक । अधिकांश विद्यार्थी अंग्रेजीसँ परेसान रहैत छलाह । अंग्रेजीमे सफल होएब कैकबेर बहुत मोसकिल भए जाइत छलनि। एहि हेतु किछु विद्यार्थीसभ निजी ट्यूशन सेहो करैत छलाह । गणित विषयमे सेहो अधिकांश विद्यार्थीकेँ समस्या रहैत छलनि । ओहि समयमे सामान्य गणित आ उच्च गणितक फराक-फराक पत्र होइत छल । कैकटा विद्यार्थी विज्ञान पढ़बाक चक्करमे गणित रखैत छलाह आ सालक साल असफल होइत रहि जाइत छलाह । कैकटा विद्यार्थी बादमे विज्ञान छोड़ि कए कला संकायमे चलि जाइत छलाह । असलमे

अपनासभक ओहिठाम विज्ञानक विषय पढ़नाइ उज्ज्वल भविष्यक हेतु अनिवार्य बूझल जाइत छल । भविष्य उज्ज्वल तँ जखन होइत तखन मुदा तत्कालमे तँ ओसभ मैट्रिकेमे लटपटा जाइत छलाह । हमरा लगैत अछि जे पढ़ाइक तत्कालीन रूप-रेखा आ विषयक चुनाव सही नहि छल जाहि कारणसँ कतेको विद्यार्थीक जीवन बरबाद भए गेल ।

कहल जाइत अछि जे परिवार मनुक्खक प्रथम पाठशाला होइत अछि । ई बात एकदम सही अछि । पारिवारिक वातावरणमे स्वतः स्वाभाविक रूपसँ नेनाक अंतर्मनपर अनेकानेक प्रकारक घटनासभ अपन प्रभाव छोड़ैत रहैत अछि । एहिक्रममे महाभारतमे वर्णित अभिमन्युक कथा बहुत प्रसंगिक अछि । गर्भहिमे ओ पितासँ चक्रव्युह तोड़बाक शिक्षा प्राप्त कए लेने छलाह । मुदा ई शिक्षा अपूर्ण रहि गेल छल । परिणाम भेल जे ओ चक्रव्युह तोड़ि ओहिमे पैसि तँ गेलाह मुदा ओहिमेसँ निकलि नहि सकलाह । कहबाक तात्पर्य ई अछि जे नेनाकेँ शुरू एसँ सुसंस्कार देबाक काज रहैत अछि । तखने ओ जीवनमे नीक कए सकैत अछि । तेँ माता-पिताक बड़ पैघ दायित्व रहैत अछि । आइ-काल्हि से नहि भए सकबाक कारण नीक-नीक इसकूलमे पढ़ननिहार विद्यार्थीसभ पिस्तौल लेने घुमैत रहैत छथि आ जँ शिक्षक टोकलखिन तँ जानोसँ हाथ धोइत छथि ।

असलमे कोनो इसकूल विद्यार्थीक भीतरमे विद्यमान संस्कारकेँ जगाबक काज करैत अछि । इएह कारण छल जे देहातक वातावरणमे सुविधाहीन ओहि इसकूलसँ किछु बहुत नीक विद्यार्थीसभक निर्माण भेल जे जीवनमे कतेको क्षेत्रमे उत्कृष्टता प्राप्त केलाह, दुनिआमे नाम कए गेलाह । मुदा किछु एहनो

विद्यार्थीसभ भेलाह जे मैट्रिको नहि कए सकलाह आ जहाँ-तहाँ भसिआ गेलाह । ओएह इसकूल,ओएह शिक्षक मुदा परिणाममे एतेक अंतर किएक होइत छल? ई सोचबाक बात थिक। असलमे जेहने लोहा रहतैक तेहने हथिआर बनतैक ने । कतबो धिपेबैक मुदा ओकर असलिअत तँ अपन काज करबे करत । बहुत रास विद्यार्थीसभ परिवारमे अनुकूल वातावरण नहि रहबाक कारण आगू नहि बढ़ि पबैत छलाह । हुनकासभकेँ जँ व्यवहारिक शिक्षा देल जाइत तँ साइत बेसी सुखी रहितथि मुदा तकर व्यवस्था ओहि समयक इसकूलसभमे नहि रहैत छल । परिणामस्वरूप,किछु विद्यार्थी तँ बहुत नीक करैत छलाह,मुदा बेसीगोटे टपले खाइत रहि जाइत छलाह ।

उच्च विद्यालय एकतारामे बिताओल गेल ओ चारिसाल(सन् १९६३-१९६६) हमरा लोकनिक जीवन निर्माणमे बहुत सहायक सिद्ध भेल । ई बात अलग अछि जे शिक्षाक पद्धति आ प्रकार जँ आओर वैज्ञानिक रहैत तँ बहुत रास विद्यार्थी बेसी सफल होइत आ इसकूलसँ निकललाक बाद आत्मसम्मानसँ जीवन-यापन कए सकितथि । मुदा ई बात तँ ओहि समयक सर्वव्यापी समस्या छल आ कमो-बेस अखनहु अछिए । तमाम असुविधाक अछैत ओहि इसकूलसँ सभसाल किछु एहन विद्यार्थीसभक निर्माण होइत रहल जे आगू जा कए अपन-अपन कार्यक्षेत्रमे बहुत नाम केलनि । निश्चित रूपसँ देहातमे रचल-बसल ओहि इसकूलक संस्थापक लोकनि एहि हेतु धन्यवादक पात्र छथि।

6/8/2020

८

अष्टयाम आ नबाह

सन्१९६२ भारत चीनक युद्धक हेतु प्रसिद्ध अछि । सौंसे देश चीनक खिलाफ सनसन करैत छल । अपन देशक सामरिक आ आर्थिक सामर्थ्य सीमित छल । चीनक सेना बढ़िते जा रहल छल । गाम-गाम लोक रेडिओक समाचार सुनबा हेतु आतुर रहैत छल । मुदा समाचार सुनि लोकसभक लोलपर फुफरी पड़ैत छल। ओही समयमे गाम-गाम ई हवा बहि गेल जे प्रलय होमए बला अछि। एहि बातक चीन संगे भेल युद्धसँ किछु लेना-देना नहि रहैक। मुदा ई घटना ओही लग-पासक हेबाक कारण तकर चर्च होएब स्वाभाविक ।

गामक-गाम नबाह,अष्टयाम, यज्ञ होमए लागल । नाना-प्रकारक अनुष्ठान होइत रहल। तात्पर्य इएह छल जे प्रलयक भविष्यवाणी गलत भए जाइक । हमसभ तँ नेना रही । ओतेक बात नहि बुझिऐक । मुदा लोकसभक मोन आशंकित देखि चिंता तँ हेबे करए जे कहि नहि की होएत,केओ बचत की सभ दहि-बहि जाएत। कहि नहि एहन भविष्यवाणी केनहार के छलाह आ हुनकर की उद्येश्य छलनि? जे छलाह मुदा समाजमे हरकंप तँ भइए गेल छल ।

कोनो आसन्न महान संकटसँ मुक्ति पएबाक हेतु गामक-गाममे अष्टयाम आ नबाह कीर्तन करबाक उजाहि उठि गेल छल। हमरा गाममे तँ अष्टयाम आ नबाहक जेना बाढ़ि आबि गेल छल । साइते कोनो घर रहल होएत जतए अष्टयाम नहि भेल। ब्रह्मस्थानमे

नबाह भेल छल । गाम-गामसँ कीर्तनिआसभ झुंड बना-बना अपन समयपर रंग-विरंगक सुर-तान दैत कीर्तन करैत छलाह । हमरा मोन पड़ैत अछि जे जमुआरी,बिचखाना,पौना, झोंझी आ कहि नहि कोन-कोन गामक लोकसभ ढ़ोलक,झालि, हरमुनिआ लेने अबैत छलाह आ दू-तीन घंटाक अपन पारमे अनेकानेक सुर-तान दैत निर्धारित मंत्रकेँ गबैत रहैत छलाह । बाल्टीक-बाल्टी सरबत घोरल जाइत छल आ कीर्तनिआँसभकेँ कीर्तन समाप्तिक बाद पिआओल जाइत छल । एकटा मंडलीक समय समाप्त हेबासँ पहिने दोसर मंडली तैयार रहैत छल जाहिसँ नवाह संकीर्तन अवाध्य चलैत रहए,खंडित नहि होअए ।

संकीर्तनक मंत्रकेँ फिल्मी गानाक तर्जपर गेनाइ आ कीर्तनमे घुमैत काल अनेकानेक प्रकारक नृत्य भंगिमा सेहो कैकटा मंडली द्वारा कएल जाइत छल । एकटा झालि बजओनिहार सामनेक दोसर झालि बजओनिहारक झालिपर झालि रखबाक हेतु उनटि जाइत छलाह । झालिपर- झालि बजाकए फेर पूर्वबत भए जाइत छलाह । धिआ-पूतासभ एहि दृश्यसभसँ बहुत प्रभावित रहैत छलाह आ घंटो कार्यक्रमकेँ देखैत रहैत छलाह । जमुआरीक मंडली एहि हेतु नामी छल । एहि मंडलीमे हमर पिताजीक एकटा कर्मचारी स्वर्गीय कीर्तन सिंहकेँ कीर्तन करैत देखि हमरा बहुत नीक लगैत छल । कहि नहि सकैत छी जे गाम-गामसँ अनेकानेक कीर्तन मंडलीकेँ अबैत-जाइत देखि नेनासभकेँ कतेक प्रसन्नता होइत छल ।

एहन माहौल भए गेल रहैक जे हमसभ चारि-पाँचटा नेनासभ मिलि कए अपने ओसारापर अष्टयाम शुरु कए देने रही । बादमे जखन बाबूजीकेँ पता चललनि तँ ओ बहुत असमंजसमे रहथि । हमसभ कोनो खराब काज तँ नहि करैत रही जे सोझे रोकि

देल जाइत,मुदा समस्या रहैक जे दूपहर रातिमे ओकरा कोना आगू ससराओल जाएत । लग-पासक धिआ-पूतासभकेँ हम जा-जा कए बजाबी मुदा सभठाम लोकसभ किछु -ने-किछु दिक्कतिबला गप्प करथि कारण राति बढ़ल जाइत छल,लोकसभ नीन्नसँ मातल छल। ऊपरसँ जाड़क मास छलैक । सीरक छोड़ि कए कीर्तन करए के अबैत? हारि कए आधा रातिमे कीर्तन बंद करए पड़ल । मोसकिलसँ तीन-चारिटा छौंड़ासभ मिलि कए एकटा टेबुलक चारूकात घुमि-घुमि कए अष्टयाम करए चलल रही । टेबुलक बीचमे भगवानसभक फोटो राखि देने रहिऐक । एक हिसाबे ई धिआ-पूतासभक खेल छल । असलमे किछुदिनसँ लगातार गाममे यत्र-तत्र एहन कीर्तनसभ होइते रहल छल जकर प्रभाव नेनासभक माथापर पड़ल हेतैक ,सएह बुझा रहल अछि । अष्टयामक संकल्प अधूरा रहि गेल । एहिबातक दुख कैकगोटेकेँ भेलनि आ थोड़ेक दिनक बाद फेरसँ विधि-विधानसँ अष्टयामक आयोजन हमरसभक दरबाजापर भेल । कहि नहि सकैत छी जे हम आ हमर संगीसभ एहि बातसँ कतेक प्रसन्न भेल रही ।

अष्टयामक प्रभाव भेल कि नहि भेल से तँ नहि कहब मुदा ओहि साल कोनो तेहन आफद नहि आएल जकर आशंकासँ गामक-गाम लोकसभ अष्टयाम,नवाह,यज्ञसभ करए लागल रहथि। हँ,ओहिसाल एकटा बात जरूर भेल। की भेल? मोन पड़ि रहल अछि की? नहि, तँ सुनू । गामक-गाम आम खूब फड़ल रहए । कलमसभमे आमक पथार लागि गेल रहए । आम खाइत-खाइत लोकसभ जहन थाकि गेलाह तँ धरिक -धरि अमोट पाड़ल गेल । अखनो मोन पड़ैत अछि जे कलमसभमे कतेक चुहचुही रहैत छल।

नेनाक बाते किछु आओर होइत छैक । कलममे आमक रखबारी करबाक हेतु मचान बनाओल गेल छल । हमहूँ अपन संगीसभक संगे आमक रखबारीक बहाना बनाकए कलममे रातिभरि रहि जेबाक जोगारमे रही । मुदा बाबूजीकेँ बहुत चिंता भेलनि आ राति बढ़ैत देखि लालटेन लेने कलम पहुँचि गेलाह । हारि कए हमसभ घर वापस भए गेलहुँ।

गाम-गाममे अष्टयाम आ नवाह अखनो होइते अछि । हमरा गाममे तँ नियमित रूपसँ सालमे एकबेर नवाह होइते अछि । नबाह एक हिसाबे ग्रामोत्सव होइत अछि । मुदा जे उजाहि सन् १९६२मे उठल रहए से फेर कहिओ देखबा-सुनबामे नहि आएल । आब तँ ओ बात बहुत पुरान भए गेल । मुदा अखनो कीर्तनसभक प्रतिध्वनि माथक कोनो कोनमे ओहिना ध्वनित होइत रहैत अछि जेना की ई कल्हुके गप्प होइक ।

९

अखबारक अमल

कैक बेर लोक कहताह-"हौ! अखबार पढ़ने कोनो पेट भरैत छैक?"

पेट भरौक कि नहि मुदा मोन तँ भरिते छैक । फेर हमसभ तँ सामाजिक प्राणी छी । लग-पासमे रहनिहार लोकक सुख-सुविधाक ध्यान राखब आ विपत्तिमे संगे ठाढ़ होएब बहुत जरूरी होइत अछि । से तँ तखने होएत जखन हम अपना-आपकेँ

समाजसँ जोड़ि कए राखी । ताहि हेतु अखबार एकटा बहुत सशक्त माध्यम साबित भए सकैत अछि ।

अखबारक सबसँ पैघ फएदा ई थिक जे अहाँ नित्य भोरे-भोर किछु नव घटनासँ जुड़ि जाइत छी । नित्यप्रति देश-परदेशमे भए रहल परिवर्तनसँ अवगत होइत छी । ततबे नहि, लग-पासक बहुत रास सुविधा-असुविधासँ परिचित होइत रहैत छी । बहुत लोकक तँ ई स्थिति अछि जे जँ भोरे उठि कए भफाइत चाहक चुस्कीक संग अखबारक चासनी नहि भेटतनि तँ बुझू बोखार लागि जेतनि । घरसँ बाहर भए अखबारक आगमनक प्रतीक्षा करए लगताह । अखबार पढ़ि लेलाक बाद एकटा संतुष्टिक भाव मोनमे अबैत अछि । प्रायः भोरुका एकघंटा समय चाहक संगे अखबार पढ़बामे नीकसँ बीति जाइत अछि ।

भोरुका अखबार माने टाइमपास । जौँ भोरमे अखबार आबएमे विलंब भेल तँ कैक गोटे परेसानी बढ़ि जाइत छनि । कैक गोटे अखबारबलाक बाट तकैत-तकैत बाहर निकलि जाइत छथि। अखबारबलाकेँ फोनपर फोन होमए लगैत अछि । ओहो तँ मनुक्खे अछि । कहिओ बिमार पड़ि सकैत अछि,जरूरी काज आबि सकैत छैक । कारण किछु भए सकैत छैक मुदा एहन नहि भए सकैत अछि जे ओ कहिओ छुट्टी लेबे नहि करए । मुदा अखबारक चस्का तेहन होइत अछि जे लोक एक्कोदिन ओकर बिना रहिए नहि सकैत अछि , बेचेन भए जाइत अछि । एकरे कहल जाइत अछि अमल। भोरमे अखबार पढ़ब सेहो एकटा अमले थिक जकर चस्का कोनो निसाँसँ कम नहि होइत अछि ।

अखबारक कोन पन्ना के सबसँ पहिने उलटओताह ओ हुनकर रूचि आ स्वभावपर निर्भर करैत अछि । हमरा कार्यालयमे

एकटा कर्मचारी अखबार पढ़एकाल सबसँ पहिने बिचलका पन्ना पढ़ैत छलाह जाहिमे जिलाभरिमे भेल खून-खराबाक समाचार भरल रहैत छल । तहिना जौँ केओ क्रिकेटप्रेमी छथि तँ ओ सभसँ पहिने खेल समाचार पढ़ताह । राजनीतिमे रूचि रखनहार लोक प्रथम पृष्ठ सभसँ पहिने पढ़ताह । तकरबाद दुनिआ भरिक राजनीतिक गप्प करताह जेना कि सभटा भार हुनके माथपर होनि।

अखबारक अभाव ओकर उपस्थितिसँ बेसी लक्षित होइत अछि । जौँ कोनो कारणसँ कहिओ अखबार नहि आएल तँ भोरेसँ मनोदशा खराब होएब स्वाभाविक । चाह तँ आबि गेल मुदा अखबार बिना चाहक कोन आनंद रहि गेल'-से मोनमे होइत रहैत अछि । कैक गोटा तँ अखबार आनबाक हेतु दिन-राति एक कए दैत छथि। जौँ केओ मधुबनी वा दरभंगा जा रहल छथि तँ हुनका अखबार अनबाक भार देथिन जे घुरतीमे अखबार लेने आएब। सोचएबला गप्प थिक जे आखिर अखबारक एतेक प्रयोजन किएक रहैत छैक? किछु तँ एहन बात हेतैक जे अखबार मंगाएब आ पढ़ब एतेक महत्वपूर्ण भए गेल अछि ।

असलमे अखबारमे एकहि संगे बहुत रास लोकक आवश्यकताक पूर्ति होइत अछि । जकरा नौकरी चाही से नव-नव रिक्तिक सूचना देखि अपन अरजी लगा सकैत छथि । जिनका बिआह करबाक छनि हुनको लेल ओहिमे विज्ञापन देखल जा सकैत अछि । परीक्षाक परिणाम सेहो ओहिमे पढ़ल जा सकैत अछि । गाम-घरक समाचार तँ भेटिए जाइत छैक ।

अखबार नियमित पढ़बाक फएदा जगजाहिर अछि । थोड़बे कालमे दुनिआ भरिक जानकारी भेटि जाइत अछि,सेहो बिना कोनो विशेष प्रयासक । ओना आइ-काल्हि समाचारक

माध्यममे बहुत रास बृद्धि भेल अछि । मोबाइल फोन,दूरदर्शन,घर-घर पसरि गेल अछि । कहि सकैत छी तखन अखबारकेँ के पुछैत अछि? मुदा से बात नहि अछि । कतबो किछु भेलैक अछि,मुदा अखबारक बिक्री बढ़बे कएल अछि । तकर की कारण? एकटा प्रमुख कारण थिक जे अखबारमे पाठकक हाथमे रहैत छैक जे कोन समाचार कतबाकाल धरि पढ़ल जाए । चाहथि तँ ओ प्रमुख पाँतिसभ पढ़ि कए अखबारक पन्ना पलटि देथि नहि जँ कोनो समाचार बेसी रुचिगर किंवा उपयोगी बुझेलनि तँ ओकर पाँति -पाँति पढ़ि जाउ,मर्जी पाठकक । मुदा दूरदर्शनमे से बात नहि रहैत अछि । जहाँ समाचार देखए लागब कि प्रचारक शृंखला शुरु होएत। लिअह औ बाबू!रिमोट हाथमे लए चैनेलसभ बदलैत रहू मुदा बात ओतबे भेटत । सब चैनेलबला से सीखा-बुद्धी केने रहैत अछि जे सभठाम विज्ञापन एकहि संगे होइत रहैत अछि । हारिकए दर्शक बैसि जाइत छथि आ जएह-सएह देखैत रहि जाइत छथि । मुदा अखबारमे से बात नहि होइत अछि । लोक अपन रुचिक हिसाबसँ निर्णय कए सकैत छथि जे की पढ़ी आ की नहि । ककरा नीकसँ पढ़ी आ ककर मुख्य पाँति पढ़ि कए आगू बढ़ि जाइ । कहक माने जे नियंत्रण पढ़एबलाक हाथमे रहैत अछि । मुदा अखबारोकेँ अपन सीमान छैक । एक तँ ओ एक-दू दिन पुरान समाचार छपैत अछि । कारण जाबे समाचार छपतैक आ लोकक हाथमे पहँचतैक ताबे तँ ओ बसिआ भए जाइत अछि । तथापि,अखबारक अपन महत्व छैक आ रहबे करतैक ।

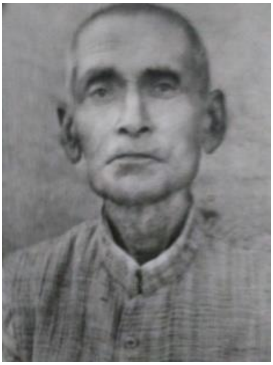

१०

पिताक देहावसान

“भैया नहि रहलाह ।”

“की भेलनि?”

“आइ भोरे छातीमे दर्द उठलनि । योगीजी पानि चढ़ओने रहथिन। मुदा हाल गड़बड़ाइते गेलनि आ किछुकाल पहिने चलि गेलाह।”

मधुबनीसँ नबोनाथजीक फोन छल । समाचार सुनि कनी काल लेल सुन्न पड़ि गेलहुँ । फेर सम्हरलहुँ,शांत भेलहुँ । सोचलहुँ जे अखन तुरंत तँ गाम गेनाइ संभव नहि अछि । आइ-काल्हि जकाँ धर दए हवाइ जहाजपर चढ़ि जेबाक समय नहि रहैक ने हमरा लग ततेक पैसाक जोगार छल । श्राद्धक हेतु सेहो पैसाक जोगार करबाक छल । अस्तु, नवोनाथजीकेँ कहलिअनि-

“अनुज लोकनिकेँ कहबनि जे आगू बढ़थि ।”

कहक माने जे पिताक अंतिम संस्कार कए देल जानि । हमर प्रतीक्षा नहि करथि । सएह भेबो कएल । हमरासँ छोट सुरेन्द्रजी बाबूजीकेँ

आगि देलखिन। आओर दुनू भाए सेहो ओतए उपस्थित रहथि । गाम-घरक लोक तँ रहबे करथि ।

जखन नबोनाथजीक फोन आएल तँ हम कार्यालयमे रही। करीब चारि बजेक समय रहल हेतैक ।७ फरबरी १९८९क (फाल्गुन शुक्ल दुतिआ)दिन रहैक । ओहि समय हम गृह मंत्रालयक आंतरिक वित्त विभागमे डेस्क अधकिारी रही । ए.के. हुइ हमर अधिकारी छलाह । हुनका सभ बात कहलिअनि । ओ बहुत सहृदयतापूर्वक हमरा हेतु रेलक टिकटक ओरिआन केलाह । कार्यालयसँ छुट्टी सेहो भेटल। तकरबाद सरोजिनी नगर स्थित सरकारी आवासपर पहुँचलहुँ ।श्रीमतीजीकेँ सभबात कहलिअनि।

पिताक देहांतसँ पूर्ब रातिभरि हमरा निन्न नहि भेल रहए। भरि राति टुकुर-टुकुर करैत बीति गेल छल । संभवतः आसन्न दुर्घटनाक आहट मोनकेँ भए गेल हेतैक ।यद्यपि ओ बहुत कमजोर भए गेल रहथि,भूख नहि लागनि मुदा एहन नहि लगैक जे एतेक जल्दी चलि जेताह ।हमर छुट्टी बीति गेल छल ।पटना बाटे टिकट छल ।मुदा पटना पहुँचतहि पता लागल जे ट्रेनमे हड़ताल भए गेल छैक । ट्रेन नहि चलत । तखन की कएल जाए? सपरिवार साढ़ूजीक डेरापर पटना पहुँचलहुँ ।दोसर दिन जा कए ट्रेन खुजल। हमसभ दिल्ली पहुँचलहुँ ।तकर दू दिनक बादे ई समाचार भेटल ।

ई हमर दुर्भाग्य जे हम पिताक अंतिम समयमे हुनका लग नहि रहि सकलहुँ ,हुनकर अंतिम संस्कारमे भाग नहि लए सकलहुँ। मुदा आब एहिसभपर सोचलासँ की फएदा? हम कइए की सकैत छलहुँ? हवाइ जहाजसँ जा सकब से तँ सोचेबो नहि कएल छल? एतबा ध्यानमे आएल जे हुनकर श्राद्धक हेतु यथासाध्य टाकाक जोगार केने चली नहि तँ गाम गेलाक बाद ओहो एकटा महासंकट

भए जाएत । ककरासँ मंगितिऐक? दिल्लीमे तँ तइओ जोगार भए सकैत छल । गाम तँ गामे थिक । गाम जेबासँ पूर्व टाकाक जोगार करब जरूरी छल आ सएह सोचि दू दिनक बाद गाम बिदा भेलहुँ ।

असलमे समाचार भेटलाक तुरंत बाद नहि जेबाक कारण श्राद्धक हेतु टाकाक जोगार करब छल । गाम खाली हाथ गेनाइ उचित नहि बुझाएल । जेना-तेना तेसरदिन रातिमे हम गाम पहुँचलहुँ । सबसँ पहिने माए भेटलीह । सदा-सर्वदा जकाँ शांत । अपन बच्चासभकेँ देखि सन्तोष केने । हमरा देखितहि कहलीह-

“आब कमसँ कम शांतिसँ काज होएत ... ।”

तकरबाद माए बाबूजीक देहांतक परिस्थितिक चर्च करैत रहलीह । बड़का-बड़का आँखिसँ ढबर-ढबर नोर धारा प्रवाह बहि रहल छलनि । की कहितिअनि? कोना सन्तोष दितिअनि ? लगभग बाबन वर्षक संग छुटि गेल रहनि । दुखक बात तँ रहबे करैक । मुदा एकर कोनो समाधानो तँ नहि भए सकैत छल । से ओ बुझैत छलीह । एहन असीम धैर्य भगवान सभकेँ देथुन । मोनमे अपार पीड़ाकेँ निरंतर झपने दिन-राति ओहनो समयमे ओ परिवारमे घिरनी जकाँ बहैत रहलीह,काज करैत रहलीह -बिना कोनो प्रतिपूर्तिक अभिलाषाकेँ । के उतारत हुनकर ऋण ? मुदा अंत- अंत धरि हमरा मोनमे ई भाव अबैत रहल जे जन्म-जन्म ओएह हमर माए होथि । हम हुनकर जे ऋण नहि उतारि सकलहुँ से आगू उतारबाक प्रयास करी । कैकबेर अखनो हमरा मोनमे होइत रहैत अछि जे कनीको कालक हेतु ओ घुरि अबितथि तँ हम हम हुनकर पैर पकड़ि माफी मांगि लितहुँ । कहितिअनि-“हे माते! हमरासँ जे त्रुटि भेल ताहि हेतु क्षमा करू ।” मुदा से कतहु भेलैक अछि? एहि संसारसँ जे एकबेर गेल से घुरि नहि आएल , कदापि नहि ।

एक हिसाबे हम श्मशानेमे बैसल रही । बाबूजीक साराक आगि मिझा गेल छल । हम,हमर अनुज लोकनि आ महापात्रजी ओहिठाम रही । सभ मिलि कए छाउरमेसँ हड्डीक अवशेष(फूल) चुनैत रही । तकर बाद माटि,पानि आ बचलाहा छाउर सभकेँ मिला कए सारा बनाओल गेल । ओहिपर तुलसी रोपल गेल । मंत्र पढ़ल गेल । ई सभ करैत-करैत किछु समय लागल । बीच-बीचमे खाली समयमे बाबूजीक संग बिताओल समय ,हुनकर हमरासँ आशा-अभिलाषाक कतेको प्रसंग मोन पड़ैत रहल । ई स्थिति श्राद्धक बादो बहुत दिन धरि बनल रहल ।

सभ माता-पिता अपन संतानकेँ यथासंभव मानैत अछि,नीकसँ पालन करैत अछि । मुदासभक भाग्य एकरंग होइक तखन ने? केओ जनमिते राजाक घरमे पहुँचि जाइत अछि आ केओ सड़कपर कनैत रहैत अछि आ माता-पिता असहाय भेल मजदूरी करैत रहैत अछि । हमर माता-पिताक नओटा संतान छलनि । पाँचटा बेटी आ चारिटा बेटा। हम हुनकर छठम संतान छलिअनि। हमर बाबूजीक हालत जखन गड़बड़ेलनि तँ ओ सोचथि जे हम ततेक भारी अधिकारी बनब जे सभ क्षतिपूर्ति कए देबनि । सभ भाए-बहिनकेँ जकरा-जतेक मदतिक काज हेतनि से कए देबनि आ अपन तँ कइए लेब । हम मेहनतिसँ पढ़ी,अपना भरि जे पार लागए से करी,प्रयास इएह रहए जे पिताक मनोरथ पूर्ण कए सकिअनि । मुदा कहबी छैक जे हाथ आ मुँहक बीचमे बहुत दूरी होइत छैक।

मनुक्ख केहन पाथर जीव होइत अछि? की- की ने सहि जाइत अछि? कहि नहि सकैत छी जे हमर पिता हमरा कतेक मानथि,कतेक प्रेरित करथि,दिन-राति एहि प्रयासमे रहथि जे हम नीकसँ-नीक करी,ताहि हेतु जे पार लगलनि से केबो केलाह । मुदा

कर्ण जकाँ हुनको जीवन रथक पहिआ फँसि गेल रहनि । आर्थिक पराभव तेहन भए गेलनि जे ऐन मौकापर सभकिछु ठमकि गेल । सभ तैयारी धएले रहि गेल।

चारिमदिन सारा झपलाक बाद हमरा उतरी स्थानांतरित कएल गेल । तहिआसँ द्वादशा धरि तरह-तरहक कर्मकाण्ड कएल गेल । ओहि समयमे हमरो आर्थिक परिस्थिति ठीक नहि छल । जेना-तेना किछु टाकाक जोगार कएलहुँ । हमर अनुज सुरेन्द्रजी सेहो यथासाध्य योगदान देलथि । एहि तरहें गामभरि ब्राह्मण भोजन(दुनू दिन)क व्योंत भेल । जेना-तेना बाबूजीक श्राद्ध संपन्न भेल। श्राद्ध भए गेलाक बाद माएक मोन बहुत आश्वस्त लागि रहल छलनि ।

हमर परिश्रम आ निष्ठाक प्रशंसा बाबूजी बेर-बेर आन भाए लोकनिक समक्ष करथि जाहिसँ हुनकोसभकेँ ओहिना करबाक प्रेरणा होनि । मुदा भेल उल्टे । अभिभावककेँ चाही जे एकटा बच्चाक प्रशंसा दोसर-तेसर बच्चालग करैत समयमे सावधानी राखए,नहि तँ संतानसभमे आपसी कलहक कारण बनि जाइत अछि ।

सन्१९८९मे पिताक देहांतक बाद २७ वर्ष माए जीवित रहलीह । सभदिन ओहिना शांत,संघर्षरत । पिताक देहांतक बाद सभसँ बेसी चिंता हमरा माए हेतु भेल । हम निश्चय केलहुँ जे जीवनपर्यंत माएक सेवा करैत रहबनि जाहिसँ हुनका कोनो कष्ट नहि होनि । हमरा एहि बातक सन्तोष अछि जे हम एहि संकल्पक पालन केलहुँ । कतबो परेसानी भेल मुदा सभ मास बिना कोनो अपवादकेँ हम माएक नामे मनीआर्डर पठबैत रहलहुँ । कतेको बेर बहुत जरूरी खर्चामे कटौती कए एहि काजकेँ कएल जा सकल ।

मुदा ओ आर्थिक आधार हुनका जीवनमे बहुत मदति केलकनि । हम एहि बातक हेतु निरंतर प्रयास केलहुँ जे ओ हमरा संगे दिल्ली रहथि मुदा ओ ताहि हेतु कहिओ तैयार नहि भेलथि । हमरा जनैत तकर मूल कारण छल जे ओ स्वतंत्र रहए चाहैत छलीह । दोसर कारण हुनकर गाममे रहनिहार हमर अनुज आ हुनकर परिवार छलनि । माए तँ सभहक होइत छैक। नओटा संतान हुनका रहथिन। विदित छैक जे सभक प्रति हुनकर अनुराग रहनि । तेँ ओ कहिओ गामसँ बाहर नहि जाए चाहथि । जे परिस्थिति छलैक ओहिमे जे संभव छलैक से हम केलहुँ ।

हमर पिताक अभिलाषा रहनि जे हम बहुत पढ़ी,बड़का हाकिम बनी,तकर बाद पूरा परिवारकेँ जकरा जे जरुरत होइक से पूरा करैत रही । मुदा जीवनमे एहन साइते होइत होइक । ने हमरा ओतेक सामर्थ्य भगवान देलनि जे सभक भार उठा लितहुँ आ जकरा,जखन जाहि बस्तुक प्रयोजन होइतैक से पूरा करैत चलि जइतहुँ । खैर! जे हेबाक छलैक से भेलैक । आब ओकर की घमरथन होएत । माता-पिताक प्रतिए सभ संतानक कर्तव्य होइत अछि । मुदा से कहाँ होइत अछि?

ई जीवन छैक । एहिठाम सभकिछु मनोनुकूल नहि होइत छैक । भावी प्रबल होइत छैक । समय ककरो नहि छोड़ैत अछि । कृष्ण सन महान व्यक्ति एकटा मामूली व्याधाक हाथे मारल जाइत छथि । अर्जुन लुटेरासभक सामनेमे हथप्रभ रहि जाइत छथि आ ओ सभ द्वारकाक विधवा आ ओकरसभक धन-संपत्तिकेँ लुटि लैत अछि । एहन-एहन अनेको उदाहरण एहि संसारमे भेटत । एहिसभ बातपर विचार केलासँ शांति भेटि सकैत अछि । अन्यथा तँ जीवनमे लोक सोचिते रहि जाएत ।

समय बीति जाइत छैक,मुदा बात मोन रहि जाइत छैक । आइओ जखन असगरमे सोचैत छी तँ बाबूजी बहुत मोन पड़ैत छथि आ मोन पड़ैत अछि हुनकर सतत जीवंत आ आशावान व्यक्तित्व। अखनहु कैकबेर लगैत अछि जेना बाबूजी ठाढ़ छथि,हम हुनका गोर लागि रहल छी आ ओ हमरा आशीर्वादक वर्षा कए रहल छथि .. ।

26.5.2020

११

एहनो होइत छैक

हम अङनेमे रही कि एकटा अधबएसू गलामे कंठी पहिरने उतरबरिआ घरबैआक ओहिठाम दूध देबए आएल रहए । ओकरा हम पहिनो देखने रहिऐक । मुदा एहिबेर बहुत दिनक बाद आएल छल । आङनमे लोकसभ किछु -किछु फुसफुसाएल । ओकरा गेलाक बाद बात परिछबैत केओ कहलकैक-

“जहल काटि कए आबि गेलैक ।”

चौदह साल धरि आजीवन कारावास कटलाक बाद ओ गाम घुरि आएल छल । ओकरा संगे दूटा आओर जहल काटि रहल अपराधीसभ सेहो अपन घर घुरि आएल छल । तकर बाद तीनूगोटे अपन उजरल-उपटल दुनिआकेँ फेरसँ सोझ करबामे लागि गेल । समाजो आब ओकरासभकेँ स्वीकार कए लेलकैक । मालिकसभक खेतमे ओसभ बोनि करैत छल । एक टोलसँ दोसर टोल निर्वाध अबैत जाइत छल। समय लोकक मोनक घावकेँ भरि देने रहैक । जे फेर कहिओ घुरि नहि आएलि से आब लोककेँ बिसरा गेलि । लोककेँ इहो मोन नहि रहलैक जे ई तीनू निर्दयी कोना ओकरा गछारि कए कलममे एकसरि पाबि अत्याचार केने रहैक आ अपन जान बचाबए लेल ओकरा मारिओ देने रहैक । कोना ने लोक बिसरि जइतैक? ओ कोनो दिल्लीक समाज नहि छलैक जकरा टेलीवीजन फेर-फेर मोन पाड़ितैक । जतए बेर-बेर जुलूस निकलितैक । जतए न्यायालयमे न्यायक फरिआदीक पक्षमे हजारों

लोक ठाढ़ भए जइतैक । ई तँ एकटा छोटसन गामक बात छलैक। कहि नहि पहिनो एहन घटनासभ होइत रहल होइक आ लोक गबधी लादि देने रहल होअए ।

ई घटना कम सँ कम अड़तालीस वर्षक थिक । हमर गाम लगक टोलक एकटा युवती अपना घरसँ दू माइल फटकी दोसर टोलपर बैन पहुँचाबए गेल रहथि । रस्ताक बीचमे कलम पड़ैत छलैक । ओहिठाम तँ गाम-घरक लोकसभ घास काटए किंवा आन-आन काजे अबिते रहैत छल । ओहुना गामक लगीचेक बात रहैक । तेँ ओ युवती निधोख ओहीबाटे बैन पहुँचा कए वापस होइत रहए । कलममे दूटा छौंड़ाक ध्यान ओकरापर पड़लैक । ओहोसभ ओकरे टोलक रहैक । तेँ सामने आबि गेलाक बादो ओहि युवतीकेँ मोनमे कोनो अंदेशा नहि भेल होएतैक । मुदा ओकरासभक मोनमे तँ दुष्टता आबि गेल रहैक । ओ सभ ओकर रस्ता रोकलक । कहि नहि की-की कहलक ? अपना भरि ओ युवती बहुत विरोध केलकैक। खुरपी लए कए कैक बेर ओकरा सभपर आक्रमणो केलकैक । मुदा ताबे ओ अधबएसू सेहो कतहुसँ पहुँचि गेल । ओहो दुनूगोटेक संग भए गेल । युवती असगरि पड़ि गेलि । तीनूगोटे ओकरासंगे गलत काज केलक । ततबे नहि । कहाँदनि ओ तकर बाद अधबएसू कहलकैक-

“एना जँ एकरा वापस जाए देबही तँ ककरो जानो बँचतौक?”

“तखन की कएल जाए?”

“एकरा खतम कर । तखने बँचि सकैत छैं ।”

यौ बाबू! तीनूगोटे मिलि कए ओही खुरपीसँ ओकर नरेठी काटि देलक आ भागि गेल ।

जखन बहुत काल धरि ओ युवती घर वापस नहि गेल तँ ओकर माता-पिताकेँ चिंता भेलैक । सौंसे लालटेन लेने तकने फिरए। कतहुँ कोनो भाँज नहि लगैक । बैन तँ ओ सही समयपर पहुँचा देने छलि । तकर बाद वापसो चलि गेल छलि । तखन गेल कतए?

राति भरि ओकर माए-बाप आ गौंवासभ ओकरा तकैत रहि गेल । मुदा ओकर किछु पता नहि चलि सकल । भोरे अन्हरोखे किछु चरबाहसभ महीस चराबए निकलल । महीस चरबैत-चरबैत ओहिमे सँ केओ कलम दिस गेल कि एकटा महिलाक अर्धनग्न रक्तरंजित लास पड़ल देखि चिचिआ उठल । ओकरा चिचिआइत देखि आओर चरबाहसभ दौड़ल । देखिते-देखिते ई बात चारूकात पसरि गेल । केओ ई बात ओकर पिताकेँ सेहो कहलकैक । ओ किछुगोटेक संगे दौड़ल ओहिठाम आएल । बेटीक लास ओहि हालमे देखि ओ ठामहि बेहोस भए गेल । लग-पासमे ठाढ़ लोकसभ ओकरा हवा केलक,पानि पिओलक । होस अबितहि ओ भोकासी पाड़ि कए कानए लागल । एतबेमे ओकर माए सेहो दौड़ल आबि गेलैक । तकर बाद जे दृश्य उपस्थित भेल,जाहि तरहसँ ओ दुनू बेकती कन्ना-रोहटि केलक से ककरो हृदयकेँ विदीर्ण कए सकैत छल । सोचल जा सकैत अछि जे एकटा माता-पिताकेँ एहन परिस्थितिमे कतेक कष्ट भए सकैत छैक । ओहो तखन जखन हत्यारा तीनूगोटे ओकरसभक पूर्वपरिचित रहैक । ओ अधबएसू तँ मृत महिलाक पिताक घनिष्ट लोक छलैक । मुदा मनुक्ख जखन राक्षस भए जाइत अछि तखन आओर की उम्मीद कएल जा सकैत

अछि? थोड़बे कालमे पुलिस आएल । लग-पासमे रहैत लोकसभसँ भेल पूछताछक आधारपर तीनू दोषी व्यक्ति पकड़ल गेल । ओकरासभकेँ बच्चा झा जनता उच्च विद्यालय अड़ेरक दछिनबरिआ कोठलीमे बंद कए देल गेल । चारूकात लोकक करमान लागि गेल । गाम-गामसँ आबि कए लोकसभ अबैत रहल आ दोषीसभकेँ देखैत रहल । जकरा जे मोनमे अबैक से बजैत रहल। लासकेँ पुलिस मधुबनी लए गेल । तीनू अपराधीकेँ पुलिस पकड़ि कए बेनीपट्टी थाना लेने चलि गेल । क्रमशः लोकक भीड़ सेहो छटि गेल । मुदा मृत महिलाक माता-पिता बड़ीकाल धरि कनैत रहि गेल ।

“हे भगवान! एहन अन्याय किएक भेल?”

मृत महिलाक पिताकेँ हमसभ नेनेसँ जनैत छलिऐक । ओ हमर लालबाबा(बाबाक छोटभाए)क ओहिठाम काज करैत छल । उघारे देहे ,ठेहुन धरि धोती पहिरने ,कनी-कनी दाढ़ी बढ़ल माथमे आधासँ बेसी केस पाकल -इएह छल ओकर बगए । भोरे बरद लए खेतपर जाइत । दुपहरिआमे वापस भेलाक बाद केराक पातपर आङनक मुहथरिपर भोजन करैत । गमछामे बोनि बान्हैत आ अपन घर वापस चलि जाइत । बीचमे जलखै लए कए लालबाबा खेतपर जाइत छलाह । थाकल ठेहिआएल ओ जखन काज खतम कए दलानपर अबैत तँ सभसँ पहिने बरदसभकेँ पानि पिआबैत । ओकरासभकेँ खेबाक जोगार करैत । तकरबादे अपने भोजन करैत। हमसभ कतेको बेर ओकर कोरामे चढ़ल रही । एतेक परिश्रमक बादो ओ सदति प्रसन्न देखाइति छल । मुदा एहि दुर्घटनाक बाद ओ कहिओ हँसैत नहि देखाएल । काजपर जाएब तँ ओकर मजबूरी छलैक । मुदा ओकरामे ओ रोहानी फेर कहिओ

वापस नहि आएल । कतेको बेर ओकरा रहि-रहि कए बेटीकसंग भेल अत्याचारक कारण कनैत देखिऐक । अपराधीसभ पीड़िता आ ओकर परिवारकेँ जनैत छल । तखनो एहन काज कए गेल । संभवतः ओकरासभकेँ भेलैक जे जान-पहिचानक बात छैक । जँ ओकरा जीबैत छोड़ि देबैक तँ फँसि जाएब । अपनाकेँ बचाबक चक्करमे ओहि निर्दोष महिलाक ओ सभ हत्या कए देलक ।

आखिर मामिला न्यायालयमे गेल । तीनू दोषी साबित भेल आ सभकेँ आजीवन कारावासक दंड देल गेल । जहलमे रहितो ओ सभ कहिओ-कहिओ कारावकाशपर गाम अबैत छल । लोकसभ ओहिबातसभकेँ ताधरि बिसरि गेल छल ।

अपराधीमेसँ दूगोटे बहुत गरीब परिवारक छल । ओकरासभक मोछक पम्ह निकलिए रहल छल । भए सकैत अछि जे जबानीक जोसमे आबि गेल । मुदा ई अधबएसू? एकरा की कहबैक? चालीससँ बेसीए बएस रहल हेतैक । गलामे कंठी बन्हने छल । आर्थिक रूपसँ सेहो ठीक-ठाक छल । केओ सोचिओ नहि सकैत छल जे एहि तीनूगोटेमे सँ केओ एहन जघन्य अपराध कए बैसत । मुदा सभसँ बदमास साबित भेल ओ अधबएसू । कहाँ दनि ओएह दुनू युवककेँ कुकर्म केलाक बाद महिलाकेँ मारि देबाक हेतु प्रेरित केने छल । किछु नहि कहल जा सकैत अछि जे ककरा हाथे की कलंक भए जाएत? कम सँ कम एहि घटनाक बाद तँ सएह सोचाइत छल । कारण ओ सभ आपराधिक प्रवृत्तिक नहि छल । मात्र संयोगवश एहन कुचक्रमे फँसि गेल छल । जे छल मुदा काज तँ बहुत खराब कए गेल छल ।

ग्रामीण समाजमे अपने लोकसभ द्वारा संभवतः अनचोकेमे कएल गेल ई जघन्य अपराध हमरा भीतरसँ मर्माहत

कए देने रहए । ओकर किछुए दिनक बाद हमरसभक मैट्रिकक परीक्षा भेल रहए । परीक्षाक तैयारीक बीचमे रहि-रहि कए ओ बातसभ हमरा मोनमे प्रकट भए जाइत छल । मृत महिलाक पिताक आँखिसँ बहैत नोर कैकबेर हमरो आँखिकेँ द्रवित कए दैत छल । भए सकैत अछि जे जँ ओ कोनो सशक्त व्यक्ति रहैत तँ एहन घटना हेबे नहि करैत,ओ एसगरि पैरे बैन देबए दोसर टोलपर जेबे नहि करैत । मुदा ओ की जाने गेलैक जे आइ केओ ओकर गौंवा राक्षस बनल कलम लग ठाढ़ रहतैक । ओ तँ ओहिठाम निरंतर जाइते-अबैत रहैत छलि । ओकर नैहरक गाछ-बिरिछ,घास-पात सभ ओकर रखबार छलैक । ओकर अपन छलैक । तखनो केओ ओकरा बँचा नहि सकल । भए सकैत अछि जे जँ ई घटना दिल्लीसन महानगरमे भेल रहैत तँ ओकर पिताकेँ पर्याप्त मदति होइतैक,सरकारी आश्रय भेटितैक । मुदा ओ बात तँ एकटा सुदूर देहातमे भेल रहैक । के सुनैत,ककरा कहतैक? मृत महिलाक पिता ओहिना हरबाही करैत -करैत हृदयमे दारूण दुख सहैत एकदिन चुपचाप एहि दुनिआसँ चलि गेल । ओ तँ चलि गेल मुदा हमर मोनमे सभदिनक हेतु अथाह कष्ट भरि गेल । नेनामे ओकर सिनेहकेँ हम नहि बिसरि सकलहुँ ,ने बिसरि सकलहुँ ओकर दुखद अंतकेँ । मुदा ई समय थिक । कतए सँ कतए पहुँचि गेल । ओहि घटनाक लगभग पाँच दसक भए गेल । मुदा हमर मोन अखनो कखनो काल कए व्याकुल भए जाइत अछि । कहि उठैत अछि-एना नहि हेबाक चाहैत छल । बहुत गलत भेल ,आदि,आदि ।

एहने घटना दिल्लीमे सेहो घटल रहैक । लेडी हार्डींग मेडिकल कालेज नई दिल्लीक एकटा कर्मचारीपर अपने बहुत निकट संबंधीकेँ संगे वलात्कार करबाक जघन्य अपराधक आरोप

लागल रहैक । चौदह वर्षक आजीवन कारावास काटि ओ नहि आएल छल। ओ कोट-कचहरीमे तिकरिम कए जेना-तेना छुटि गेल छल । तकर बाद लेडी हार्डींग मेडिकल कालेज दिल्लीमे कर्मचारी युनिअनक समर्थनसँ फेरसँ काज करए आएल छल । नौकरीमे ओ फेरसँ बहालो भए गेल छल। मुदा ओहिठामक सजग समाज ,विद्यार्थी, अध्यापक सभ आंदोलन कए देलक । प्रशासनकेँ साफ-साफ कहि देलक जे जँ ई काज करत तँ हमसभ काज छोड़ि देब । कैकटा विभागमे ओकरा समायोजित करबाक प्रयास भेल मुदा सभठाम ओकरा खिलाफ ओएह अबाज ओहिना आंदोलन शुरु भए जाइक। हारि कए ओ प्रशासनमे कोनो ठाम खपाओल गेल । यद्यपि ओ कोर्ट-कचहरीसँ अपनाकेँ बचा लेलक मुदा समाज ओकरा माफ नहि केलकैक । ओहि समयमे हम ओतए उप निदेशक (प्रशासन)क काज देखैत रही । हमरा नीकसँ मोन अछि जे कालेज प्रशासनकेँ कतेक मोसकिल भेल रहैक । मुदा गामक समाजमे से संवेदनशीलता नहि देखाएल । आएल पानि गेल पानि बाटे बिलाएल पानि । जे भेलैक जकरा भेलैक । बात अएलैक,गेलैक आब तकर कोन हिसाब छैक? अपराधीकेँ कानून दंड देलकैक । ओ दंड भोगि कए बेस मोट-सोट भए कए अपन घर वापस भए गेल । आओर कएले की जएतैक?

किछुसाल पूर्व एकदिन भोरे अखबार पढ़ैत रही । एकटा आइएएस अधिकारीक बेटीकेँ मुम्बइमे ओकरे फ्लैटमे पैसि कए सोसाइटीक सुरक्षामे लागल गार्ड बलात्कारक बाद हत्या कए देबाक समाचार मुख्यपृष्ठेपर छपल छल । ओ बहुत प्रभावशाली व्यक्ति छलाह । बेटी उच्च शिक्षाप्राप्त केलाक बाद मुम्बइमे काज करैत छलखिन । एतेक अछैत ओकरा अकारण हत्या भए गेल । एकबेर

फेर हमर गामक घटना मोनमे नाचि गेल । की गाम की मुम्बई,की हरबाह की उच्च अधिकारी ,सभक बेटीक जान-माल असुरक्षित भेल अछि । लोक एहन पैशाचिक प्रवृत्तिक किएक भए गेल ? हम सोचए लगैत छी तँ सोचिते रहि जाइत छी - जे मनुक्ख एहनो होइत छैक।

8.7.2020

१२
ग्रामोफोन

कारी गोल चक्का घुमि रहल छल । ओकर बीचमे एकटा मुरुत सेहो घुमि रहल छल । कतहु केओ नहि देखा रहल छल । तथापि, एकटा बक्सासँ अबाज अबैत छल । गाना सुनाइत छल। ओहि समयमे एहिसँ बेसी अजगुत बातक कल्पनो नहि कएल जा सकैत छल । ओ छल ओहि समयक प्रमुख मनोरंजनक साधन- ग्रामोफोन । गाममे मोसकिलसँ दू-तीन गोटेकेँ से रहनि । गाममे कतहु सत्य नारायण भगवानक पूजा भेल,वा एहि तरहक कोनो आयोजन भेल तँ ओ बजाओल जाइत छल । नेनासभ बहुत उत्सुकतासँ ओकरा घेरने रहैत छल ।

हमसभ नेनामे कैकबेर ग्रामोफोनक रिकॉर्ड केँ घुमैत काल ओकर बीचमे नचैत चित्रकेँ देखि सोचिऐक जे इएह गाबि रहल छैक। कैकबेर होअए जे ग्रामोफोनक भीतर केओ नुकाएल अछि आ गाबि रहल अछि । कैकबेर ग्रामोफोनक बक्सा खोलि कए देखबो करिऐक मुदा किछु नहि देखाइत छल । तखन ई गाना के

गबैत अछि? ई अबाज कतएसँ आबि रहल छैक? एहि प्रश्नक उत्तर के दैत? गाममे तँ तखनो ग्रामोफोन दुर्लभ छल । कोनो विशेष अवसरपर बजाओल जाइत छल-जेना ककरो ओहिठाम जँ सत्य नारायण भगवानक पूजा होइत तँ लोकसभक आग्रहपर अमीर काकाकेँ खुसामद करैत । तखन ग्रामोफोन आनल जाइत । डेढ़ हाथक पेटी खुजैत । ओहिमे एकटा सुई गोलका चक्कामे लगाओल जाइत । हाथकेँ घुमा-घुमा कए ओहिमे हवा भरल जाइत ,ओकर स्प्रिंगकेँ तानल जाइत । ग्रामोफोनक बीचमे रिकॉर्ड केँ राखल जाइत। सभसँ अंतमे ओकर स्वीचकेँ घुसकाओल जाइत आ शुरु होइत संगीत । “बाह! की कमालक मसीन अछि” - लोक मोने-मोन सोचैत। बेसी काल रामायणक रिकॉर्ड लगाओल जाइत । कैकबेर नचैत-नचैत रिकॉर्ड ठाढ़ भए जाइत । अबाज खतम , गीत बंद भए जाइत । नेनासभ चारूकातसँ लुधकि जाइत । सभकेँ जिज्ञासा जे आखिर भेलैक की?

हमरा गाम(अड़ेर डीह टोल)मे स्वर्गीय घुरन बाबूक ओहिठाम सेहो ग्रामोफोन रहनि । ओ ग्रामोफोन बढ़िआँ छल । हुनकर पुत्र डाक्टर सच्चिदानंदजीक संगे हम ओहि ग्रामोफोन धरि कैकबेर पहुँचल रही । कहि नहि सकैत छी जे कतेक उत्सुकताक संग ग्रामोफोनक गीत सुनने रही । किछुदिनक बाद एकटा ग्रामोफोन हमर बाबूजी सेहो लेलाह । मुदा ओ ग्रामोफोन स्थानीय मिस्त्री बनओने रहए । कखनहुँ चलैक आ कखनो बैसि जाइक । ओहिमे एकटा भोपू लागल रहैक जाहि बाटे अबाज बाहर होइक। एकबेर किछु टाका जेना-तेना ओरिआन कए हम बिंदूकाकाक संगे मधुबनी जा कए ग्रामोफोनक रिकॉर्ड किनने रही । किशोरीलाल चौक मधुबनीसँ सटले ओ दोकान रहैक। ओ ससुराल फिल्मक

गाना रहैक । एकदिस -तेरी प्यारी-प्यारी सुरत को किसी की नजर न लगे......दोसर दिस रहैक-अपने उल्फत पे जमाने का नजर ना होता तो कितना अच्छा होता.............

नेनामे कोनो बातक जिज्ञासा बहुत होइत छैक । ग्रामोफोनसँ निकलैत अबाज कतएसँ अबैत अछि? ई जानबाक इच्छा प्रबल रहैत छल । केओ कहितए जे ग्रामोफोनक भीतर एकटा बुढ़िआ रहैत छैक । ओएह गबैत छैक,केओ किछु । हम ग्रामोफोनकेँ खोलि-खोलि ओकर पाट-पाटमे ओहि गबैयाकेँ तकैत रहैत छलहुँ । मुदा कतहु किछु कहिओ नहि देखाएल ,उल्टे कैकबेर मसीन खराब भए गेल। कैकबेर ग्रामोफोनक भोपूमे मुरी पैसा कए देखैत रही मुदा जेहो अबाज अबैत छल सेहो क्रमश; बंद भए जाइत छल । अस्तु,ग्रामोफोन एकटा रहस्य बनल छल । मुदा केओ ई नहि बूझा सकल जे आखिर ई कोना काज करैत अछि आ एहिमे सँ निकलि रहल अबाजक पाछू कोन विज्ञान छैक?

ग्रामोफोनक ओएह रुप-रेखा हम बहुत दिनक बाद देखलिऐक दिल्लीक कनाट प्लेसमे । हमुमान मंदिरसँ दर्शन कए बाहर भेल रही । काफीहोमक नीचाँबला परिसरमे कोनपर ग्रामोफोन राखल छल । ओएह छवि,ओहने छटा जेहन हम नेनामे अपन गाममे देखने रहिऐक । ओकर आकार कनेक पैघ जरूर छलैक । बड़ीकाल धरि हम ओकरा देखिते रहि गेलहुँ । फेर मोबाइलसँ ओकर फोटो खिचलहुँ। पता लागल जे ओ सौकिआ ओतए राखल छैक ,बिकेतैक नहि । जँ बिकेबो करितैक तँ आब केओ सजाबटेक हेतु लेत ,ओहिसँ आओर काज तँ करत नहि । कारण आब तँ एक सँ एक यंत्र आबि गेल अछि ।

आइ-काल्हि गाना-बजानाक साधनक कमी नहि अछि । नान्हिटा रेडिओसँ,मोबाइलसँ हजारों गाना बजाओल जा सकैत अछि । दूरदर्शनकक तरह-तरहक प्रकारसँ बजार भरल अछि । से जे होउक मुदा ग्रामोफोन संगीतक दुनिआक इतिहासक अभिन्न अंग रहल अछि आ ताहि बातकेँ बिसरलो नहि जा सकैत अछि ।

30.5.2020

१३

इसकूलिआ संगी श्रीनारायणजी

एकदिन साँझमे हम टहलैत गामसँ पूब चलि गेल रही । बेसिक इसकूलक लगीचमे सड़कक कातमे बैसल रही कि फटकिएसँ ककरो साइकिलपर गेरुआ वस्त्र पहिरने मधुबनी दिससँ अबैत देखलिऐक । जौं-जौं ओ लगीच अबैत गेल तँ स्पष्ट होइत गेल जे ओ केओ आओर नहि हमर इसकूलिआ संगी श्रीनारायणजी छथि । हम तँ हुनका देखिते रहि गेलहुँ। आखिर ई भेलैक केना? थोड़बे दिन पहिने तँ हुनकर बिआहक समाचार भेटल रहए । तकर बाद एकदम बदलल परिधान- गेरुआ वस्त्र,पैघ-पैघ केस । बहुत आश्चर्यपूर्वक हम हुनका दिस बढ़लहुँ । ओहो सइकिलसँ उतरलाह-

“औ रबीन्द्रजी! की हाल-चाल?”

ततेक उत्सुकता भेल छल जे होअए जे की पुछिअनि,की नहि । मुदा साँझ पड़ैत रहैक । हुनको गाम जेबाक रहनि। तेँ ओ किछुकालक बाद हमरासँ बिदा लैत साइकिलपर चढ़ि गाम दिस बढ़ि गेलाह । बहुतरास जिज्ञासा मोनेमे रहि गेल । बुझबे नहि

करिऐक जे एना गेरुआ वस्त्र ओ कहिआसँ पहिरए लगलाह । असलमे ओ ओशोसँ दीक्षा लए लेने छलाह ।”

हम ई कहिओ नहि सोचने रही जे नित्यप्रति जिनका संगे इसकूलमे एकहि बेंचपर पढ़ैत रहलहुँ,बादमे मधुबनी कालेजोमे संगे रहलहुँ से गेरुआवस्त्रधारी सन्यासी भए जेताह । संन्यासिओ केहन? जे रहताह घरेमे,धिआ-पुताक पालन-पोषण सेहो करताह,घरबाली सेहो संगे रहथिन आ भजन-कीर्तन सेहो चलैत रहत । मुदा सएह भेलैक। ओहि समयमे आचार्य रजनीशक हवा बहल रहैक । रेडिओसँ नित्य हुनकर प्रवचन प्रसारित होइत छल । हुनकर किताबसभ खूब पढ़ल जाइत छल । युवकसभकेँ हुनकर विचार बहुत नीक लगलैक । बहुत रास लोक रजनीशक चेला भए गेलाह।

ओही समयमे हमर दूटा इसकूलिआ संगी सेहो हुनकर पकिआ चेला भेल रहथि । एकटा फेकनजी(स्वामी आनंद वैराग्य) आ श्री नारायणजी मुदा दुनूगोटेक जीवन व्यवस्थामे बहुत अंतर छल । श्रीनारायणजी आचार्य रजनीशक किछु बहुत नीक तत्वकेँ ग्रहण करबामे सफल रहलाह । जाहिमे हमरा हिसाबे प्रमुख छल-ध्यान। अपने संगे पूरा परिवारकेँ ध्यान करबाक कलामे पारंगत कए देलाह जकर बहुत नीक परिणाम हुनका लोकनिक भविष्यपर पड़ल। हुनकर दुनू पुत्र(आलोक आ आशीष) बहुत प्रतिभाशाली भेलाह । कला आ संगीतक संग इसकूलिआ पढ़ाइमे नाम कए गेलाह। आशीष तँ ततेक पढ़लाह जकर वर्णन करब मोसकिल । आइआइटीसँ इंजिनीयरिंग केलाक बाद अमेरिकामे छात्रवृत्ति भेटि गेलनि आ ओतहिसँ पीएचडी,आ तकर बादो कतेको तरहक उच्च

शिक्षा लेलाक बाद ओतहि वैज्ञानिक भए गेलाह । तहिना आलोक सेहो इसरोमे वैज्ञानिक भए गेलाह ।

सभसँ पहिने हुनकासँ भेंट भेल छल ९जनवरी १९६३मे जखन ओ अपन काकाक संगे उच्च विद्यालय एकतारामे नाम लिखाबक हेतु आएल रहथि आ हमहूँ अपन बाबूजीक संगे ओही लेल गेल रही । इसकूलक ओसारापर बेंचपर इसकूलक किरानी बूचन बाबू लिखा-पढ़ी करैत छलाह आ हमर बाबूजी आ हुनकर काका हुनका लग बेंचपर बैसल रहथि । हमसभ हुनकासभक पाछा ठाढ़ रही । तकर बाद चारि वर्ष (आठमासँ एगारहमा धरि)हमसभ ओहि इसकूलमे पढ़लहुँ । क्रमशः इसकूलक आओर विद्यार्थीसभसँ परिचय होइत गेल ।

ओहि घटनाक पचास साल भए गेल होएत । मुदा श्रीनारायणजीसँ कखनो भेंट होएत तँ ओहिना आकर्षक मुद्रामे स्वागत करैत भेटताह । ई कोनो कम आश्चर्यक बात नहि जे हुनकासँ ५७ वर्षसँ लगातार ओहिना मधुर संबंध बनल अछि ।

एकतारा इसकूलमे लगपासक गामक बहुत रास विद्यार्थीसभ पढ़ैत छलाह ,जेना नवकरही,करही,परजुआरि,चंपा,नवटोली,कुशमौल,जमुआरी । किछु विद्यार्थी बेलौजा,सिनुआरा,विष्णुपुरसँ सेहो ओतए पढ़बाक हेतु अबैत छलाह । एकतारा,विचखानाक तँ बहुत रास विद्यार्थी छलाह । कुलमिला कए देहातक ओ बढ़िआँ इसकूलमेसँ मानल जाइत छल । नवकरहीक नारायणजी,विजयजी,एकताराक फेकनजी, नगवासक श्रीनारायणजी किछु एहन विद्यार्थीसभ छलाह जे अखनो स्मृतिमे ओहिना बैसल छथि जेना पचास साल पूर्व रहल हेताह ।

ओहिदिन नाम लिखेलाक बाद बाबूजीक संगे हम गाम वापस अएलहुँ। ओही रातिमे लालबाबा(हमर बाबाक सहोदर छोट भाए स्वर्गीय जनार्दन मिश्र)क देहांत भए गेलनि । जखन हम इसकूलसँ वापस अएलहुँ तँ उतरबरिआ ओसारापर कैकटा महिलासभ लालबाबीक संगे कनैत छलीह । केओ-केओ बजैत छलैक जे लालबाबाक हाल बहुत खराब छनि । हमरा लगैत अछि जे रातिक नओ बजे बड़ी जोरसँ कन्ना रोहटि शुरु भेल । लालबाबा चलि गेल रहथि -दूर-बहुत दूर जतएसँ आइधरि केओ वापस नहि आएल । हमर संगे लालबाबाक दोसर पुत्र विन्ध्यनाथ मिश्र सेहो आठमामे नाम लेखओने रहथि । लालबाबाक देहांत आ हमर एकतारा इसकूलमे नाम लिखेबाक घटना एकहि संगे एकहि दिन भेल रहए आ जखन-तखन दुनू घटना हमरा मोनमे अखनो एकहि संगे उभरि जाइत अछि ।

लालबाबाकेँ क्षय रोग रहनि । बहुतदिनसँ ओ ओछाओन धेने रहथि । देहमे हड्डिएटा बाँचल रहनि । कैकदिन हुनका आङनमे रौदमे पटिआपर पड़ल देखिअनि । टीवी पटएबला बिमारी रहैक । तथापि, हमसभ हुनका लग-पासमे ओहिना अबैत जाइत रहैत छलहुँ । लालबाबा चलि गेलाह । तकरबाद ध्रुब काका(हुनकर ज्येष्ठ संतानक बिआह भेलनि । हुनका सासुरमे एभोन साइकिल देने रहनि । विन्ध्यनाथजी ओही साइकिलसँ एकतारा इसकूल जाए लगलाह । हम पएरे जाइ । एमहरसँ विंध्यनाथजीक साइकिल पाछूसँ कृष्ण कुमार बाबू(बेलौजा ग्रामक हमरसभक शिक्षक)क टीटों करैत साइकिल अबैत छल तँ सामनेसँ श्रीनारायणजीक काकाक साइकिलक बसुरिआ अबाज सुनाइत छल । ई दुनू साइकिल हमरासभक इसकूलक रस्तामे कतहु- ने- कतहु जरूर

टकराइत आ ओहीसँ हमसभ अंदाज लगाबी जे इसकूल सही समयपर जा रहल छी कि नहि ।

उच्च विद्यालय एकतारा देहातक इसकूल छल । ओहिमे पढ़ाइ-लिखाइक अतिरिक्त अन्य गतिविधिक बेसी माहौल नहि रहैक । ताहि माहौलमे किछु प्रतिभाशाली विद्यार्थीसभ बहुत नीक पढ़ाइ केलाह आ आगा जीवनमे सेहो नीकसँ स्थापित भए सकलाह तँ एकटा चमत्कारे कहबाक चाही ।

सामान्यतः एकटा बेंचपर चारिटा विद्यार्थी बैसैत छल । हम,नारायणजी,श्रीनारायणजी,विजयजी, सामान्यतः अगिला बेंचपर बैसैत छलहुँ । हमरा लोकनि नीक विद्यार्थी मानल जाइत छलहुँ । एकर सकारात्मक प्रभाव हमरा लोकनिक व्यक्तित्वपर सेहो पड़ब स्वाभाविक छल । मैट्रिकक परीक्षाक परिणाम आएल तँ एकतारा इसकूलक परिणाम नहि बाहर भेल छल । किछु तकनीकी समस्या भए गेल रहैक । एकाध मास बादमे जखन परिणाम बाहर भेल तँ चारिटा विद्यार्थीकेँ प्रथम श्रेणी भेल रहैक । हम,नारायणजी,श्रीनारायण आ विजयजी । परिणाम देरीसँ बाहर हेबाक कारणे नीक कालेजसभमे नामांकन बंद भए गेल रहैक । परिणामतः हम चारूगोटे आर.के.कालेज मधुबनीमे प्री-साइंसमे नाम लिखओलहुँ । आर.के .कालेज मधुबनी इलाकाक पुरान कालेज मानल जाइत छल । ओहि समयमे स्वर्गीय ए.के.घटक कालेजक कार्यकारी प्राचार्य छलाह ।

आर्थिक उपार्जन हेतु श्रीनारायणजी फेकनजीक संगे मिलि कए टाइपिंग आ शार्टहैंड कोचिंग इसकूल चलबैत छलाह । ओहिमे निरंतर विद्यार्थीसभक भीड़ रहैत छल । कालक्रममे ओ ओकर पूरा मालिक भए गेलाह । किछुदिन ओ ज्योतिषक काज सेहो केलनि।

हुनकासँ टिपनि बनेबाक हेतु लोकसभ पाँति लगओने रहैत छल । प्रशंसाक बात ई थिक जे एही आमदनीसभसँ ओ अपन दुनू संतानकेँ बिना कोनो प्रकारक ऋण लेने बहुत नीक शिक्षा देबामे सफल रहलाह । आब तँ हुनकर घर जाएब तँ देखिते रहि जाएब। साइते मधुबनी शहरमे ककरो घर एतेक सजल-धजल हेतैक । ऊपर दूमहला बनि गेल अछि । घरमे एक-एक चीज बहुत व्यवस्थासँ राखल भेटत । सभसँ बेसी आकर्षित करैत अछि ओहिठामक शांति। हम कैकबेर जहन थाकि जाइ तँ हुनका ओहिठाम चलि जाइत छलहुँ आ थोड़बे कालमे सभटा थकान खतम भए जाइत । श्रीनारायणजी ओशोक कोनो प्रवचनबला टेप चला दितथि । किछुकाल धरि हमसभ ओकरा सुनितहुँ । फेर श्रीनारायणजी ओहिपर अपन मंतव्य दितथि। एहि तरहें बहुत नीकसँ समय कटि जाइत छल ।

श्रीनारायणजी अपन बाबासँ मंत्र लेने छलाह । कहक माने जे ओ हुनकर प्रथम गुरु रहथिन । बाबासँ हुनका शिक्षा भेटलनि जे कहिओ ऋण नहि ली । ताहिबातक ओ अंतधरि पालन करैत रहलाह । मधुबनी वाल्मिकी नगर(नीलम टाकीजसँ आगू) हुनकर घर छल । ओहि घरकेँ कतेको किस्तमे बनैत हम देखने छी । मुदा हुनका जखन जतबे आमदनी भेलनि ततबे काज करबैत गेलाह । तहिना नेनासभहक पढ़ाइमे सेहो ओ बैंकोसँ ऋण नहि लेलाह ।

श्रीनारायणजीक संग हमर परिचय सन् १९६३मे भेल छल। ५७ वर्ष बीति गेल । हुनकासँ ओहिना संबंध बनल अछि जेना इसकूलक समयमे छल । मधुबनी जेबाक एकटा प्रमुख आकर्षण श्रीनारायणजी रहैत छथि । हम सन्१९८८मे मधुबनीमे मकान बनेनाइ प्रारंभ केलहुँ । ओहि काजमे श्री नारायणजी निरंतर

सहयोग करैत रहलाह । मिस्त्री तकनाइ.सामान किननाइ,मकान बनि गेलाक बाद ओकरा भारा लगेनाइ आ तकर बाद भारा वसूल केनाइ सभ काजमे ओ सहयोगी रहलाह । ततबे नहि जखन भेल जे ओ मकान बेचल जाएत तँ ताहुमे ओ सहयोग करबाक हेतु तत्पर रहथि । मुदा संयोग एहन भेलैक जे मकान एकहि दिनमे बिका गेल आ हुनका ओकर रजिष्ट्री भेलाक बादे हुनका सूचना दए सकलिअनि । मधुबनी मकानक किरायेदार जखन तेरह वर्ष रहलाक बाद मकान खाली केलाह तखन श्रीनारायणेजी ओहिमे आठटा तालाक जोगार कए ओकर सभटा केबारकेँ बंद केलथि । मकान निर्माणक काज जखन शुरु भेल रहए तँ सुखिआ,दुखिआ मिस्त्रीकेँ ओएह ताकि कए देने रहथि । बिना कोनो स्वार्थकेँ एतेक दिनधरि ओ मकानक काजमे सहयोग करैत रहलाह। एहन उदाहरण भेटब बहुत मोसकिल । आखिर, ओ मकान बिका गेल मुदा जाधरि ओ रहल ओहिमे किछु-ने-किछु काज चलिते रहल आ ताहिमे श्रीनारायणजी मदति करिते रहलाह।

श्रीनारायणजीक छोटपुत्र आशीष पीएचडी करबाक हेतु अमेरिका जाइत रहथि । श्रीनारायणजी सपरिवार रामकृष्णपुरमके हमर सरकारी आवासपर ठहरल रहथि । यात्राक दिन आबि गेल छल । हमसभगोटे हवाइ अड्डा बिदा भेलहुँ । श्रीनारायणजीक श्रीमतीजी उदास रहथि । एतेक सुयोग्य पुत्र एतेक दूर जा रहल छलखिन । मुदा हर्षक बात रहैक जे हुनका विश्वविद्यालयसँ छात्रवृत्ति भेटल रहनि । अपना दिससँ किछु खर्च नहि करबाक रहनि । एहन अवसर भेटलापर केओ गर्व कए सकैत अछि , से भाग्य हुनका सभकेँ उपस्थित कए देने रहनि । तखन अपनलोकक वियोगसँ दुख तँ स्वभाविके थिक । चेक-इन केलाक बाद एकबेर

फेर ओ फटकिएसँ प्रणाम करए आएल रहथिन । श्रीनारायणजीक श्रीमतीजीक आँखिसँ नोर झहरि रहल छल । कनी कालक हेतु तँ हमरो मोन दुखी भए गेल । मुदा हुनका लोकनिक एही त्यागक फल भेल जे ओ अमेरिका गेलाक बाद पीएचडी तँ केबे केलाह ,तकर बाद सेहो आगू पोस्टपीएचडीक पढ़ाइ केलाह आ ओतहि बहुत नीक प्रतिष्ठानमे वैज्ञानिकक काज आब कए रहल छथि । आशीषक अमेरिका जेबाक ओ दृश्य अखनहुँ हमरा ओहिना मोन पड़ैत रहैत अछि,जेना काल्हिए घटल होइक ।

हमरा हिसाबे श्रीनारायणजीक एहि उपलब्धिक पाछा हुनकर माता-पिताक आशीर्वाद बहुत काज केलक । ओ दुनू व्यक्ति संपूर्ण शक्तिसँ अपन माता-पिताक सालों सेवा करैत रहलाह । एहि मामिलामे एहन उदाहरण साइते भेटत । कारण सामान्यतः जँ बेटाकेँ इच्छा रहितो छैक तँ पुतहु संग नहि दए पबैत छथिन माता-पिताक सेवा नहि भए पबैत अछि । मुदा श्रीनारायणजीक श्रीमतीजी प्रशंसाक पात्र छथि । ओ निरंतर श्रीनारायणजीक संग पुरलथि आ सेहो बहुत सहर्ष । जखन कखनहुँ हम श्रीनारायणजीक डेरापर गेलहुँ हुनकर परिवारमे अद्भुत समन्वय आ शांति देखलहुँ । दुनू व्यक्तिमे एहन तालमेल तँ डिबिआ लए कए ताकब तखनो भेटत की नहि । श्रीनारायणजीक श्रीमतीजी पाक कलामे अद्वितीय छथि । बारीक साग,बारीक नेबो,बारीक सजमनि सभ किछु मौलिक आ टटका, होइत जे खाइते रहि जाइ ।

श्रीनारायणजी घरक पाछूक बारीमे तरह-तरहक फल,तरकारी सभ उपजबैत छथि । काते-काते कैक तरहक फूलक गाछसभ । सामनेमे ओशोक ध्यान आश्रम अछि जाहिमे भोर-साँझ ओशोक भक्त लोकनि ध्यान-पूजा करैत छथि । एकाधबेर हमरो

ओतए रहबाक मौका भेटल छल । अत्यंत आकर्षक ध्वनिपर शांतिपूर्ण वातावरणमे भक्तलोकनि ध्यान करैत छथि आ अंतमे प्रसाद लए अपन-अपन घर चलि जाइत छथि । एहिसभ तरहक गतिविधिमे श्रीनारायणजी भोरसँ साँझ धरि ततेक व्यस्त रहैत छथि जे हुनका आओर कोनो चीजक वा आन ककरो कोनो प्रयोजन साइते रहैत होनि ।

श्रीनारायणजी सपरिवार अनेको बेर अमेरिकाक यात्रा कए चुकल छथि । ओहिठामक कोन-कोन घुमि चुकल छथि । एहूसाल ओ छ मास ओतहि छलाह । जेबा काल कहने रहथि जे वापसीमे हमरासभसँ भेंट करिते जेताह । ओ दिल्ली अएबो केलाह । मुदा कोरोनाक प्रकोप ताबे पसरि गेल छल । भेंट तँ नहि भए सकल मुदा फोनपर गप्प-सप्प भेल । मधुबनी वापस पहुँचलाक बादो हुनकासँ लगातार गप्प भइए रहल अछि । चिंता रहए जे अमेरिकासँ लौटलाक बाद कहीं कोरोना तंग ने करनि मुदा ओ पूर्ण ठीक छथि।

श्रीनारायणजीमे खूबी अछि जे जखन जतहि रहैत छथि ओतहि संपूर्ण रूपसँ समर्पित भए जाइत छथि । ओ बेर-बेर इएह कहैत हैत छथि-“”Let us live moment to moment .” एहि कथनकेँ ओ अपन जीवनमे पूर्णतः अंगीकार केने छथि । एहि प्रकारें एकटा सहज सरल जीवन जीबैत ओ सभतरहें उत्कृष्टताकेँ प्राप्त कए समाजमे सभक हेतु प्रेरणा पात्र भए गेल छथि । एहन विनम्र आ संस्कारी व्यक्ति सहीमे एहि संसारमे बहुत कमे होइत छथि । प्रसन्नताक बात जे ओ हमरासभक बीचमे छथि आ निरंतर आनंदित केने रहैत छथि । अपन व्यवहारसँ ओ सन्यासी रहितहुँ सफल गृहस्थ साबित करबामे सफल रहलाह ।

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः।

लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा।।5.10।।

(जे सभ कर्म ब्रह्ममे अर्पण कए आसक्तिक त्याग करैत छथि ओ कमलक पात सन (जे पानिमे रहितहुँ पानिसँ फराक रहैत अछि) पापसँ लिप्त नहि होइत छथि ।)

गीताक उपरोक्त श्लोककेँ जीवंत उदाहरण छथि श्रीनारायणजी । एहन आत्मसंतुष्ट लोक आइ -काल्हिक समयमे भेटब बहुत मोसकिल अछि । कोनो विषयपर हुनकर विचार एकदम निस्सन आ स्पष्ट रहैत अछि । हम एहि बातसँ गौरवान्वित छी जे नियतिवश एतेक दीर्घ अवधि धरि हुनकर निकटताक आनंद उठेबाक सौभाग्य हमरा भेटल आ भेटिए रहल अछि ।

७.६.२०२०

१४

माधवी नानी

हम नेना रही । कैकबेर दलानपर बैसल रहितहुँ कि हुनका किछु-किछु बड़बड़ाइत देखितिअनि । कैकबेर ओ किछु-किछु हमरो कहबाक प्रयास करितथि । मुदा हम नहि बूझि पबिऐक जे बात की छैक ? कैकबेर भगवती लग पूजा करैत काल सेहो हुनका भनभनाइत देखिअनि । मुदा बात नहि फरिछाए । माएकेँ हुनकासँ बहुत लगाव रहनि । ओ हुनकासँ बहुत आदरपूर्वक गप्प करितथि। बादमे माए हुनकेसँ मंत्रो लेलथि । हुनका लेल माएकेँ जे पार लागनि से ओ करबो करितथि । मुदा हुनकर दुख तँ भितरि आ रहनि। तकर निवारण के करैत ?

कृषकाय,उज्जर धोतीमे लपटल हाथमे छोटसन लोटा लेने भोरे-भोर ओ कुट्टीपर स्नान करबाक हेतु जाइत छलीह । नवका पोखरि बनि गेलाक बाद हमरासभक परिवारक अधिकांश लोक स्नान,पूजाक हेतु ओतहि जाथि । मुदा माधवीनानी सभदिन कुट्टिएपर जाइत रहलीह । माघक जाड़ होइक वा भदवारिक पानि हुनका लोकनिक स्नान-पूजाक समयमे कोनो परिवर्तन नहि होइत छल । हुनका संगे हुनके बएसक दू-तीनटा आओर महिला स्नान करबाक हेतु कुट्टीपर जाइत छलि । स्नान-पूजा केलाक बाद ओ सभ तीन-चारि गोटे संगहि लौटथि तँ कैकबेर रस्तेमे भेंट भए जाइत छल । कारण हमहूँ नवका पोखरिपरसँ स्नान कए ओही समयमे वापस अबैत रहैत छलहुँ । कुट्टीपरसँ स्नान-पूजा केलाक बाद ओ हमर बिचला घरमे स्थापित भगवतीक पूजा करैत छलीह । तकरबादे ओ उतरबारिकात बनल अपन घर जाइत छलीह । आश्चर्य आ दुखक बाद थिक जे ओ घर हुनकर अपन घराड़ीपर नहि बनल छल ।

नित्य अन्हरोखे कुट्टीपर भगवानक आरती होइत छल ।घड़ी-घंटा बजैत छल । ताधरि सूर्योदय नहि भेल रहैत छल । सोचल जा सकैत अछि जे ओ सभ कतेक भोरे स्नानक हेतु कुट्टीपर पहुँचि जाइत छलि । कुट्टीपरहक बाबा ओहिठामक व्यवस्था चाक-चौबंद रखने छलाह । ओतए बहुत रास गाएसभक सेवा होइत छल आ तकर दूधसँ पाएस बनैत छल । प्रसादमे ओहि पाएसकेँ कनी-कनी कए लोकसभकेँ देल जाइत । ततेक स्वादिष्ट रहैत छल जे होइत जे खाइते रही । मुँहमे जाइते बिला जाइत छल । ओ बाबा बहुत दिनधरि कुट्टीपर रहलाह आ एकदिन रातिएमे कुट्टीक बहुत रास समानसभ बैलगाड़ीपर लादि चुपचाप चलि जाइत

रहलाह । लोकसभ कहलक जे नेपाल दिस हुनकर भाए बाबाजी रहथिन,ओतहि चलि गेलाह । कुट्टी खाली भए गेल । मुदा माधवीनानी आ हुनकर संगीसभक स्नान चलिते रहलनि ।

माधवीनानीक पति हमर बाबाक सहोदर भाए रहथि । हमर बाबा(स्वर्गीय श्री शरण मिश्र) छओ भाए रहथि । ओहिमेसँ एकटा माधवीनानीक पति सेहो रहथि । बिआहक बाद मात्र एकटा बेटीक जन्मक बाद ओ असमयेमे मरि गेल रहथि । ओहि समयमे अंग्रेजक बनाओल कानूनक अनुसार विधवाकेँ मात्र खोरिसक अधिकार छलैक । आओर किछु नहि। तेँ हुनकर ई हाल छल । एतेक संपन्न परिवारक पुतहु होइतहुँ ओ अत्यंत कष्टमे जीवन-यापन करैत छलीह । अपने लोकसभ कानूनक फएदा उठबैत हुनका किछु नहि देलखिन । नेनामे सुनिऐक जे एकबेर ओ मोकदमा सेहो केलथि मुदा हारि गेलीह । ओहिसमयमे कानूने तेहने रहैक ।

पुस्तैनी संपत्तिमे हिस्सा नहि भेटबाक कारण हुनका हाकरोस करैत देखिअनि । हमरा नीकसँ मोन अछि जे पारिवारिक संपत्तिमे हिस्सा नहि भेटबाक कारण ओ कतेक बेकल रहैत छलीह। रहि-रहि कए कानए लगितथि। कहितथि-भगवान हमरा संगे तँ अन्याय केबे केलाह,घरोक लोक बहुत जुलुम केलक। हमर घरबलाक हिस्सा पचा गेल ।

माधवीक माएक पोखरौनी बिआह भेल रहनि । हुनका सेहो मात्र एकटा संतान माधवी भेलखिन। माधवी अपन नानीकसंगे रहथि । संभवतः हुनकर माएक देहांत कमे बएसमे भए गेल रहनि (हम हुनका कहिओ नहि देखने रहिअनि) ।माधवी नानी नामसँ ओ जानल जाइत रहलथि । हुनकर नैहर बेतिआ रहनि । बहुत उच्च कुल-शीलक छलनि हुनकर नैहर । तेँ एतेक संपन्न

परिवारमे हुनकर बिआह भेल छल । मुदा भाग्य दहिन नहि रहलनि। पतिक अकाल मृत्युक संगहि जीवनक समस्त सुख चलि गेलनि ।

माधवीक पति फौजमे रहथि । फौजमे पदस्थापनक दौरान ओ एकटा रेडिओ अनने रहथि । ऐहि समयमे रेडिओ ककरो-ककरो होइत छलैक । हमरे आङनमे उतरबारिकातसँ लालबाबाक घरक एक हिस्सामे ओ रहथि । ओकरे ओसारापर रेडिओ राखल जाइत छल । ओहिमे तरह-तरहक गीत-नाद सुनि लोक बहुत प्रभावित होइत । अफसोचक बात छैक जे माधवीनानी केँ घराड़ीओ नहि देल गेल रहनि । बहुतदिनक बाद जखन हुनकर नतिन जमाए (ठाकुरजी) जखन फौजसँ सेवानिवृत्त भेलाह तँ गामक उतरबारि कात कलमसँ सटले ओ घराड़ीक जमीन किनलनि। ओतहि घर बनओलनि । तकरबाद माधवी नानी सेहो ओतहि रहए लगलीह । कहि नहि हुनकर बएस कतेक रहनि। हमरा जनैत अस्सी सालसँ कम तँ नहिए रहल हेतनि । आधा देह झुकि कए जमीनक समानांतर भए गेल रहनि। तेहनो हालमे गुड़कैत-गुड़कैत ओ हमरासभक आङन आबि जाइत छलीह ,कुट्टीपर स्नान करबाक हेतु चलि जाइत छलीह ।

हमर माए माधवीनानीसँ मंत्र लेने छलखिन । गुरु हेबाक कारण माए हुनका बहुत आदर करैत छलि । जखन अलग घराड़ीपर ओसभ अपन घर बना लेलनि तखनो माएक आवागमन बनल रहलनि । एकदिन ओतहि माधवीनानीक देहावसान भए गेलनि । बाबूजी हुनका आगि देलखिन । तकरबाद श्राद्धक समस्या भेल। माएक इच्छा रहैक जे हुनकर श्राद्धक ब्राह्मण भोजन आ अन्य विधि-विधान ओही घराड़ीपर होमए जतए ओ रहैत छलीह । मुदा

एकटा फरिकेन ताहि हेतु राजी नहि भेलथि । ओ अलगसँ अपने दरबाजापर ब्राह्मण भोजन करओलनि । आओरगोटे हुनकर अपन घराड़ीएपर श्राद्धक व्यवस्था केलनि । एहि संबंधमे किछुदिन जबरदस्त घोल-फचक्का भेल रहए । आपसी बैसार सेहो भेल । मुदा सहमति नहि बनि सकल । असलमे मरलाक बादो हुनकर स्वतंत्र आस्तित्वकेँ मानबाक हेतु किछुगोटे मानसिक रूपसँ तैयार नहि रहथि जखन कि आब ओहिमे कोनो खतरा नहि छलैक । ओ मरि चुकल रहथि । तखन हिस्सा लेबए थोड़े अबितथिन ।

माधवीनानीक नाम केओ नहि जनैत अछि । भरि जिनगी ओ माधवीनानीक रूपमे जानल गेलीह । हुनका एकटा बेटी भेलनि । तकरो कोनो पहिचान नहि भेलैक ,मुदा माधवीकेँ दूटा बेटा भेलनि । हमरा गाममे ओ सभ कतेको डीहीसँ बढ़िआँ स्थितिमे छथि आ अपन नानीक स्मृतिकेँ बचओने छथि ।

माधवीनानीक मरला ३७ साल भए गेल । कानूनक आरिमे हुनका संगे बहुत अन्याय भेल । हुनके कोन,ओहि समयमे जतेक विधवासभ होइत छलीह तिनकर सएह गति होइत छलनि । मुदा आबे की हाल बदलि गेल अछि ? एहि बीचमे हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियममे कतेको संशोधन भेल अछि । कानूनीरूपसँ पैत्रिक संपत्तिमे बेटा-बेटीकेँ बराबरक हक भए गेल अछि । मुदा व्यवहारमे अखनो हाल बहुत नहि बदलल अछि । यद्यपि किछु गोटे अपन हक हेतु कोट-कचहरी धरि जा रहल छथि मुदा सामान्यतः अखनो बेटीक दोला जँ उठि गेल तँ ओ वापस नैहर नहि आएत ,सासुरेमे स्वाहा भए जाएत-क सिद्धांतपर समाज ठाढ़ अछि। केओ-केओ अपवादोमे गनल जा सकैत छथि । मुदा अपवाद तँ अपवादे थिक । अपवादिक मामिलाकेँ छोड़िकए

बेटीसभक हाथ अखनहुँ फोकले अबैत अछि । आशा करैत छी जे समाज आबो जागत, जाहिसँ माधवीनानी सन लोकक आत्माकेँ शांति भेटतनि ।

१५

लोधी गार्डेन

लोधी गार्डेन आधुनिक दिल्लीक एकटा महत्वपूर्ण स्थान अछि । एहिठाम सभसँ पहिने १४१४ ई०मे सैय्यद राजवंशक दोसर शासक मोहम्मद शाहक मकबरा अलाउद्दीन आलम द्वारा बनाओल गेल छल । तकर बाद वर्ष १५१७ में सिकंदर लोधीक मकबरा हुनकर पुत्र इब्राहिम लोधी (लोधीवंशक अंतिम शासक)द्वारा बनाओल गेल छल । मुगलवंशक तेसर शासक अकबर एहि स्थानक उपयोग वेधशालाक रूपमे केलथि। अंग्रेज सेहो एहि स्थानकक जीर्णोद्धार करबैत रहलाह । ९ अप्रैल १९३६क एहि पार्कक नाम लेडी वेलींगटन पार्क राखल गेल जे स्वतंत्रताक बाद बदलि कए लोधी गार्डेन राखि देल गेल ।

९० एकड़मे पसरल लोधी गार्डेनमे २१० प्रकारक करीब ५४०० वृक्ष लागल अछि । एहिठाम लागल वृक्षसभमे प्रमुख अछि- अर्जुन,चंपा,अमलतास,नीम,जामुन,मौलश्री,पीपड़,कचनार, कुसुम,अशोक,पाकड़ि ..। करीब दू एकड़ जमीनमे बनल रोज गार्डेनमे ५००० गुलाबक फूल लागल अछि । एकहिठाम एतेक प्रकारक गाछ-बृक्ष हेबाक कारण वनस्पतिशास्त्रक विद्यार्थीकेँ ओहिठाम बहुत जानकारी भेटि सकैत अछि । लोधी गार्डेनमे कैकटा दुर्लभ पक्षीसभ देखबामे आएत जेना सुग्गा,देशी मैना,कोइली,उल्लू,सातभाइ,बुलबुल,कौआ, कठफोरा आदि,आदि । लोधी गार्डेनमे लोधीरोडसँ सटले आमक गाछी अछि। ऐहिमे टिकुलासँ लए कए आमक पकबाक समय धरि लोकसभ आम बिछैत रहैत अछि । कैकगोटे तँ झोराक -झोरा काँच आम अँचार बनेबाक हेतु लए जाइत छथि । मुदा नीक आमसभ नहि अछि । तथापि जे-से ओकरापर झटहा फेकैत रहैत अछि आ पकबाक दिन धरि मोसकिलसँ कतहु-कतहु आम बाँचल रहि पबैत अछि । लोधीगार्डेनक बीचमे सेहो आमक गाछसभ अछि। आमक अतिरिक्त रोडसँ सटले कोनपर तरह-तरहक बाँस रोपल अछि ।

लोधी गार्डेनक चारूकात एक सँ एक महत्वपूर्ण स्थानसभ अछि । लगीचेमे विश्वप्रसिद्ध खान मार्केट अछि । ओहिठाम देश-विदेशक संभ्रांत लोकसभ बजारमे बौआइति भेटि जेताह । खानमार्केटसँ सटले मेट्रो टीसन बनि गेलासँ ओहिठाम आबा-जाही सुगम भए गेल अछि । ओही इलाकामे साइ मंदिर सेहो अछि। वृहस्पति दिन कए ओतए भक्तलोकनिक जबरदस्त भीड़ होइत अछि । अहलभोरेसँ भक्तलोकनि पाँति बना कए दर्शनक हेतु उत्सुक रहैत छलाह । लोधीगार्डेनसँ सटले वरिष्ठ सरकारी

अधिकारी लोकनिक सरकारी आवास अछि। हुनकासभक हेतु लोधी गार्डेन तँ जेना दलान अछि । सफदरजंग मदरसा सेहो लोधी गार्डेनसँ सटले अछि । ओ दिल्लीक प्रसिद्ध दर्शनीय स्थानमेसँ अछि। जँ अहाँ प्रायोजित दिल्ली दर्शनक हेतु बिदा होएब तँ ओतए जेबे करब । अहाँक बस ओतए ठाढ़ हेबे करत । असलमे ई सभ स्थान दिल्लीक इतिहाससँ जुड़ल अछि ।एकसमयमे ओहिठाम की चुहचुही रहल होएत से सोचल जा सकैत अछि।

आइ-काल्हि एहि स्थानक देख-भाल एनडीएमसी द्वारा कएल जाइत अछि । दिन-राति बहुत रास कर्मचारी एहिमे लागल रहैत छथि ।तकर परिणाम थिक जे एतेकटा परिसर कोनो आंङनसँ बेसी स्वच्छ आ सुंदर लगैत रहैत अछि । चारूकात हरल- भरल गाछ,फूलसभ मिलिकए तेहन मनोरम दृश्य बनओने रहैत अछि जे होएत जे घुमिते रहि जाइ ।जँ कनीको काल एतए बैसि जाएब वा टहलि लेब तँ मोन अतिशय प्रसन्न आ प्रफुल्लित भए जाइत अछि। सभ दुख-चिंता हरा जाइत अछि। लगैत अछि जेना सरिपहु स्वर्गमे आबि गेलहुँ ।

रातिक दस बाजि रहल हो वा भोरक चारि, लोधी गार्डेन करवनो खाली नहि भेटत । केओ-ने-केओ ओतए चलैत-फिरैत भेटिए जाएत। जँ केओ नहिए भेटल तइओ कोनो बात नहि । असगरो अहाँ सुरक्षित रहि सकैत छी ।कोनो डरक बाते नहि ।एक चक्कर जँ लगा लेलहुँ तँ सवा दू किलोमीटर पुरि गेल । एहि तरहे कैक गोटे सात-आठ चक्कर लगा लैत छलाह । केओ एक्के चक्करमे थाकि कए बैसि जाइत छलाह। सामान्यतः लोक दू वा तीन चक्कर लगबैत भेटि जेताह ।ताहूमे सभक गति भिन्न होइत अछि ।केओ बहुत तेज चलैत छथि तँ केओ नँहू-नँहू।

जौं-जौं समय बितैत अछि लोधी गार्डेनमे लोकक संख्या बढ़ैत जाइत अछि । सात बजे भोर होइत-होइत तँ ओहिठाम टहलनिहारक मेला लागि जाइत अछि । कैकगोटे टहललाक बाद अपन मित्रसभक संगे चाह पीबैत भेटि जेताह । किछुगोटे कहिओ काल ओतए जलखैक ओरिआन सेहो केने रहैत छथि । कहिओ-कहिओ तँ लोकसभकेँ ताकि-ताकि कए जलखै कराओल जाइत अछि । गुरुपर्वक दिन किछु गोटे लंगर करबैत छथि । एहिसभ तरहक दृश्य लोधी गार्डेनमे कोनो-ने-कोनो रूपमे सालभरि चलैत रहैत अछि ।

लोधी गार्डेनमे प्रातः वा सायंकाल भ्रमण केनिहार लोकक आपसी दोस्ती हुनकर टहलबाक समय आ गतिपर निर्भर करैत अछि। एकदिनक बात होइक तहन तँ लोक ठहरि जाएत,दूटप्पी कए लेत । मुदा नित्यप्रति टहलएबलासभक हेतु से संभव नहि थिक । किछुगोटे तँ झुंड बनाकए चलैत छथि । ओसभ टहलैत कम गप्प बेसी करैत छथि । ओहिठाम भोर-साँझ टहलनिहार लोकसभमे एक सँ एक गणमान्य लोक रहैत छथि । असलमे लोधी गार्डेनक लग-पासमे उच्च सरकारी अधिकारी लोकनिक आवास अछि । तेँ हुनका लोकनिक हेतु लोधी गार्डेनमे टहलनाइ बहुत सुगम होइत छनि । पाँच-सात मिनटमे लोधी गार्डेन पहुँचि जाइत छथि। ओहिमे पैर रखिते हवाक स्वाद बदलि जाइत छैक । जौं अहाँ लोधी गार्डेनक लगीचसँ गुजरैत छी तखनहि अहाँकेँ हवाक बदलल रुखिक अंदाज लागि जाएत । लोधी गार्डेनमे विद्यमान वृक्षसभक एहिमे बहुत योगदान अछि ।

लोधी गार्डेनक भीतर टहलबाक हेतु छोट-पैघ कैकटा रस्ता अछि। लोक अपन सुविधानुसार रस्ताक चुनाव करैत छथि ।

कैकगोटे भीतरे-भीतर चलबाक इच्छुक रहैत छथि । तिनका चलैत काल कमेगोटेसँ भेंट हेबाक संभावना रहैत छनि । अस्तु,असगर टहलबाक आनंद एहि रस्ते भेटि सकैत अछि। जँ अपने मुख्यरस्तापर चलब आ फरीछ भए गेल अछि तखन तँ लोकक हुजुम देखबामे आबि सकैत अछि। कैकठाम गाछतरमे लोकसभ सुस्ताइत देखेताह । किछुगोटे चाह-पानोक ओरिआन रखने रहैत छथि । कहक माने जे ओहिठाम टहलबाक संगे पिकनिकक आनंद लैत छथि । भोरे-भोर टहलैत काल शरीरकेँ नवीन ऊर्जा भेटैत छैक। अंग-अंगमे उत्साह भरल रहैत अछि । लोक सभकिछु बिसरि एक-दोसरकेँ प्रातः अभिवादन करैत छथि। लगैत रहैत अछि जेना सभ केओ ऊर्जासँ भरल छथि।

लोधी गार्डेनमे भोर-साँझ टहलनिहारसभक हेतु ओ जीवनक एकटा महत्वपूर्ण अंग थिक । कैकगोटेक तँ आपसी संबंध ततेक प्रगाढ़ छनि जे ओ सभ आपसमे अपन दुख-सुख बिना कोनो संकोचकेँ बाँटैत छथि । कैकगोटेकेँ तँ ओ जीवनदायी सिद्ध भेल अछि । जीवनमे घटित दुर्भाग्यपूर्ण स्थितिमे लोधी गार्डेनक हुनकर मित्रलोकनि बहुत मदति केलखिन आ ओ सभटा दुख बिसरि फेरसँ ठाढ़ भए गेलाह । जँ हुनका लोधी गार्डेनक समाजक सहयोग नहि भेटल रहैत तँ कहि नहि आइ हुनकर की हाल भेल रहैत ?

लोधी गार्डेनमे सालोंसँ घुमैत-घुमैत कएगोटेकेँ आपसमे बहुत भावुक सिनेह भए गेल छनि । हमर एकटा संगी तँ बाजल करथि जे जँ हम मरी तँ अंतिम संस्कारसँ पूर्व हमरा लोधी गार्डेनमे एकबेर अवश्य घुमा देल जाए । आब ओ सेवानिवृत्तिक बाद लोधी कालोनीसँ चलि गेल छथि आ लोधी गार्डेनसँ सेहो फटकी भए गेल छथि । मुदा लोधी गार्डेनसँ हुनका ओहिना सिनेह बनल छनि ।

अखनो ओ कहिओ काल ओतए अबैत छथि आ अपन पुरानसंगीसभसँ भेंट कए बहुत तृप्तिक अनुभव करैत छथि ।

साउथ एक्सटेंसनसँ एकटा सेवानिवृत्त फौजी लोधी गार्डेनमे नित्य टहलए अबैत छलाह। ओ अपन घरेसँ पैरे बिदा होइतथि आ लोधी गार्डेनमे सात चक्कर लगबैत छलाह । टहलैत काल ओ अपन मुरी हिलबैत रहैत छलाह । हुनकर टहलबाक गति सेहो बहुत अधिक रहैत छलनि । लोधी गार्डेनमे टहललाक बाद ओ फेर पैरे अपन घर वापस होइत छलाह । कैक साल धरि हुनकर टहलबाक ई क्रम चलैत रहल । मुदा बादमे पता नहि हुनका की भए गेलनि जे टहलनाइ तँ कम भइए गेलनि अपितु मुरीक जोर-सोरसँ हिलेनाइ सेहो चलि जाइत रहलनि । कहुना कए ठेंगा पकड़ि कए थोड़ बहुत टहलि लैत छलाह-ओहो बहुत दिनक बाद । संभवतः हुनका कोनो स्वास्थ्य संबंधी समस्या भए गेलनि ।

लोधी गार्डेनक पुरान सिनेहीमेसँ छथि सरदार अजीत सिंह। ओ टैक्सी स्टैंडक इंचार्ज छथि । पचासोटा टैक्सी रखने छथि आ ताहिसँ बहुत नीक आमदनी केने छथि । लोधी गार्डेनक लगीचेमे घर छनि । भोर-साँझ-दुपहरिआ जखन देखू ओ लोधी गार्डेनमे घुमैत भेटि जेताह । ओहिठामक गाछ-बृक्ष,फूल-पातसभसँ हुनका बहुत सिनेह छनि । एकबेर केओ भोरे टहलैत काल बेलीक फूल तोड़ैत रहथि। सरदारजी हुनका फूल तोड़ैत देखि लेलखिन । औ बाबू! तकर बाद जे हंगामा भेल से की कहू । बात बढ़ैत-बढ़ैत दुनूगोटेमे मारि-पीट होमए लागल । सरदारजीक हाथमे चोट लागि गेलनि । ओ अस्पताल जाए पलस्तर करओलनि आ पुलिसमे केस सेहो कए देलनि । आब तँ ओ सरदारजीक निहोरा करए जे कहुना पुलिस केस हटा लेथि । बहुत दिन धरि ई झंझटि

चलैत रहल । आखिर ओ घटी मानलाह आ जेना-तेना मामिला शांत भेल ।

अगस्त २००६ ई०मे लोधी कालोनीमे सरकारी आवास आवंटित भेलाक बाद हमहूँ नित्य लोधी गार्डेनमे घुमए लागल रही। एकदिन पूजाक हेतु किछु फूल तोड़ैत रही कि सरदारजीक नजरि हमरापर पड़लनि । ओ फटकिएसँ चिकरब शुरु केलाह । हम इएह-ले ओएह-ले भागलहुँ । बादमे अपन मित्र सरदार वलदेव सिंहसँ एहि घटनाक चर्चा केलहुँ । हुनकेसँ सरदार अजीत सिंहक बारेमे पता लागल । असलमे ओ लोधी गार्डेनक स्वयंभू रक्षक बनि गेल छथि आ जे केओ कोनो अनट काज करैत देखाइत छनि तकरासँ लड़बामे कोनो संकोच नहि करैत छथि। बादमे सुनलिऐक जे एनडीएमसी हुनका लोधी गार्डेनक संरक्षक बना देने छनि । कालक्रमे सरदार अजीत सिंह हमर नीक मित्र बनि गेलाह आ जखन कखनो मोन होइतनि तँ ओहि घटनाक चर्च कए आनंद उठबितथि।

दिल्लीक प्रसिद्ध इन्डिआ इन्टरनेसनल सेंटर लोधी गार्डेनसँ सटले अछि । अपितु,ओ लोदिए गार्डेनक एक भाग लगैत अछि । ओहिठाम बेसीकाल गीत-नाद होइत रहैत अछि । एक सँ एक कलाकार ओहिमे सामिल होइत छथि । लोधी गार्डेनमे टहलैत काल साँझमे ओ मधुर- मधुर गीत जँ कानमे पड़ितए तँ मोन होइत जे कनी काल ठाढ़ भए जाइ ,गीत सुनि ली । असलमे ओहिठाम लगीचेमे कैकटा महत्वपूर्ण संस्थानसभ छलैक जतए एहन-एहन कार्यक्रमसभ होइते रहैत छल । चिन्मयानंद मिसन,इस्लामिक सेंटर,इन्डिआ हैबिटाट सेंटरमे निरंतर किछु-ने-किछु एहि तरहक कार्यक्रम होइते रहैत छल । यद्यपि हम लोधी कालोनीमे आठसाल रहलहुँ मुदा एहिसभ कार्यक्रममे बेसी नहि जाइत छलहुँ । अंतिम

सालमे किछुदिन एकर आनंद उठा सकलहुँ । तखन तँ बहुत अफसोच होइत छल जे पहिने किएक नहि एहिमे सामिल भेलहुँ ।

लोधी गार्डेनमे लगभग आठसाल हम भोर-साँझ टहलि सकलहुँ । ब्लाक २१,लोधी कालोनीक सरकारी आवास जून २०१४मे छुटि गेल आ तकर बाद लोधी गार्डेन सेहो छुटि गेल । मुदा ओकरासँ जुड़ल बहुत रास घटनासभ अखनो स्मृतिमे ओहिना बनल अछि । भोरे जखन लोधी गार्डेनमे टहलबाक हेतु जाइत छलहुँ तँ ओहिमे जाइते देरी एकटा अलग दुनिआमे पहुँचि जाइत छलहुँ । ओतए कतेको लोकसभसँ परिचय भेल । ओहिमे महत्वपूर्ण व्यक्तिमे सँ छलाह सेवानिवृत्त आइएएस श्री भुरेलालजी। ओ उत्तरप्रदेश काडरक अधिकारी छलाह । स्वर्गीय विश्वनाथ प्रताप सिंह जखन भारतक प्रधानमंत्री रहथि तँ भुरेलालजी हुनकर प्रमुख सचिव रहथि । एकसमयमे देशक सभसँ शक्तिमान सरकारी अधिकारी रहल श्री भुरेलालजी समय संगे केहन तालमेल केने छथि से लोधी गार्डेनमे हुनका देखि कए पता लगैत अछि । अहंकार जेना हुनका छनिहे नहि । सभसँ बेस अपनत्वसँ गप्प-सप्प करताह,आगू बढ़ि कए भोरे हरिओम कहि कए स्वागत करताह आ संगे-संह घुमैत रहताह । लगबे नहि करत जे एहन पैघपदपर रहल लोकक संगे छी । ततबे नहि,ओ ठाकुरद्वारा ट्रस्ट बनओने छथि जे बहुत तरहक सामाजिक काजसभ करैत अछि । ओसभ लोधी गार्डेनमे एकटा बैसारक स्थान बनओने छथि आ नित्यभोरे पचास-साठिगोटे ओतए बैसैत छथि,योग-व्यायाम करैत छथि,चाह-पान करैत छथि,कहिओ-कहिओ तँ जलसा सेहो होइत अछि । एहिसभसँ हुनका एकटा बहुत जीवंत समाज भेटि गेल छनि जकरा संगे सेवानिवृत्तिक बाद बहुत नीक समय बिता

रहल छथि । लोधी गार्डेनमे एहन-एहन कैकटा गुट अछि । समय-समयपर ओसभ उत्सव मनबैत छथि,भोजन करैत छथि आ वापस अपन-अपन घर चलि जाइत छथि ।

लोधी गार्डेनमे प्रातःकाल दसबजेसँ रातिमे आठ-नओ बजेधरि प्रेमी जोड़ासभक बाढ़ि रहैत अछि । ओसभ दोगमे कतहु करोट धेने रहैत छथि । मुदा किछु दर्शकसभ हुनकासभक पछोड़ केने रहैत छथि । केओ आबओ,केओ जाओ हुनकासभक भाव - भंगिमापर कोनो प्रभाव नहि पड़ैत अछि कारण ओसभ तँ अपनेमे मस्त रहैत छथि,बेहोस रहैत छथि । लोधी गार्डेनमे दिन-देखार ईसभ होइत रहैत अछि मुदा पुलिस आ प्रशासन के जेना कोनो मतलबे नहि । जे होइत छैक से होऊ । करवनो काल जखन कुकांडभए जाइत अछि तखन जरूर पुलिस डंडा हिला दैत अछि । अन्यथा ककरो कोनो मतलब नहि । लोक आबि रहल अछि,जा रहल अछि मुदा प्रेमी जोड़ासभ अपन दुनिआमे मस्त रहैत छथि । मुदा ओहिठाम सुच्चा टहलनिहार लोकसभकेँ एहि फसादसभसँ कोनो मतलब नहि रहैत छनि । ओ तँ प्रकृतिक आनंद लैत अपन स्वास्थ बनबएमे लागल रहैत छथि ।

एकबेर दियाबातीक प्रात अन्हरोखे हम दुनू बेकती ओतए टहलए चलि गेल रही । फटक्का प्रदूषणक कारण एकडेग नहि देखाइत छल । अन्हार गुज्ज,भयावह वातावरणमे ओतए एकडेग ससरब मोसकिल छल । लगैत छल जे सौंसे लोधी गार्डेनमे हमही दुनूगोटे आएल छी । तथापि साहस कए हमसभ आगू बढ़ैत रहलहुँ। किछु फटकी मनुक्खक अबाज सुनाएल तखन जान मे जान आएल । कहुना कए एक चक्कर लगओलहुँ । दोसर चक्कर लगेबाक साहस नहि भेल आ डेरा वापस आबि गेलहुँ ।

एकदिन हम छुट्टीक दिनमे दस बजे लोधी गार्डेन टहलए गेल रही । द्वारिसँ थोड़बे भीतर गेलाक बाद एकटा अधबएसू बहुत भावबिभोर भए गबैत छलाह- “ओ दूर के मुसाफिर हमको भी साथ ले ले..हम रह गए अकेले....”ओकर गीत सुनिकए हम ठामहि ठाढ़ भए गेलहुँ । गीतक स्वरमे ततेक दर्द भरल छल जे लागल जेना लकबा मारि देलक । ओ किछुकाल धरि अहिना गबैत रहल आ कहि नहि कतए बिला गेल ।बादमे फेर ओ कहिओ नहि देखाएल। बहुत दिन धरि ओ गीत फेरसँ सुनबाक मोन होइत रहल ।संभवतः ओ व्यक्ति सेहो छुट्टीक मनोदशा मे अपन मनोव्यथा संगीतक रूपमे अभिव्यक्त कए रहल छलाह। एहने एकटा दृश्य एकदिन लोधी गार्डेनक बीचमे देखलहुँ।एकटा ओकील साहेब पाथरपर बैसि कए तरह-तरहक शास्त्रीय संगीत गाबि रहल छलाह । हुनकर गेबाक भाव-भंगिमासँ लगैत छल जेना ओ भीतरसँ हिलि गेल छथि । गबैत-गबैत ओ नाचए लागथि । चारूकात तमासा देखनिहारक भीड़ लागि गेल छल । ओना ओ गीतो नीक गबैत छलाह मुदा ओहूसँ बेसी हुनकर आकृतिसँ निकलैत संकेत छल जे कोनो गंभीर आंतरिक दुखक दिस इसारा करैत छल ।एहि तरहें कतेको तरहक दृश्य लोधी गार्डेनमे देखबाक अवसर भेटैत छल । छुट्टी दिन कए तँ ओतए मेला लागल रहैत छल ।लोकसभ सपरिवार आबि ओतए आनंद मनबैत छलाह । जेम्हरे जाउ नेना,युवक आ बूढ़सभ नाना प्रकारक मनोरंजन करैत देखेताह । साँझ होइत-होइत लोकसभक भीड़ ससरि जाइत छल ,रहि जाइत छल नियमित टहलएबलासभ जे सामान्यत: लगीचक सरकारी आवाससभसँ अबैत छलाह । ई क्रम ओतए निरंतर चलैत रहैत छल ।

लोधी गार्डेनक लगीचमे रहि हमसभ ओकर बहुत फएदा उठओलहुँ । आठ वर्षसँ बेसी समय धरि मगनीमे स्वस्थ मनोरंजन होइत रहल । लोकसभ महग होटल वा क्लबमे जा कए जे उसासक अनुभव करैत हेताह से हमसभ निःशुल्क लोधी गार्डेनमे उठओलहुँ। सभसँ फएदा तँ ई भेल जे नीक लोकसभक संगति भेटल । एक सँ एक विद्वान लोक ओहिठाम टहलैत भेटलाह । ओहिमेसँ कैकगोटे दोस्तो बनि गेलाह । स्वास्थकेँ तँ जेना असीर दबाइ छल ओ स्थान। हमर श्रीमतीजीकेँ पैरमे दर्द होइत रहैत छलनि । कतेको डाक्टरसँ देखेलहुँ । कहि ने कोन-कोन एक्सरे करओलहुँ । मुदा ठीक भेल लोधीगार्डेनमे चललासँ । शुरुमे तँ हुनका चलबामे परेसानी बुझाइनि मुदा क्रमशः ओ फुरतीसँ चलए लगलीह आ कालक्रमे तँ ओ हमर कोन कथा कैकटा तेज टहलएबलासभकेँ पछुआ दैत छलीह । लोकसभ एहिबातसँ बहुत प्रसन्न होइत छलाह । मुदा अंतिम दूसाल ओ लोधी गार्डेनमे भोरक टहलनाइ छोड़ि देलीह । बहुतदिन धरि लोकसभ हुनकर हाल-चाल पुछैत रहलाह ।

जून २०१४मे लोधी कालोनीक सरकारी आवास छोड़ि देलाक बाद हमहूँ लोधी गार्डेन घुमबाक सुखसँ बंचित भए गेलहुँ । आब तँ तकर कतेको साल बीति गेल । तथापि,लोधी गार्डेनक स्मरण अबिते रहैत अछि । ओहिठाम भोरसाँझ टहलैत लोकसभ मोन पड़िते रहैत छथि । मुदा ई जीवन थिक । सभ नीक-बेजाए बस्तुक अंत होइते अछि । लगैत अछि जेना लोधी गार्डेनक स्मृति कोनो बहुत नीक सिनेमाक एकटा सुखद अंश छल । आशा करैत छी जे कहिओ फेर एहन समय अएतैक जे हमसभ लोधी गार्डेन

पहिने जकाँ भोर-साँझ टहलि सकब आ जीवनमे ओएह स्फूर्ति,ओएह आनंद फेरसँ भेटि सकत ।

26.6.2020

१६

गामक दाहा

नेना सभकेँ तँ दाहा जेना मोनमे धसि गेल रहैक । हमसभ पैघ करचीमे फूल खोसि कए दाहा बनबैत छलहुँ आ चारि-पाँचटा बच्चासभ मिलि कए घरे-घर दाहा जकाँ घरे-घर घुमी। दमदलिआक दाहा हुसे...कहैत नेनासभ अतिउत्साहमे ओहि कर्चीक दाहाकेँ एमहर-ओमहर घुमा कए आनन्दित होइत छलहुँ । सोचल जा सकैत अछि जे नेनामे हमसभ असली दाहाक कतेक उत्सुकतासँ स्वागत करैत रहल होएब । दाहाक दिन भोरेसँ गामभरिमे उत्साहक वातावरण रहैत छल । हमर गामक सिनुआरा टोलमे बहुत रास मुसलमान रहैत छथि । ओहिमेसँ कैकगोटे हमर परिवारमे पुस्तैनी सेवा करैत छलाह। जेहने सज्जन,तेहने इमान्दार। कर्मठता तँ जेना ओकरा सभमे भरल छल । हमरा बाबाकसंगे जनाब,मिआँजान,ओकर पिता,भाए ,आ दमरी काज करैत छल । ओसभ दाहाक दिन पाबनिक माहौलमे मस्त रहैत छल । बाबा सभकेँ किछु-किछु आर्थिक सहायता करैत छलखिन जाहिसँ ओकरसभक पाबनि सोहनगर होइक ।

भोरुकबेमे ढोल पीटैत घरे- घर ओ सभ घुमि जाइत छल। दस-बीस गोटे दोलाक पाछू चलैत रहैत छल। दाहाक

एकदिन पूर्वक ई विध होइत छल । ओहि समयमे लोकसभ उठि कए ओकर स्वागत करैत छल । एक हिसाबे ओ अगिला दिन होमए बला दाहाक हेतु नोत देब छल । हमरा गाममे अधिकांश मुसलमानसभ ककरो-ने- ककरो ओहिठाम काज करैत छल । ओकरासभकेँ दाहा मनेबाक हेतु पर्याप्त चंदा सेहो हमरासभक टोलसँ भेटैत छल । सभ जाति आ धर्मक लोक ओहिना एहिमे भाग लैत छलाह जेना फगुआ आ दीयाबातीक पाबनि होइ ।

दाहा हमरा लोकनिक टोलमे घरे-घर घुमैत छल । लगैत जेना दाहा सौंसे गामक पाबनि होइक । की हिन्दू,की मुसलमान सभ उत्साहमे रहैत छल । दाहाक आबक समयमे सभ अपन-अपन दरबाजापर मुस्तैद रहैत छल । सिनुआरासँ चलि दाहा जखने डीहटोलमे प्रवेश करैत कि टोलमेमे हल्ला भए जाइत ।

“आबि गेल! आबि गेल !दाहा आबि गेल!”

ई दृश्य हमसभ नेनेसँ देखैत रहलहुँ । कहिओ नहि बुझाएल जे ई पाबनि हमरा लोकनिक नहि थिक । दाहा लगीचमे अबैत कि ओकरा संगे चलि रहल पिपही,ढोलिआसभक स्वर पहिने पहुँचए लगैत । तकर बाद- हो हाइ! हो हाइ!.... करैत दाहा लदने लोकसभ देखाइत । दाहाक पाछा-पाछा युवक लोकनि लाठी भजैत रहैत । पाछू-पाछू लोकक हुजुम ओही गति सँ दाहाक संगे दौड़ैत रहैत । सभदरबाजापर थोड़े-थोड़े काल ठाढ़ होइत आ लठिधरसभ अपन करतब करितथि । जकरा जे इनामदेबाक रहितैक से दितैक आ तकर बाद दाहा आगू बढ़ि जाइत।

सिनुआराक दाहा हमरा टोल होइत अड़ेर हाट दिस बढ़ैत। ताबते पुबारिओटोलक दाहा सड़कपर अबैत देखाइत । उतरबारि

कातसँ जमुआरीक दाहा अबैत रहैत । कहिओ काल आनो गामसभक दाहा अड़ेर हाटपर अबैत। एहि तरहें चारि-पाँच गामक दाहासभ अड़ेर हाटपर अबैत छल । सभ दाहाक पाछा-पाछा दस-बीसटा छौंड़ासभ लाठी भजैत नचैत-फनैत चलैत रहैत छल । दाहाक संगे-संगे बहुत रास युवक,नेना आ वृद्ध दोड़ैत रहैत छल । कुलमिला कए ई एकटा बहुत मनोरम दृश्य होइत छल । हमरा लगैत अछि जे दाहाक पाछा-पाछा जतेक मुसलमानसभ रहैत छल तकर कैकबेर लग-पासक गामक हिन्दू सामिल होइत छल । लगैत छल जेना ई संपूर्ण समाजक सामुहिक उत्सव थिक । कनीको भेदभावबला बात नहि होइत छल । ओहि समयमे दाहाक पाबनि सामाजिक सद्भावक ज्वलंत उदाहरण छल । असलमे मिथिलांचलमे सामाजिक समरसता सभठाम विद्यमान छल। कहिओ कतहु आन तरहक भाव नहि सुनबामे अबैत छल। ई विशेषता छल हमरा लोकनिक माटि-पानिक ।

अड़ेर हाटपर कैकगामक दाहासभक मिलान होइत छलैक। एहि अवसरपर मेला लगैत छलैक । ओहिमे गाम-गामक लोकसभ जमा होइत छलाह आ अपन-अपन करतब करैत छलाह। कैकबेर ई एकटा प्रतियोगिताक रूप धए लैत छल । जेना कि एकगोटे सिनुआराक तँ दोसर जमुआरीक । दुनूगोटे लाठी भजैत-भजैत एक-दोसरपर प्रहार करैत छल । ओकरासभकेँ सैकड़ो लोक घेरने रहैत छल आ रहि-रहि कए ओकरासभक उत्साहवर्धन करैत रहैत छल । कैकबेर तजिआ मिलानक समयमे किंवा लाठी भाँजबाक क्रममे आपसेमे भिड़ंत भए जाइत छल । सभ तँ पीने बुत रहैत छल । के-ककरा सम्हारत? जेना-तेना बात सलटैत आ

लोकसभ फेरसँ लाठी भाजए लगैत। एहि तरहें घंटा-दू घंटा ई कार्यक्रम चलैत रहैत छल ।

दाहाक दिन हाटपर मेला लगैत छल । लोक ठसल रहैत छल । ओही बहन्ने बनिआ लोकनिक समानसभक बिकरी बढ़ि जाइत छल । जगह कम रहैक आ लोक बहुत आबि जाइत छल । तेँ ओतए एक बीत जगह खाली नहि रहैत छलैक । लोक जेना-तेना कए दाहासभक लगीचमे पहुँचैत छल । रंग-विरंगक पिपही,बच्चासभक खेलौना,मधुर,तीमन-तरकारीसभ ओतए भरल रहैत छल। लोकसभ जेबा काल किछु-ने-कुछु सनेस जरुर लैत छल । नहि किछु तँ मुरही-झिल्ली,कचरी तँ लैते छल । आखिर,मेलासँ घुरि रहल छल । खाली हाथ कोना जाइत ।

अपना इलाकामे दाहा ओहि समयमे सामाजिक समरसता आ सौहार्दक प्रतीक छल । पूरा समाज एहिमे भाग लैत छल । ततबे नहि एकरा प्रतिए आस्थावान सेहो रहैत छल । कतेको गोटेकेँ कबुला रहैत छलैक । जकर जे कबुला रहैत छलैक तदनुसार ओ सभ मनोकामना पूरा भए गेलाक बाद दाहापर चढ़बैत छल ।

दुखक बात अछि जे मिथिलांचलमे सेहो आब ओ सामाजिक समरसताक अभाव भेल जा रहल अछि । राजनीति चमकाबक हेतु जातिबादी नेतासभक प्रादुर्भाव भेलासँ कैकबेर छोटो-छोटो बातसँ बतंगर भए जाइत अछि । लोकसभक आपसी विश्वास आ सद्भावना क्षीण भए रहल अछि । समाजमे आपसी व्यवहारमे आब ओ मधुरता नहि देखल जाइत अछि जाहि हेतु मिथिलांचल प्रसिद्ध रहल अछि । आशा अछि जे लोकसभ एहि विषयमे त्वरित कारवाइ करताह जाहिसँ हमसभ स्वार्थी आ क्षुद्र राजनीतिसँ समाजकेँ बरबाद होमएसँ बँचा सकब आ एक बेर फेर

अपनासभक ओहिठाम ओहने सामंजस्य,ओहने सद्भाव देखबामे आबि सकत जाहि लेल हमरासभक गाम-घर प्रसिद्ध छल।

२१.७.२०२०

१७

दिल्लीक दुरंगी दुनिआ

भोर होइते चारूकात लोकसभ गर्द पाड़ए लगैत अछि । चारिबजे भोरेसँ लोकसभ कथू-ने-कथूक पाँतिमे ठाढ़ भए जाइत अछि । ककरो दूध लेबाक छैक,ककरो रेलक टिकट । ककरो कार्यालय जेबाक जल्दी छैक तँ ककरो कालेज जेबाक छैक । बस,रेल,कारसभक समय बान्हल छैक । तरह-तरहक इंतजामो छैक मुदा लोकक जनसंख्या ततेक छैक जे व्यवस्था धएले रहि जाइत छैक । बसमे चढ़बाक काल धकमधुक्का,अस्पतालमे डाक्टरसँ देखेबाक अछि तँ धकमधुक्का । अस्पतालमे देखेबाक अछि तँ चारि बजे भोरेसँ पाँतिमे लागि जाउ । माने कोनो एहन स्थान नहि भेटत जतए लोकक हुजुम नहि रहैत अछि,जतए अनगिनित लोक पाँति लगाए प्रतीक्षा नहि कए रहल अछि । ई तँ हाल अछि देशक राजधानी-दिल्लीक ।

दिल्लीमे जखन पैसि कए देखबैक तँ ओकर कैकटा विकृति देखाएत । अहाँक दुनिआ अपन फ्लैट धरि समटल रहत । अहाँक लगपासमे के छथि,चोर छथि,कि उचक्का छथि कि कोनो विद्वान वा कलाकार छथि तकर कोनो जानकारी नहि भेटत । लोक सौंसे दुनिआकेँ नोति लेत मुदा पड़ोसीकेँ कोनो सूचना नहि रहत ।

जँ सीढ़ीपर कोनो पड़ोसी देखा जाएत तँ लगतैक जे आब की कएल जाए? ओ प्रयासपूर्वक नुका जाएत जाहिसँ भेंट ने भए जाए। बीच सड़कमे केओ ककरो छूरा मारि रहल अछि,कोनो महिलाकेँ कोनो बदमास तंग कए रहल अछि, कि कोनो घर मे कोनो बूढ़केँ ओकरे परिवारक लोक फज्जति कए रहल अछि,केओ किछु नहि कहत , कात बाटे तेना ने ससरि जाएत जेना ओ किछु नहि देखलक,जेना किछु भेवे नहि कएल । सैकड़ों लोक कोनो घटनाकेँ देखत मुदा मौकापर एकटा गवाह नहि भेटत । तेहन बेदर्द थिक दिल्ली ।

दिल्लीक कोनो टीसनपर चलि जाउ नित्य लाखोंक संख्यामे गाम-घरसँ पलायन कए मजदूर दिल्ली अबैत अछि । कैकगोटे तँ अपन गौंवाक संगे अबैत अछि । तकरासभकेँ अएलाक बाद रहबाक ठौर भेंटि जाइत अछि। मुदा दिल्ली अएनिहार बहुत रास एहन लोकसभ होइत अछि जकरा कोनो ठेकान नहि रहैत अछि,जे टीसनसँ कतए जाएत सेहो नहि बूझल रहैत छैक । प्रचंड इच्छाशक्तिक एकमात्र पूँजी लेने ओ सभ जीवन संग्राममे कुदि जाइत अछि आ अंततोगत्वा, सफल रहैत अछि। कैकगोटे तँ दिल्लीमे जेना-तेना अपन घरो बना लैत अछि ,अपन रोजगार बना लैत अछि मुदा सभ एहने भाग्यवान नहि होइत छथि । सोचिऔक ओकरासभक हेतु दिल्ली केहन क्रूर रहैत हेतैक जे माघक जाड़मे रोडपर सुतबाक हेतु विवश रहैत अछि । बात ओतबे पर रहि जइतैक तँ बरदास्त कए लैत मुदा कैकबेर सुतलेमे ओकरापर ट्रक,बस वा कार गुजरि जाइत अछि आ ओ अभागल व्यक्ति फेरसँ सूर्योदय नहि देखि पबैत अछि ।

जँ कहिओ छुट्टी भेटए(ओना दिल्लीमे ककरो कहिओ आफियत रहैत नहि छैक) तँ चलि जाउ कोनो वृद्धाश्रम।

ओहिठामक दृश्य देखिते रहि जाएब । ओतए काहि कटैत बूढ़सभ कोनो गरीब घरक नहि होइत छथि । ओसभ अपना समयमे कैकटा महल बना चुकल छथि,अपन पुत्रक सुख सुविधाक हेतु बैंकमे करोड़ो टाका जमा केने छथि,कतेकोगोटेकेँ तँ अखनहुँ बड़का-बड़का कारोबार चलि रहल छनि । मुदा तेँ की? धिआ-पुता बुझैत छनि जे ओसभ तँ ओकर अछिए आ ओकरे हेतैक ,ताहि लेल एहि बूढ़केँ कतेक दिन माथपर रखने रहब । कैकटा बूढ़ बेटाक मुँह देखबाक प्रत्याशामे मरि जाइत छथि । कैकटाकेँ अंतिम संस्कारोमे परिवारक केओ नहि आबि पबैत छनि । ओसभ विदेशमे बसि गेल छथिन,ओतएसँ आएब-जाएब बहुत मोसकिल । अपन मजबूरी बता कए सन्तोष कए लैत छथि । बाह रे! आधुनिक दिल्लीक आधुनिक लोक़ ।

दिल्लीक हाल पुछि रहल छी तँ कहि रहल छी । एकदिस एकसँ एक महल,सुविधा संपन्न कोठीसँ सजल मोहल्लासभ आ तकर सटले भेटत उजरल-उपटल लोकसभक खोपड़ीक श्रृंखला जकरा दिल्लीक भाखामे कहल जाइत अछि झुग्गी-झोपड़ी कालोनी । जतेक चोर,उचक्का,अपराधीसभ होइत छथि से सभ एहने ठाम नुकाएल रहैत छथि । अपराध करब हुनका लोकनिक मुख्य रोजगार छनि । ओकरेसभक संगे जेना-तेना देहकेँ झपने,पेट भरने दिन-राति गारि मारि सुनैत जिनगी बितबैत रहलाह लाखों बिहारी मजदूरसभ अछि । कालक्रममे ओहीमेसँ किछुगोटे सुभ्यस्त भए गेलाह तँ फेर घुरिओ कए ओहिठाम नहि गेलाह । केओ नेता बनि गेलाह,ककरो दोकान खुजि गेलनि तँ केओ कोनो सरकारी कार्यालयमे छोट-मोट काज पकड़ि लेलनि । जिनका जोगार भए गेलनि,कोनो पैघ अधिकारीसँ संपर्क भए गेलनि तँ स्थायी सरकारी

नौकरी सेहो भए गेलनि । से जँ नहिओ भेलनि आ नैमित्तिक आधारपर काज करैत छथि तैओ गाम जा कए हवा दैत छथिन जे ओ सरकारी काज करैत छथि । कैकगोटेकेँ तकर फएदा भेलनि,नीक परिवारमे बिआह भए गेलनि । जखन ओ सहरमे कनिआ अनलनि आ ओ हुनकर हाल देखलखिन तँ छाती पीटैत रहि गेलीह ।

जे-से मुदा दिल्ली अएबाक क्रम लगातार बनले रहल । गामक-गाम उपटि कए दिल्ली आबि गेल । आब तँ ई हाल अछि जे गामसँ बेसी गौंवा एतहि भेटि जेताह । मुदा दिल्ली अछि बेदर्द से तँ कहनहि छी । कोरोनाक कारण जखन सभकिछु बंद भए गेल तँ प्रवासी मजदूरसभक हाथ-पैर फुलि गेलैक । काज छुटि गेलैक। सरकारी सहायताक कतहु कोनो पता नहि । मालिकसभ काजसँ हटा देलकैक । एहन हालमे पहुँचलाक बाद सभकेँ अपन गाम मोन पड़लैक । भेलैक जे जेना-तेना गाम वापस चलि जाइ । सभ दिल्ली छोड़ि देलक । किछुगोटे गाम घुरबाक प्रयासमे रस्तेमे मरि गेल । मुदा गाम-गामे होइत छैक । जे पहुँचि गेल से सभ बहुत उसासमे छल । यद्यपि एहिबेर ओकरासभक देहपर नवका जींस नहि रहैक, गमकौआ तेल माथमे नहि लागल रहैक मुदा गामक माटिमे पैर पड़िते ओकरासभकेँ स्वर्गक सुख भेटलैक ।

दिल्लीक चारूकात बड़का-बड़का अट्टालिका,मीलों नमगर ओभरब्रिज,सैकड़ों दोकानसँ सजल-धजल मॉल दिस केओ आकर्षित भए जाएत । ओकरा के बनओलक? ओएह बिहारी मजदूर जे आब कोरोनाक संकटमे जान बँचेबाक हेतु गाम वापस चलि गेल अछि । मुदा जखन ओ दिल्लीमे छल तखनहु ओहि मॉलमे ओ फेर नहि गेल , नहि लए सकल अपन शिशु हेतु कोनो

आकर्षक खेलौना जकरा गाम गेलाक बाद ओ ओकर हाथमे दैत गर्वक अनुभव करैत । ई छैक दिल्लीक दुरंगी दुनिआक कटुसत्य ।

ओना दिल्लीमे भारतक इतिहासक गहींर दर्शन होइत अछि । कहि नहि कतेको राजा एतए अएलाह आ गेलाह मुदा दिल्ली ठामहि अछि । ऐतिहासिक महत्वक एकसँ एक बस्तु एहिठाम भेटत । मुदा से के देखैत अछि? गाम-घरसँ आएल जन-बनिहारसभ दिल्ली अबितहि पेटक जोगारमे जे लगैत अछि से लगले रहि जाइत अछि । आइ-काल्हि करैत ओकर जिनगी गुजरि जाइत छैक । दिल्लीमे रहितहुँ ओ किछु नहि देखि पबैत अछि । सही मानमे कहल गेल अछि – “दिल्लीक लड्डु जे खेलक सेहो पछतओलक आ जे नहि खेलक सेहो” ।

दिल्ली भने देसक राजधानी होअए, एकर संस्कृति मिज्झर छैक,एकरुपता तँ छैहे नहि । सौंसे विश्वक लोकसभ एतए आबि कए अपना हिसाबे जीबि रहल अछि । सभ अपन-अपन फ्लैटमे मुनल अछि । लगपासमे की भए रहल अछि तकर कोनो जानकारी नहि,कोनो मतलबो नहि । जँ केओ मरिओ गेल तँ परेसानी तखने होइत छैक जखन लाससँ निकलैत दुर्गंधक कारण रहनाइ मोसकिल भए जाइत छैक । अन्यथासभ होटल जकाँ फराक-फराक जिनगी जीबैत रहैत अछि । पैघलोकक सभसँ प्रिय मित्र विदेशी जातिक कुकुर भए गेल अछि । ओकरे संगे जीबैत अछि,ओकरे संगे सुख-दुख बाँटबाक प्रयासमे लागल रहैत अछि । एहन संभ्रांत परिवेशमे रहनिहारक मोनमे ओकर लगीचेमे झुग्गी बनाकए रहनिहार काजबालीक कोनो चिंता नहि ,कोनो मतलब नहि रहैत छैक । ओसभ तँ संपन्न वर्गक हेतु मात्र इस्तमाल करबाक बस्तु थिक , एक नहि तँ दोसर भेटि जेतैक ।

सालक-साल दिल्लीमे रहलाक बादो अपन कोनो पहिचान बनबएमे असफल रहबाक बाद प्रवासी मजदूर लोकनि कैकबेर वापस अपन गाम जेबाक विचार करैत छथि । मुदा कतेको बेर हुनकर ई इच्छा मोनमे धएले रहि जाइत छनि आ एकदिन परदेशेमे एहि संसारकेँ छोड़ि कए चलि जाइत छथि । सौंसे जिनगीक संघर्ष यात्राक एकटा दुखद अंत भए जाइत अछि । ककरा फुरसति छैक जे ओकरा हेतु शोक मनाओत वा श्रद्धांजलि देत।

दोष दिल्लीक नहि थिक । ओ तँ सभदिनसँ राजदरवार रहल अछि । तरह-तरहक राजासभ एहि सहरपर अपन कब्जा जमओलक आ भारतपर शासन केलक । कहल जाइत अछि जे पाण्डवलोकनि सेहो एतहिसँ राज केलथि । पाण्डवकालीन कैकटा मंदिरसभ दिल्लीमे अखनो अछि । दिल्लीमे जेम्हरे जाएब ढहल-ढनमनाइत राज-प्रसादसभ अपन-अपन खिस्सा कहबाक हेतु आतुर भेटत । मुदा ककरा समय छैक जे ओकरसभक दारुण व्यथा-कथा सुनए आ अपनो मोनकेँ दुखी कए लिअए । राजा रहैक,राजबारा रहैक ,ओकरे नौकर-चाकर रहैक । मुदा आब समय बदलल छैक । सभ अपनाकेँ राजे मानैत अछि । कहैत अछि जे देशमे प्रजातंत्र आबि गेल छैक । संविधान बनि गेल छैक , सभ बरोबरि अछि । मुदा वास्तविकता इएह छैक जे आम आदमीकेँ जे दिल्ली हाथ लगैत छैक से ततेक ने कठोर आ विद्रुप अछि जे ओकरा पाथरपर माथा फोड़ैत रहबाक हेतु विवश कए दैत छैक ।

उमीदेपर ई दुनिआ ठाढ़ छैक । तँ हमसभ आशा करी जे एकदिन एहनो अएतैक जखन दिल्ली सही मानेमे सुंदर भए जएतैक। गरीबोक जीवनयात्रा सुगम हेतैक । दिल्लीमे उपलव्ध

सुविधासभ गरीबोक हेतु सुलभ होएतैक आ सभगोटे एकस्वरमे कहतैक-वाह रे दिल्ली!

१८

रेलक डायरी

एहन साइते केओ होएत जकरा रेलयात्रासँ जुड़ल रोमांचकारी अनुभव नहि भेल होइक । चाहे रेलक टिकट लेबा काल ,वा रेलमे चढ़बा काल वा चढ़ि गेलाक बाद मुदा कतहु-ने-कतहु किछु -ने- किछु अविस्मरणीय घटित होइते रहैत अछि । कखनो तेहन सहयात्री भेटि जेताह जे रस्ता भरि हँसति-हँसति पेट फुलि जाएत । कहिओ एहनो सहयात्रीसँ भेंट भए जाइत अछि जे एको क्षण बिना झगड़ाक नहि बितैत अछि । रेल यात्रा करबाक उद्येश्य सभक सभरंग होइत छैक । केओ विद्यार्थी छुट्टीक बाद अपन कालेज जा रहल छथि तँ केओ इलाज करबाक हेतु सहरक अस्पताल जेताह । ककरो बिआहक बरिआती जेबाक रहैत छैक तँ ककरो तीर्थ यात्रा करबाक रहैत छैक । अस्तु,नानाप्रकारक उद्येश्यक लोकसभ एकहि रेलसँ यात्रा करैत रहैत छथि । मुदा सभक उद्येश्यमे ई समानता रहैत छैक जे यात्रा सुगम होइक,रेल समयपर गंतव्य स्थानपर पहुँचि जाइक ,रस्तामे कोनो कष्ट नहि होइक । आब ई तँ एकटा संयोगे होइत छैक जे ककर यात्रा केहन होइत छैक । ओना आब तँ रेलसभक हिसाब-किताब बहुत सुधरि गेल छैक,बहुत रास रेलसभ समयपर चलैत अछि,दुर्घटना कम सँ कम होइत छैक । मुदा छैक तँ अले-कलक । तेँ लाख प्रयत्नक

अछैतो कैकबेर लोक संकटमे पड़ि जाइत अछि । कैकबेर तँ जान बचेनाइओ पराभव भए जाइत छैक । से जे होउक मुदा तेँ लोक रेल यात्रा छोड़ि देत से तँ संभव नहि छैक ।

पहिने यातायातक प्रमुख साधन बस वा रेल छल । हवाइ जहाज तँ सुनबाक बस्तु छल । पैघ लोकसभ ओकर उपयोग करथि। साधारण आदमीकेँ तँ बस,ट्रेन ,रिक्सा नहि तँ पैरे चलबाक जोगार करए पड़ैक । कतहु -कतहु टैक्सी सेहो चलैक । मुदा ततेक महग रहैक जे आपवादिक परिस्थितिएमे लोक ओकर उपयोग करए। टैक्सीक एकटा दोसर रूप अएलैक टेकर माने जीप जाहिमे यात्रीसभ बसे जकाँ कोचल जाथि आ भाड़ा सेहो कमे लगैक । मुदा टेकरक उपयोगिता दस-बीस माइल धरि छलैक । बेसी दूर जँ जेबाक अछि तखन तँ ट्रेनेक टिकट लेबए पड़ैक । ट्रेनेक टिकट लेब आइ-काल्हि जकाँ आसान नहि रहैक । ओहि लेल स्वयं वा कोनो अपन लोककेँ टीसनक खिड़कीपर घंटों पाँतिमे ठाढ़ होमए पड़ैक । ओहि बीचमे कैकबेर धकमधुक्कामे जेबी कटि जाइत छलैक । हारि कए हुनका बिना टिकट लेने वापस होमए पड़नि । जँ गर्मीक छुट्टीसँ पहिने यात्रा करबाक अछि तखन तँ टिकट भेटनाइ बहुत मोसकिल होइत छल । कैकगोटे चारिबजे भोरेसँ टीसनक खिड़कीपर पाँति मे लागि जाइत छलाह । ओहि बीचमे कैकबेर नेटवर्क खराब भए जाइत छलैक । आब ठाढ़ भेल रहू । कहि नहि कखन जा कए फेरसँ नेटवर्क वापस आएत आ टिकट कटनाइ शुरु होएत । एहि तरहे घंटोक तपस्याक बाद टिकट भेटैक। कैकबेर टिकट खिड़की धरि पहुँचलाक बाद ट्रेनमे जगह भरि जाइत छलैक । तखन जएह-सएह टिकट लोक लए लैत छल। एतेक प्रयासक बाद टिकट लेलाक उपरांत जखन लोक घर वापस

आबए तँ लगैक जेना पहाड़ तोड़ि लेलहुँ। मुदा आब समय बदललैक । घरे बैसल आनलाइन टिकट कटि जाइत छैक,बदलि जाइत छैक आ आवश्यक भेलापर रद्दो भए जाइत छैक ।

रेलक पहिल यात्रा हम बाबूजीकसंगे दरभंगासँ मुहम्मदपुर टीसन जेबाक हेतु केने रही । हम पहिलबेर हुनका संगे अपन मामागाम(सिंघिआ ड्योढ़ी) जाइत रही । ओहि समयमे टेकटारि टीसन नहि बनल रहैक । तँ मुहम्मदपुर उतरि कए पैरे पिंडारुछ बाटे सिंघिआ जेबाक रहए । पसिंजर ट्रेन रहैक । दरभंगासँ सीतामढ़ी जाएबला यात्रीसभ ठसा-ठस भरल रहैक । नीचाँ काठक फट्टाक बीचमे बड़का-बड़का उड़ीससभ भरल छल । रहि-रहि कए काटैक । गर्मीक समय रहैक । पंखा बंद पड़ल छल। सभ यात्री घामे-पसीने बेहाल रहथि । मुहम्मदपुर टीसन थोड़बे कालक बाद आबि गेल छल । बहुत मोसकिलसँ यात्रा संपन्न भेल। हम प्रसन्नतापूर्वक मामागाम दिस पैरे बाबूजीक संगे बिदा भए गेल रही। एकर बाद तँ कतेको बेर ट्रेनपर चढ़लहुँ । कतए-कतए ने गेलहुँ। एहिमेसँ रेल यात्राक अनुभवक वर्णन कए रहलहुँ अछि ।

एकबेर हम पटनासँ दिल्ली मगध एक्सप्रेससँ दिल्ली जाइत रही । हमर आरक्षण स्लीपरमे रहए । हमरा संगे हमर श्रीमतीजी सेहो रहथि । जौँ-जौँ रेल पटनासँ आगा बढ़ल बिना आरक्षणबला यात्रीसभक संख्यामे बृद्धि होमए लागल । मुगलसराय अबैत-अबैत तँ टस सँ मस हेबाक जगह नहि बाँचल। शौचालय धरिमे यात्री बैसल रहए । गर्मीक मौसम रहैक । ताहिपरसँ ठसाठस भरल यात्री। के ककरा सम्हारत । पटनामे बहुत मोसकिलसँ अपन शायिका पर काबिज भेल रही । मुदा रहि-रहि कए केओ-ने-केओ कनीक घुसकबाक आग्रहक संग लगीचमे आबि जइतथि आ जाबे

किछु बजितहुँ ताबे ओ अपन जगह बना चुकल रहितथि । तकर बाद हम झगड़ा केनाइ शुरु करितहुँ। बहुत मोसकिलसँ शायिकाकेँ खाली करओलहुँ आ चतरि कए सुति रहलहुँ जाहिसँ केओ फेरसँ नहि बैसि जाए । थोड़े कालक बाद किछु नव यात्रीसभ डिब्बामे पैसलाह आ बैसबाक जोगारमे एमहर-ओमहर घुमए लगलाह । हमरा फेर कान ठाढ़ भेल । अपना भरि साकंछ भेलहुँ । हमर श्रीमतीजीक शायिका तँ ताधरि यात्रीसँ भरि चुकल छल । हम निरंतर प्रयाससँ अपन शायिका बचओने रही । दू-तीनटा यात्री हमर शायिका दिस बढ़ल । हमहूँ विरोध केनाइ शुरु केलहुँ । बाता-बाती सेहो होमए लागल । ओही बीचमे एकटा यात्री किछु बाजल, दोसर यात्री सेहो किछु बाजल, तेसर से अपन टीप देलथि। हम असगर हुनका सभसँ शास्त्रार्थ करैत रहलहुँ । ताबत ओहीमे सँ केओ बुधिआर यात्री बाजल –

"एहि लगारीसँ हारि मानी? दोसरठाम चलैत चल ।"-आ ओ सभ दोसर डिब्बा दिस बढ़ि गेलि ।

रेलगाड़ी मुगलसरायसँ आगू बढ़ल । मोनमे सोचलहुँ जे आब चैनसँ सुति सकैत छी । कनिके कालक बाद एकटा मोछिअल पुलिसके गलामे बंदुक लटकेने पैर लग ठाढ़ देखलिऐक । जाबे किछु बुझितहुँ,किछु बजितहुँ ताबे तँ ओ अपन काज कए चुकल छल । ओ ससरि कए पैर दिस बैसि गेल रहए । हमरा सन्तोष दिआबक हेतु कहलक-

"अलीगढ़मे उतरि जाएब । ताबे कनी पैर सोझ कए लैत छी ।"

ओकर ढब देखि किछु प्रतिवाद करबाक साहस नहि भेल। चुप्पे रहि गेलहुँ । रेल आगू बढ़ि रहल छल । थोड़बे कालक बाद एकटा फौजी माथा लग ठाढ़ देखेलाह । हम करोट बदलबाक प्रयास कए जगह छेकबाक प्रयास करितहुँ ताहिसँ पहिने ओ हमर सिरमा लग बैसि गेलाह । ओ फौजी भेखमे रहथि । मुँहसँ कनी-कनी दारु भभकि रहल छल । की करितहुँ? जान बचबैत रहि गेलहुँ। शायिकाक दुनू दिस दूगोटे तेना बैसि गेल रहथि जे हमरा सुतल रहब संभव नहि छल । अस्तु,हमहूँ उठि कए बैसि गेलहुँ । रेल आगू बढ़ैत रहल । आगरा अबैत-अबैत दुनूगोटे उतरि गेल रहथि। शायिका खाली भए गेल रहए । बाहर फरीछ भए रहल छलैक। श्रीमतीजी सेहो उठि गेल रहथि । चाहक अमल जोर पकड़लक । ताबे केओ अबाज देलक-“चाह, चाह ।” हम चिकरि कए ओकरा दू कप चाह देबाक आग्रह केलिऐक । कनी कालक बाद चाह बला दूकप चाह देलक । चाह की छल लागल जेना माँड़ पीबि रहल छी । मुदा उपाय की छल ? जौँ-जौँ फरीछ होइत गेल तँ- तँ ट्रेनमे बिना आरक्षणबला दैनिक यात्रीसभ पैसैति गेलाह । थोड़े कालक बाद तँ किछु एहन यात्रीसभ पैसलाह जे ट्रेनमे तास खेलाइत यात्रा करथि । ई हुनकर सभक नित्यक कार्यक्रम छल । तकैत-तकैत ओ सभ हमरे शायिकाक लग-पासमे बैसि गेलाह । हमरा आग्रह केलाह जे कातक शायिकापर चलि जाइ । उपाय की छल? हम ओतहि चलि गेलहुँ । ओ सभ तास खेलाइत रहलाह । ट्रेन आगू बढ़ैत रहल। अंततोगत्वा,हमसभ नईदिल्ली टीसन पहुँचलहुँ । जाइत-जाइत ओ सभ माफी सेहो मांगि लेलनि । पढ़ल-लिखल लोक जे रहथि । थाकल-ठेहिआएल हमसभ प्लेटफार्मपर उतरलहुँ।

एकबेर हमर श्रीमतीजी पटना राजधानीसँ दिल्ली आबि रहल छलीह । संगमे हमर पुत्र क्षितिज सेहो रहथि । हम नई दिल्ली टीसनपर हुनकर प्रतीक्षा कए रहल छलहुँ । रेलक आगमन समय भए गेल छल । तथापि ओ आबि नहि रहल छल । पता लागल जे रेल गाजिआबादमे अड़कल अछि । बहुत कालक बाद अजमेरी गेट दिस ओहि रेलक आगमनक सूचना प्रसारित होमए लागल । हम फाटके लग ठाढ़ रही जाहिसँ हुनका लोकनिकेँ कोनो दिक्कति नहि होनि । मोनमे सोची जे राजधानीसँ आबि रहल छथि तेँ कोनो परेसानी नहि भेल हेतनि । नीकसँ खेने हेतीह । मुदा भेल उल्टे । दुनूगोटे बहुत थाकल लागि रहल छलाह । बुझेबे नहि करए जे बात की भेलैक? एतेक परेसान किएक लागि रहल छथि? सामानसभ गाड़ीमे रखलाक बाद पुछलिअनि-

"रेल यात्रामे किछु कष्ट भेल की?"

कहए लगलीह- "ट्रेनमे भोजन बहुत दिक्कति भए गेलैक । यात्रीसभ पैंट्रीकारक सभटा सामान लुटि लेलकैक । जकरा जे हाथ लगलैक से लए कए निकलि गेल ।"

"एना भेलैक कोना?"

"बैरासभ किछु बोगीमे तँ नीकसँ भोजन करओलक । तकर बाद जेना अंठा देलकैक । ककरो भेटलैक केओ मुँहे देखैत रहि गेल। एही बातपर यात्रीसभ तमसा गेल । बड़ीकाल धरि हल्ला होइत रहल । तेँ गाजिआबाद टीसनपर आबि कए ट्रेन ठाढ़ भए गेल रहैक। बहुत कालक बाद कोना-ने-कोना ट्रेन खुजल ।"

आखिर ओ सभ डेरा पहुँचलथि आ जल्दीसँ चाह-पान केलथि । तखन जान-मे-जान अएलनि ।

एकबेर हमरा श्रीमतीजी आ सासुक संगे गरीबरथसँ दिल्लीसँ मधुबनी जेबाक रहए । आनंद विहार टीसनपर पहुँचलाक बाद लगबे नहि करए जे इहो दिल्लीमे छैक । यात्रीसभक बगए-बानिसँ लगैत जेना दरभंगा टीसनक प्लेटफार्मपर ठाढ़ छी । लोकसभ अपन-अपन गोल बनाकए समानक रक्षा करैत गप्प-सप्पमे लागल छलाह । ट्रेन अएबामे अनावश्यक विलंब भए रहल छल जखन कि ओकरा ओतहिसँ बनि कए चलबाक रहैक । ओहि समयमे आनंदविहार टीसन बनले रहए । ओतेक घेर-बेर नहि रहैक। मुदा यात्रीसभ ठसाठस भरल छल। ट्रेनक आगमनमे विलंब देखि हमसभ प्लेटफार्मेपर बैसि गेलहुँ । कनीके हटि कए पचीस-तीस गोटेक एकटा गुट छल । ओहिमे किछुगोटे बैसल तँ किछु गोटे ठाढ़े रहथि । ककरो हाथमे झोरा तँ ककरो हाथमे मोटा छल । केओ अपन दूधपीबा नेनाकेँ दूध पिआ रहल छलि । माने ओकरासभकेँ देखलाक बाद कोनो तरहें नहि लागल जे ओ सभ यात्री नहि छथि । किछुकालक बाद ट्रेन प्लेटफार्मपर आएल। चारूकातसँ यात्रीसभ ट्रेन दिस दौड़ल । कनीके कालमे हाल एहन भए गेलैक जे ट्रेनक कोनो डिब्बामे पैसि नहि सकैत छलहुँ । सभ डिब्बाक फाटकपर यात्री जेना-तेना लटकल रहए । आबकी कएल जाए? हमरसभक डिब्बा लगीचेमे रहए । मुदा ताहिसँ की? फाटकपर हाल देखि ओहिमे पैसबाक साहस नहि होअए । मुदा ट्रेनमे चढ़बाक तँ छलहे । आखिर श्रीमतीजीकेँ सामानसभक रखबारी हेतु प्लेटफार्मपर छोड़ि सासुक संगे फाटक दिस बढ़लहुँ । फाटककेँ किछुगोटे तेनाक गछारने छल जे ओहिमे पैसले नहि होअए । हमर सासुक हाथमे डाली रहनि । जखन फाटकसँ आगा बढ़ल नहि भेल तँ वापस प्लेटफार्मपर आबि हुनकर डाली राखि

देलहुँ । हम दुनूगोटे फाटक लग फेरसँ पहुँचलहुँ। ताबे तँ डिब्बा ठसाठस भरि गेल छल । फाटकक कोनपर एकटा नवालिग छौंड़ा लटकल छल । ओकरा लाख प्रयास केलहुँ जे कनी हटए से कथी लेल हटत । जेना-तेना आगू बढ़बाक प्रयासमे हम दुनूगोटे आगू-पाछू भए गेलहुँ । ओ अपन शायिका धरि चलि गेलीह। हम वापस प्लेटफार्मपर श्रीमतीजीकेँ आनए गेलहुँ । सामानसभक संगे जेना-तेना फाटकसँ भीतर पैसलहुँ ।

श्रीमतीजी आगू आ हम हुनकर पाछू रही कि किछु गोटे धकमधुक्का करए लागल । हमर पैरमे केओ जोरसँ धक्का मारलक जाहिसँ सामान लेने हम धराम धए खसलहुँ। हाथक सामानसभ सौंसे डिब्बामे पसरि गेल । एहनो हालमे एकटा यात्री मदति करए नहि आएल । ताबे हमर सासुकेँ चिकरैत देखलिअनि-“काटि लेलक,काटि लेलक ।” ओ एतबा बजले हेतीह कि डिब्बाक दोसर फाटकसँ पचीस-तीसगोटे धराम-धराम कुदि गेल । ट्रेन ससरए लागल छल । हमर सासुक डाँरमे बान्हल बटुआमेसँ टाका,गहनासभ पाकेटमारीमे चलि गेल छलनि । ततेक सफाइ सँ काज केने छल जे हिनका किछु पता नहि चललनि। जखन अपन शायिकापर बैसि गेलीह तँ देखैत छथि जे बटुआ तँ अछिए नहि । मुदा जे हेबाक छल से भए गेल छल । ट्रेन क्रमशः गति पकड़लक आ हमसभ अफसोच करैत रहलहुँ जे बेकारे एहि ट्रेनमे चढ़लहुँ ।

ई बात सन् २०१० क थिक । हम श्रीमतीजीक संगे ट्रेनसँ अमृतसर जाइत रही । स्लीपर किलासमे हमरा दुनूगोटेक नीचाँक शायिका आरक्षित रहए । टीसनपर टेम्पुबलाकेँ भाड़ा देबाक हेतु ओ अपन झोरामेसँ टाका निकाललीह । टेम्पुबलाकेँ भाड़ा देलिऐक आ ओ चलि गेल । औ बाबू! ओतहिसँ किछु बदमाससभ

हमरासभक पाछा लागि गेल । हमसभ ई बात तँ तखन बुझलिऐक जखन अमृतसर अतिथि घरमे पहुँचि गेलहुँ । ताबे की सभ भेल से कहि रहल छी । ट्रेन खालिए जकाँ रहैक । हमसभ अपन-अपन शायिकापर बैसि गेलहुँ। रतुका समय रहैक । भोर होइतहि ट्रेन अमृतसर पहुँचि जइतैक । से एहि ट्रेनक खुबी छल । थोड़बे कालमे डिब्बा भरि गेल । हमसभ निचेन अपन-अपन जगहपर रही । बीच-बीचमे देखिऐक जे तरह-तरहक यात्रीसभ अबैत अछि,किछु काल रहैत अछि आ चलि जाइत अछि । किछु टीसनक बाद यात्रीक एकटा दोसर गुट आएल । ओहिमेसँ किछुगोटे हमरे लग-पासमे शायिकाक आरक्षण टीटीबाबूसँ कहि कए करा लेलक । किछुगोटे ऊपर तँ किछु गोटे नीचाँक शायिकापर बैसि गेल । हमसभ जखन भोजन करए लगलहुँ तँ ओहीमेसँ एकटा ऊपर बैसल यात्रीसँ किछु लेबाक उपक्रम करैत हमर श्रीमतीजीक भोजनमे कोनो चूर्ण खसा देलकनि । भोजनक बाद जखन ओ हाथ धोबाक हेतु शौचालय दिस बढ़लीह तखनो ओ सभ किछु चूर्ण एमहर-ओमहर छिड़िऔलक । किछुए कालक बाद हुनका ततेक निन्न लगलनि जे सुति रहलीह । मुदा हम जगले रही । हमरा निन्न हेबे नहि करए । भोरे ट्रेन अमृतसर टीसनक प्लेटफार्मपर पहुँचि रहल छल । हमसभ उठि गेल रही । ताबतेमे ओहीमेसँ एकटा यात्री हमर नाम लए कहैत अछि-

“मिश्राजी! यह चाभी का गुच्छा आपका है क्या?”

कहि ने के एकटा कुंजीक झाबा शायिकाक नीचाँ लटका देने रहैक । हम ओकरा दिस ध्यानसँ देखलिऐक तँ ई स्पष्ट बुझाएल जे हमर नहि अछि । अस्तु,हम मना कए देलिऐक । मुदा एहि बातसँ माथा ठनकल जे ईसभ हमर नाम कोना बुझलक?खैर! चुप्पे रहि

गेलहुँ । ई बात अखनो नहि सोचाएल जे ओसभ बदमास अछि ।ओ सभ चाहैक जे कहुना हमर ध्यान कनीको काल लेल एमहर-ओमहर होअए जाहिसँ ओ सभ हमर झोरामे सँ टाका निकालि सकए । थोड़ेकालक बाद ओहीमेसँ एकगोटे कहैत अछि-

“सीट ऊपर कर लीजिए । स्टेशन आने ही बाला है ।”

हम श्रीमतीजीक सामान नीचाँ राखि सीट ऊपर करए लगलहुँ । ताबतेमे केओ हमर झोरामे हथोरिआ देबए लागल । मुदा ओ किछु करितए ताहिसँ पहिनहि हमर श्रीमतीजी ओतहि ठाढ़ि भए गेलि । हम अपन शायिकापर बैसि गेलहुँ । एतबेमे फेर केओ चिचिआइत अछि-

“जल्दी उतरिए। स्टेशन आ गया ।”

ताबे हमसभ फाटक लग सामान लए कए आबि गेल रही। ओकरसभक प्रयास रहैक जे धक्का दी जाहिसँ हम खसी आ झोरा लए ओसभ भागि जाए । मुदा बँचबाक रहए । हम ओकरसभक बातमे नहि अएलहुँ । ओकरा कहलिऐक-

“आपको जल्दी है तो आगे बढ़ जाइए ।”

मुदा तखनो ई नहि बूझि सकलिऐक जे ई सभ असलमे बदमास अछि । ओ तँ जखन अतिथि गृह पहुँचि श्रीमतीजी धोकरा खोललथि तँ देखैत छथि जे सभटा टाका निकालि लेने अछि । आओर कोनो सामान नहि छुने छलनि । मुदा हमर धोकरा बाँचि गेल छल । रातिमे भोजनमे जे चूर्ण मिला देने रहनि तकर असर आब जोर पकड़ि रहल छलनि । थोड़बे कालक बाद हुनका अस्पताल लए जाए पड़ल । तखन बुझाएल जे ओ सभ सामान्य यात्री नहि अपितु एकटा गैंगक हिस्सा छल आ रस्ता भरि हमरा

लोकनिक टाका आ मूल्यवान सामान चोरेबाक फिराकमे लागल छल । बहुत मोसकिलसँ श्रीमतीजीकेँ डाक्टरसभ ठीक केलक । एतबे सन्तोष भेल जे जान बाँचि गेलनि । घुमनाइ तँ नहिए भए सकल ।

एकबेर हम जरूरी सरकारी काजसँ ट्रेनसँ जाइत रही । यात्राक कार्यक्रम आकस्मिक बनल आ हम रेलमे बिना आरक्षण चढ़ि गेल रही । मेरठक लगीचमे केओ अकस्मात पैर छुबि गोर लगैत छथि आ आग्रह करैत छथि -

"सर! अहाँ हमर शायिकापर बैसि जाउ ।"

हम पुछलिअनि-"अहाँ के छी? हमरा लेल अपन जगह किएक छोड़ि रहल छी?"

ओ उत्तर देलाह-"सर! अहींक कृपासँ हमरा नौकरी भेल।"

"से कोना?"

"हमरा तँ किछु नहि मोन अछि?"

"हम एसएससीक परीक्षामे सफल भए गेल रही । मुदा हमर कागज कोनो कारणसँ आपत्तिमे पड़ि गेल छल । संयोगसँ अहाँसँ एसएससी इलाहाबादमे भेंट भेल । अहाँ हमर संचिका ताकि कए सभटा काज कए देलहुँ जाहिसँ हमरा थोड़बे दिनमे नियुक्तिपत्र भेटि गेल।"

हम हुनकर बात सुनि अबाक रहि गेलहुँ । नौकरीक क्रममे एहन कतेक गोटेक काज होइते रहैत छैक । मुदा ओ युवक एहिबातक संज्ञान लैत हमरा आदरे नहि केलाह अपितु ओहन

भीड़मे अपन आरक्षित जगह दए देलाह,ताहि बातसँ हम बहुत आश्चर्यचकित रही ।

एकबेर हम इलाहाबाद(आब प्रयागराज)सँ पटना ट्रेनसँ जाइत रही । हमरा स्लीपरमे आरक्षण रहए । हम अपन शायिकापर बैसले रही कि डाक्टर जयकान्त मिश्रजीकेँ देखलिअनि । हुनका हाथमे एकटा झोरा रहनि आ ओ सीट तकैत एमहर-ओमहर बौआइति रहथि । हुनका आरक्षण नहि रहनि । कहलाह- “अकस्मात पटनामे एकटा कार्यक्रममे जेबाक हेतु बिदा भए गेलहुँ। आरक्षण नहि करा सकलहुँ ।” हम अपन शायिका हुनका दए देलिअनि । बहुत कालधरि ओ मना करैत रहलाह । परंतु,हमर आग्रह देखि मानि गेलाह । बादमे हमरो एकटा शायिका भेटि गेल।

रेल यात्रामे कैकबेर एहन लोकसँ भेंट भए जाइत अछि जकरा बिसरल नहि जा सकैत अछि । जिनकर बातक प्रभाव बहुत दूरगामी होइत अछि । एहने एकटा सहयात्री भेटि गेलाह दरभंगासँ दिल्लीक यात्रामे । ओ मुजफ्फरपुरमे हमरा सामने बला एसी शायिकापर रहथि । दिनक समय रहैक तँ यात्रीसभ बैसले रहथि । केओ किछु तँ केओ किछु करबामे व्यस्त रहथि । क्रमश: गप्प-सप्प प्रारंभ भेल । ओ अपन पैतृक संपत्तिक बटबाराक प्रसंगमे गप्प करैत-करैत कैकबेर भावुक भए जाथि । कहए लगलाह-

“जखन करवनो गाम गेलाक बाद बटबाराक चर्चा करितहुँ तँ भाए सासुर चलि जाइत छलाह । हुनका बूझल रहनि जे किछु दिनक बाद हम वापस भए जाएब । तेँ दस दिनक बाद अबितथि आ तरह-तरहक कबाइत पढ़ए लगितथि । आपसी झंझटिक डरसँ सहर वापस चलि आबी । एहिना कैकबेर होइत रहल । अंतमे, एहि विषयक चर्चे छोड़ि देलहुँ । तकर बाद तँ गाम गेलाक बाद पाहुन

जकाँ स्वागत होइत छल । भाएक हाथमे किछु टाका दए दिअनि। ओ सपरिवार खूब सेवा करथि। नीकसँ गप्प-सप्प करथि । हमहूँ प्रसन्नतासँ रहैत छलहुँ आ ओहोसभ ।”

कतेक तरहक व्यक्तिगत अनुभवसभ कहैत रहलाह जे सुनि बहुत जानकारी भेटल । दिल्लीमे ट्रेनसँ उतरबासँ पहिने ओ अपन मोबाइल नंबर सेहो देलनि। मुदा तकर बाद फेर कहिओ गप्प नहि भए सकल । मुदा हुनकर बातसभ मोन पड़िते रहैत अछि।

एकबेर हम गरीबरथ ट्रेनसँ मधुबनीसँ दिल्ली जाइत रही । सामनेक शायिकापर एकटा महात्माजी आ तकर ऊपर हुनकर चेला शंकर रहथि । हमरा संगे हमर श्रीमतीजी सेहो रहथि । शंकर महात्माजीक सेवामे लागल रहैत छल । जखन तमाकुलक काज भेल तँ से चुना कए देलक । पानिक काज भेल तँ बोतलमेसँ पानि निकालि कए देलक । भोजनक समय झोरामे सँ भोजन निकालि कए देलक । तकरबाद तरह-तरहक दबाइसभ देलक । सभ किछु खेलाक बाद निन्नक गोटी सेहो देलकनि । तखन कहलखिन जे कनी मोटका कंबल निकाल । शंकर मोटका कंबल ओढ़ा देलकनि । तखन प्रसन्न भए महात्माजी बजैत छथि-“आब जतेक एसी धुकबाक होइक से धुकओ । हम तँ पड़लिअनि ।” ताहिसँ पूर्व महात्माजी रहि-रहि कए दिल्ली स्थित अपन आश्रममे चेलासभकेँ फोन कए हाल-चाल लैत रहलाह । ओहीक्रममे पता लगलनि जे केओ भक्त पचीस हजार टाका दए गेलैक अछि । आब तँ महात्माजी बेस चिंतामे पड़लाह । होनि जे कहीं चेलासभ टाका एमहर-ओमहर ने कए देथि । तेँ रहि-रहि कए फोनपर वारंबार कहैत रहलखिन जे ओहि टाकाकेँ सम्हारि कए राखल जाए आ हुनका दिल्ली अएलापर देल जाए । गप्प-सप्पक क्रममे ओ कहलाह जे

हरिद्वारमे हुनका बड़ीटा आश्रम छनि । हमरासभकेँ हरिद्वार आश्रमपर अएबाक आग्रह सेहो केलाह । दोसरदिन भोर होइतहि ओ चेलासभकेँ फोन करए लगलाह । कोन प्लेटफार्मपर ट्रेन अड़कतैक तकर जानकारी लेलथि । केओ भक्त कार लए टीसनपर हुनकर स्वागत करबाक हेतु भोरेसँ ठाढ़ छलाह । ट्रेन तीन घंटा विलंब चलि रहल छल । मुदा हुनकर भक्त टस सँ मस नहि भेलथि। कार लेने प्रतीक्षा करैत रहलथि । आनंद विहार टीसनपर ट्रेन पहुँचि गेल छल । हुनकर भक्तसभ डिब्बामे पैसि गेल । बहुत आग्रहपुर्वक हुनका बाहर लए गेल । मुदा हुनकर ध्यान निरंतर पचीस हजार टाका पर छल । ओ सभसँ पहिने अपन चेलासभसँ तकरे जिज्ञासा केलथि आ सभ तरहें आश्वस्त भेलाक बादे आगू बढ़लाह । हमहूँसभ ट्रेनसँ उतरि गेलहुँ । महात्माजीक ठाठ-बाट भरि रस्ता मोन पड़ैत रहल ।

रेल यात्राक एकटा मनोरंजक अनुभव भेल रहए जखन हम गरीबरथमे आनंद विहारसँ मधुबनी जाइत रही । ई ट्रेन सोझे गाम पहुँचा दैत छलैक,सामान्यतः विलंब नहि होइत छलैक, टिकट अपेक्षाकृत आसानीसँ भेटि जाए आ एसी सेहो रहैक तेँ गाम जेबा काल एहि ट्रेनमे यात्रा होइते रहैत छल । हम जेना-तेना अपन-अपन शायिकापर बैसि गेलहुँ । थोड़े कालक बाद ट्रेन अपन गति पकड़लक । डिब्बामे दिल्लीसँ गाम लौटि रहल कतेको युवक सभ छलाह । सभक हाथमे मोबाइल आ ताहिमे चलैत भोजपुरी गाना। जकरा जतेक जोरसँ मोन होइक ततेक जोरसँ बजा रहल अछि सौंसे डिब्बामे तरह-तरहक संगीत बाजि रहल छल । कुलमिला कए ओ संगीत नहि एकटा कोलाहलक रूप धए लेलक। लगैत छल जे कान

फाटि जाएत । जहन बरदास्तसँ बाहर भए गेल तँ एकगोटेकेँ टोकलिऐक-

“कनी अबाज कम कए दहक । कानमे झर पड़ि रहल अछि ।”

“से किएक? हम कोनो टिकट नहि लेने छी । हम अपना सीटपर बजा रहल छी । एहिमे अहाँक आपत्ति करबाक कोन अधिकार?”

चारूकात ओकरेसन लोक भरल रहैक । तेँ बेसी बजनाइ ठीक नहि बुझाएल । चुप्प भए गेलहुँ । बहुत मोसकिलसँ समय कटल। घंटा भरिक बाद जखन टिकट परीक्षक अएलाह तँ हुनका सभटा बात कहलिअनि । ओ ओकरापर बहुत जोरसँ तमसेलखिन तखन जा कए मोबाइलक नाच-गानसभ बंद भेल । जानमे -जान आएल । एहि यात्राक बाद गरीबरथसँ यात्रा केनाइ छोड़ि देलहुँ ।

एकबेर हम नई दिल्लीसँ मधुबनी प्रथम श्रेणी एसीमे जाइत रही । छपरामे एकटा यात्री ओहि मे हमरासभ लग पहुँचलाह। ओहिसँ पहिने ओहि कुपेमे हमही असगरे रही । मुजफ्फरपुरसँ निकललाक बाद ट्रेनक गति मंद होमए लागल। एक-एक टीसनपर ठाढ़ भए जाइत छल आ आगू घुसकबाक नामे नहि लैत रहैत छल । मुजफ्फरपुरसँ दरभंगा पहुँचबामे ओहि ट्रेनकेँ सात घंटा समय लागि गेलैक । बीचमे ओहि यात्रीसँ गप्प होइत रहल । ओ छपरामे पुलिस विभागमे डीएसपी छलाह । एतेक भारी अधिकारी छलाह ओहो पुलिसमे तखन टिकट लेबाक कोन काज? ओ कहलाह जे छपरामे काज करैत छथि आ डेरा छनि दरभंगामे । तेँ ओ बेसी काल ओहि ट्रेन सँ जाइत-अबैत रहैत छथि । प्रथम

श्रेणी एसी खाली रहैथ छैक तँ ओही डिब्बामे यात्रा करैत छथि । से तँ बुझलहुँ । मुदा आश्चर्य भेल जे जखन साल-डेढ़ सालक बाद फेर ओही ट्रेनसँ हम जाइत रही तँ प्रथम श्रेणी एसीक कुपमे छपरामे ओ हमरा फेर भेटि गेलाह । हम हुनका चिन्हि गेलिअनि आ कहबो केलिअनि जे पछिला बेर अहाँ एही ट्रेनमे हमरा भेटल रही । एहि बातपर ओ हँसैत कहलाह जे आब ओ सेवानिवृत्त भए गेल छथि आ किछुदिनक बाद ओ दरभंगे रहए लगताह । तखन हुनका ओहि ट्रेनक चक्कर छुटि जेतनि ।

सुविधा-असुविधाक गप्प जौँ छोड़ि देल जाए तँ कुल मिला कए ट्रेन यात्रा बहुत शिक्षाप्रद भए सकैत अछि । बहुत किछु सिखबाक,जानबाक स्वतः आ स्वाभाविक अवसर भेटैत अछि । एहिक्रममे स्वर्गीय संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजीक रेलयात्राक चर्च बहुत प्रासंगिक अछि । एकबेर ओ ट्रेनसँ किछु संतसभक संगे दक्षिण भारतक यात्रापर जाइत रहथि । ओहि समयमे ओ मौन लेने रहथि। तेँ सहयात्रीसभसँ गप्प नहि कए पाबथि । संयोगसँ किछु सहयात्रीसभक संगे शायिकाक हेतु विवाद भए गेल । ब्रह्मचारीजी मौनमे हेबाक कारण किछु बाजथि नहि । मुदा ओ सभ अंट-संट बजैत रहल । ब्रह्मचारीजीक संगीसभ अपना भरि हुनका सभकेँ बहुत बुझओलखिन मुदा तकर कोनो असर नहि भेल । सहयात्रीसभक आक्रमकता बढ़िते गेल । ओ सभ ब्रह्मचारीजीक माथक केस पकड़ि कए खीचए लगलाह । कैकटा केस उखरि गेलनि । एहि कारणसँ हुनका माथमे बहुत दर्द होमए लगलनि । मुदा ब्रह्मचारीजी अबाक भेल सभटा सहैत रहलाह । किछु कालक बाद हुनकर गंतव्य टीसनपर रेल ठाढ़ भेल । हुनकर स्वागत हेतु बहुत रास लोकसभ टीसनपर आएल छल । आब हुनकर

सहयात्रीसभकेँ हुनकर असली परिचय पता लगलनि । ओसभ बहुत दुखी भेलाह । वारंबार हुनकासँ क्षमा मागि रहल छलाह । मुदा आब अफसोच केलासँ की होइत? जे हेबाक छल से भए गेल छल । ब्रह्मचारीजी बिना किछु बजने रेलसँ उतरि अपन शिष्यसभक संगे आगू बढ़ि गेलाह । ओ तँ पहुँचल संत छलाह,सभकिछु बिसरि गेल हेताह । मुदा सामान्य आदमी रहैत तँ एहन घटनाक बाद मोकदमा करैत, थाना -पुलिस लग जाइत । अपनो परेसान होइत आ सहयात्रियोकेँ करैत ।

जीवन छैक तँ नीक बेजाए लगले रहतैक । तेँ लोक अपना भरि संभव प्रयत्न करैत अछि जे यात्रा मंगलमय होइक । यात्रा चाहे कोनो ट्रेनमे करैत होइ ,कोनो किलासमे करैत होइ मुदा ई बात ध्यान राखब जरूरी थिक जे यात्रा कए रहल छी,ट्रेनमे बैसल छी,घरमे नहि छी । भने अहाँकेँ आरक्षण होअए मुदा आनो यात्रीसभक यात्रा ओतबे महत्वपूर्ण रहैत अछि जतेक अपन । तेँ आपसी सहमति आ सहयोगक भाव रहलासँ यात्रा बेसी सुखकर भए सकैत अछि ।

असल मानेमे ई जीवनो एकटा यात्रा थिक । रंग-विरंगक लोक, नाना प्रकारक स्थानसँ जाइत हमसभ अंतमे अंतिम टीसनपर पहुँचि जाइत छी आ तकर बाद सभकिछु एतहि छोड़ि जाइत अछि। इएह थिक जीवन ।

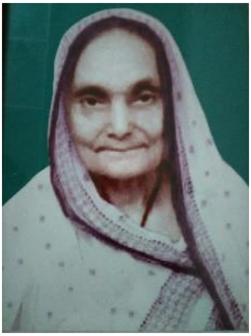

१९

माएक नाम पत्र

परम पूजनीया माए,

सादर प्रणाम।

कतेको दिनसँ मोन होइत छल जे अहाँकेँ चिठ्ठी लिखी । अपन मोनक बातसभ कही । जहिआसँ अहाँ हमरा लोकनिकेँ छोड़ि कए चलि गेलहुँ तहिआसँ हमर मोनमे जे शून्यता आएल तकरा पत्र लिखि किछु कम करबाक प्रयास करी । मुदा अपने मोनक अन्तर्द्वंदक कारण कलम आगू नहि बढ़ि पबैत छल । जहिना हाथमे ली तहिना राखि दी । मोन स्थिर हेबे नहि करए । ई किएक होअए? कहि नहि मोन कतए सँ कतए पहुँचि जाइत छल । ओना तँ मोनक गति अपार होइत अछि । क्षणेमे कतए सँ कतए पहुँचि जाइत अछि । हमरा अहाँकेँ जतए पहुँचएमे मासो लागि सकैत अछि ताहिठाम मोन क्षणभरिमे पहुँचिएटा नहि जाइत अछि,अपन क्रिया-प्रतिक्रिया धरि दए दैत अछि । तेँ अहाँकेँ एहि दुनिआसँ चलि गेलाक बादो हमरा साहस भेल जे अहाँकेँ चिठ्ठी

लिखी । हमरा ई विश्वास भेल जे हमर मोन एकरा अहाँ जतए कतहु होएब अवश्य पहुँचा देत । ततबे नहि अहाँक कुशल-क्षेम सेहो कहत । चिठ्ठी उतारा सेहो आनि देत । एतेक बाद सोचलाक बादो अहाँक गेलाक तीन सालसँ बेसीए बीति गेल । मुदा हम अहाँकेँ चिट्ठी नहि पठा सकलहुँ । जखन कखनो असगर होइतहुँ कि मोन दौड़ए लगैत छल । माथमे तरह-तरहक विचार भरि जाइत छल । हमरा मोनमे रहि-रहि कए ई बात उठैत रहैत अछि जे अहाँक जेबाक अखन समय नहि भेल छल । उचित प्रयाससँ अहाँकेँ एहि संसारकेँ छोड़बासँ रोकल जा सकैत छल । मुदा ई बात ध्यानमे अबितहि जेना मोन स्वयंमे फँसि जाइत छल । एहि तरहेँ कतेको बेर प्रयास कएल । मुदा बात जस-के-तस रहि गेल ।

हमरा मोने अछि जे अहाँ केना चारिए बजे भोरसँ भानसक ओरिआनमे लागि जाइत छलहुँ जाहिसँ गामसँ कतहु जेबासँ पहिने हम भोजन कए ली । जखन हम गामेपर रहि परीक्षासभक तैयारी करैत छलहुँ तँ अहाँ हमरा लगीचमे बैसलि औंघाइत रहैत छलहुँ । भरिदिनक थाकल-ठेहिआएलि अहाँकेँ विश्राम जरूरी रहैत छल । मुदा जाबे हम पढ़ैत रही,ताबे अहाँ हमर प्रतीक्षा करैत रही । दूपहर रातिमे हम दुनूगोटे भोजन करी । ताबे घरमे सभगोटे सुति गेल रहथि । सौंसे गाम निःशब्द भए गेल रहैत छल । जखन हम परीक्षा देबए गामसँ दरभंगा बिदा होइत छलहुँ तँ लोटामे पानि भरने अहाँ हमरा आगूमे ठाढ़ भए जाइत छलहुँ जाहिसँ हमर यात्रा बनए,परीक्षा खूब नीक होअए । गोर लगलापर एक पथिआ आशीर्वाद दैत छलहुँ।

हमरा मोन पड़ैत अछि जे जखन हम गामसँ वापस दिल्ली बिदा होइ तँ केना अहाँ बहुत दूर धरि अरिआति दैत छलहुँ । केना

जाइत-जाइत पेन,कागज,पता लिखल लिफाफासभकेँ जोगा कए रखबा लैत छलहुँ जाहिसँ हमरा चिठ्ठी लिखल करब । चिठ्ठी अहाँ लिखबो करी । कैक बेर अपने हाथे ,कैकबेर केओ आन लिखि दैत छल । सभ चिठ्ठीमे आशीर्वादक वर्षा केने रहैत छलहुँ । हम करोड़पति भए जाइ,हमर बच्चासभ खूब सुखी रहए,हमरा सभ तरहेँ बरक्कति होअए।

हमरा मोने अछि जे जखन हम नेना रही तँ अहाँ हमरा हेतु कतेको बेर कैकगोटेसँ झगड़ा केने रही । जँ केओ हमरा किछु कहि देलक तँ ओकर भगवाने मालिक । हमरा मोन अछि जे नानी एकबेर कहने रहए-“बौआक पैर नाना सन छैक।”एहि बातसँ अहाँ कतेक दुखी भेल रही । कारण नाना तँ बहुत पहिने मरि गेल रहथि। तेँ हुनकर पैरसँ तुलना करब अशुभ छल।

अगस्त २०१३मे कोनो बात लए कए अहाँकेँ गाममे पुतहुसँ झगड़ा भए गेल । पुतहुसँ झगड़ा कोनो नव बात नहि छैक। सभठाम होइते रहैत छैक । मुदा अहाँकेँ कोनो बात गड़ि गेल। अहाँ घरसँ माधबीक ओहिठाम चलि गेल रही । ओहिठाम दसदिन रहि गेलहुँ। ओसभ अहाँकेँ बहुत मानलथि,बहुत आदर केलथि । मुदा घरबैआ अहाँकेँ बजबए नहि गेलथि । एहि बातसँ अहाँकेँ बहुत दुख भेल रहए। हम ई समाचार सुनि दिल्लीसँ गाम गेल रही । बेतिआसँ राधे बहिन सेहो आएल रहथि । माहौल ठीक नहि देखि हम आ राधे बहिन बहुत आग्रह कए अहाँकेँ दरभंगा स्थित अनुजक डेरापर दए आएल रही । अहाँकेँ दरभंगा जेबाक एक्को पाइ इच्छा नहि रहए । मुदा हमही जोर देलहुँ कारण हमरा अनुमान रहए जे अहाकेँ ओतए आराम होएत । दरभंगा पहुँचि कए किछुदिन अहाँ बहुत प्रसन्न रही। कही जे लगैत अछि जेना स्वर्गमे आबि गेल छी। मुदा थोड़बे

दिनक बाद अहाँकेँ ओतहु मोन उचटि गेल , वापस गाम जेबाक इच्छा होमए लागल । जेना-तेना छओमास ओतए रहि अहाँ गाम वापस आबि गेलहुँ । गाम अएलाक बाद हमरासँ फोनपर गप्प भेल छल । एहिबातसँ अहाँ बहुत प्रसन्न भेल रही जे अहाँक सभटा व्यवस्था गामेमे कएल जाएत जाहिसँ अहाँ नीकसँ ओतए रहि सकी। ...एहिबातसँ प्रसन्न भए अहाँ कतेक काल धरि गीत गबैत रहि गेल रही तकर बाद हम गाम गेलो रही । ककरा-ककरा ने कहने रहिऐक जाहिसँ अहाँक सेवाक हेतु केओ सेवक भेटि जाए। जकरे कहिऐक से कहैत - करितहुँ किएक नहि । मुदा डर लगैत अछि।

फरबरी २०१४मे जखन अहाँ दरभंगासँ गाम वापस अएलहुँ तँ नङराइत रही । अहाँकेँ दरभंगामे ठंढ लागि गेल रहए । तकरबाद कनी-कनी नङराइते रहि गेलहुँ । अहाँक डांर क्रमशः झुकैत गेल । देह कमजोर होइत गेल । तैओ अहाँ अपने हाथे सभ काज करी । अपन चाह,जलखै,भोजन स्वयं बनाबी । ककरोपर आश्रित होएब अहाँकेँ पसिंद नहि रहए । नब्बे वर्षक आयु धरि अहाँक इएह दिनचर्या रहए । तकरबाद अहाँक शरीर कमजोर होइत चलि गेल। तथापि अहाँक इच्छा रहैत छल जे फराके रही,गाममे रहि रहल अपन पुत्रक आश्रममे साझी नहि होइ । जखन कखनो हम गाम जाइ एतबे बात अहाँ कहैत रहैत छलहुँ । हम प्रयासो करी जे केओ आदमी तेहन भेटि जाइत जे अहाँकेँ नियमित सेवा करैत । मुदा से संभव नहि भेल ।

अक्टूबर २०१४मे गामपर एकदिन अहाँकेँ बहुत जोरसँ चक्कर आएल रहए । अहाँ बारीमे खसि गेल रही । हमरा तुरंत फोन आएल । ओहि समय हम वैशाली मेट्रो टीसनपर ठाढ़ मेट्रोरेलक प्रतीक्षा करैत रही । अहाँ बहुत परेसान रही । कोनो निराकरण नहि

बुझाइत छल । तकरबादे फेरसँ अहाँकेँ दरभंगा अनुजक डेरापर पठेबाक ब्योंत केने रही । बहुत अछता-पछता कए अहाँ दरभंगा जेबाक हेतु तैयार भेल रही। रोहिनी बहिन सतलखासँ आबि-आबि अहाँक चीज-बस्तुसभकेँ सम्हारने रहथि । एक-एकटा सामानक पूरा हिसाब अहाँकेँ मोन रहैत छल । हमरा आग्रहपर अहाँ दरभंगा गेलाक बाद बहुत आफियतमे रही । मुदा ई प्रसन्नता बेसीदिन नहि रहल । अक्टूबर २०१४मे हम ट्रेनसँ साढ़ूक आकस्मिक निधनक बाद नागपुर जाइत रही । ट्रेनेमे दरभंगासँ हमर भातिज फोन केलथि-

"दाइ भोरे खसि पड़लैक । ओकर जांघमे बहुत दर्द भए रहल छैक ।" ओएहसभ कहलाह जे हुनकर पिता बैंक जा चुकल छथि। तकरबाद जीवानंद(हमर भागिन)केँ फोन केलिअनि । ओ अहाँकेँ लगीचेमे कोनो नर्सिंग होममे भर्ती करओलथि । ओहीदिन साँझमे अनुज(सत्येन्द्रजी) सपरिवार छठि करबाक हेतु राँचीसँ दरभंगा अपन सासुर पहुँचल रहथि । हुनका सभकेँ ई समाचार पता लगलनि । तकरबाद ओ सभ जी-जानसँ अहाँक सेवामे जुटि गेल रहथि । हमर चिंता किछु कम भेल रहए । नागपुरसँ दिल्ली लौटितहि हुनका फोन केने रहिअनि । किछु टाका सेहो पठओलिअनि आ अपने दोसरे दिन दरभंगा ट्रेनसँ बिदा भए गेल रही ।

दरभंगाक नर्सिंग होममे अहाँकेँ एकसप्ताहक बाद घर जेबाक अनुमति भेटि गेल । मुदा दरभंगामे हमर भतीजीक बिआह किछुए दिनक बाद हेबाक छल । तेँ हुनका लोकनिक सुविधाक ध्यान रखैत अहाँ बीसदिन आओर नर्सिंग होममे राखल गेलहुँ। दरभंगा नर्सिंग होममे मासदिन रहलाक बाद दिसम्बर २०१४मे अहाँ

अनुजक शुभंकरपुर(दरभंगा) स्थित घरपर चलि गेल रही । अहाँक स्वास्थ बहुत सुधरि गेल रहए। मुदा टांग सभदिन हेतु विकलांग भए गेल रहए । अपनेसँ चलि-फिरि नहि पाबी । ई एकटा बड़का संकट भए गेल। तकरबाद तँ अहाँक जिनगी बहुत कठिन भए गेल ।

अहाँकेँ एहिबेरक दरभंगाक यात्रा नहि धारलक । हमरा बहुत अफसोच होअए जे किएक हम अहाँकेँ दरभंगा जेबाक हेतु कहलहुँ। गामपर ओ सभ बहुत रोकैत रहथि । दिल्लीसँ हमर भातिज सेहो रोकलथि । मुदा हमरा भेल जे दरभंगामे अहाँ बेसी आरामसँ रहि सकब। मुदा भावी प्रबल । आइधरि हमरा मोनमे एहि निर्णयक कारण क्षोभ अछि,दुख अछि । दरभंगा डेरासँ धिआ-पुतासभ अहाँकेँ रिक्सासँ लगीचेक नर्सींग होमे भर्ती करा देलथि । ओ डाक्टर काय चिकित्सक (फीजीसिअन) रहथि,हुनका हड्डीक मामिला नहि देखबाक चाहैत छल । मुदा ओ हमरा लोकनिकेँ आश्वस्त करैत रहलाह जे अहाँकेँ ठीक कए देताह । शल्यक्रिया करब एहि बएसमे ठीक नहि होएत । तेँ ट्रैक्सनपर राखि हड्डीकेँ जोड़ि लेताह। दुनूपैर कनी-मनी छोट-पैघ रहतैक । हमरो ई व्यवस्था सुगम बुझाएल । यद्यपि दिल्लीक डाक्टर फोनपर कहने रहथि जे शल्यक्रिया जरूरी अछि । बादमे तँ जे भेल से सभ जनिते अछि । अहाँक हड्डी बहुत छोट-पैघ भए गेल । ततबे नहि , ओ उल्टा से जोड़ा गेल ।

फरबरी २०१५मे गाममे हमर भतीजीक बिआह रहैक । ओहिमे अहाँ गाम गेलहुँ । मुदा गाममे की भेल की नहि, पन्द्रह दिनक भीतरे अहाँ अंतिम हालतपर पहुँचि गेलहुँ । धन्य कही दरभंगाबला अनुजकेँ जे गाममे सभक विरोधक अछैत असगरे

अहाँकेँ दरभंगा ओही नर्सिंग होममे भर्ती करा देलथि । गाममे केओ नहि चाहलक जे अहाँ इलाजक हेतु दरभंगा जाइ ।

“आब हिनकर की इलाज हेतनि । केहन बढ़िआँ अपन डीहपर मरतीह ।”

हम जखन दूपहर रातिमे दिल्लीसँ दरभंगा ओहि नर्सिंग होममे पहुँचलहुँ तँ अहाँ नहि चिन्हाइत रही । आक्सीजन लागल रहए । मुँह-कान सभ भयावह लागि रहल छल । हम अबिते अनुजकेँ पुछलिअनि-

“माए कहाँ छथि?”

ओ इसारासँ देखेलथि । अहाँक हालत देखि गुम्म पड़ि गेल रही । दरभंगाक डाक्टर सेहो आश्चर्यचकित रहथि –

“पन्द्रह दिनक भीतर हिनकर एहन हाल कोना भए गेलनि?”

अपना भरि ओ बहुत प्रयास केलाह । महग-महग जीवनरक्षक सूइआसभ देल गेलनि । भोरे-भोर अहाँ आँखि खोलि देलहुँ । ततबे नहि बजनाइओ शुरु कए देलहुँ । अहाँ बहुत अबल भए गेल रही । तथापि बेर-बेर कही-

“हमरा रातिमे भगवती दर्शन देलनि अछि । ओ लाल टुह-टुह नुआ पहिरने छलीह ।”

अहाँ हमरा भोरे श्यामा मंदिरमे भगवतीकेँ प्रसाद चढ़बए पठओने रही । हम प्रसाद चढ़ा कए वापस मंदिर परिसरसँ बाहर निकलैत रही कि दू-तीनटा बुढ़बा बानर हमर प्रसाद लुटि लेलक। आब की करी? बिना प्रसाद लेने कोना वापस जइतहुँ । अहाँ प्रसाद मंगितहुँ तँ की करितहुँ? फेरसँ प्रसाद श्यामा माइकेँ चढ़ओलहुँ।

एहिबेर बहुत सावधानीसँ प्रसादकेँ नुका लेने रही । प्रसाद लए कए वापस भेल रही तँ अहाँ कतेक प्रसन्न भेल रही । लगबे नहि करैत जे रातिमे अहीं मृतमान शायिकापर पड़ल रही । सभ किछु ठीक-ठाक भेल जाइत छल । तेँ हम अनुजक शुभंकरपुरक घरपर जाए स्नान केलहुँ ,भोजन केलहुँ आ फेर अहीं लग वापस आबि गेलहुँ । ताबे तँ अहाँ बहुत फरहर भए गेल रही ।

मार्च-अप्रैल २०१५मे दरभंगा नर्सिंग होममे अहाँ मास दिनसँ बेसी पड़ल रही । डाक्टरक बिल से अनावश्यक बढ़ल जाए। तरवन हम अनुजकेँ गाम फोन केलिअनि । टिकट पठा देलिअनि। डाक्टरक बिलक भुगतान आनलाइन केलहुँ । ओ अहाँकेँ बहुत मोसकिलसँ असगरे इन्दिरापुरम स्थित हमर डेरा लेने आएल रहथि। अहाँ बेर-बेर कही-

“रस्तामे ओ बहुत सेवा केलक, बहुत कष्ट सहि हमरा एतए धरि अनलक ।ओकरसभ गलती माफ ।”

हमर डेरापर अएलाक बाद अहाँ बहुत प्रसन्न रही । देह रोगा कए काँट-काँट भए गेल छल । पेशाबक मार्गमे नली लागल छल जाहि कारण वारंबार संक्रमण भए जाइत छल । धन्यवाद अछि डाक्टर एस.के जैन केँ जे राम मनोहर लोहिआ अस्पतालमे बहुत ध्यानसँ इलाज केलथि जाहिसँ अहाँक स्वास्थमे बहुत सुधार भेल । हमरा डेरापर अहाँ सातमास रहलहुँ । दिन-राति सेवा करैत करैत हमर श्रीमतीजी परेसान रहथि । कैकबेर हमरा अनुपस्थितिमे पैखाना लए जाए पड़ैत छलनि । ताहिसँ हुनकर डांरक हड्डीमे दर्द शुरु भए गेल रहनि । सभसँ मोसकिल होइत छल जखन अहाँ पानि गिजनाइ शुरु करी आ पानि लगसँ हटबे नहि करी । कैक बेर हमरो कना जाइत छल । तेहन विकट परिस्थिति भए जाइत छल जे

ककरो तामस भए जइतैक । मुदा अहाँ तँ लाचार रही । पानि छुबाक अहाँकेँ मनोवैज्ञानिक बिमारी छल ।

हमरा संगे इंदिरापुरमक फ्लैटमे सातमास रहबाक समयमे अहाँक स्वास्थ्यमे बहुत सुधार भेल रहए। कैकटा बेडसोर क्रमशः ठीक भए गेल । अहाँ वाकरक सहयोगसँ थोड़ बहुत चलिओ लैत छलहुँ। भोर-साँझ घुमाओल जाइत तँ अहाँ बहुत प्रसन्न होइत छलहुँ । सोसाइटीक मंदिरमे साँझमे हनुमान चालीसाक पाठ करैत छलहुँ । कैकटा वयोवृद्धसभ अहाँक हाल-चाल पुछथि । अहाँ इन्दिरापुरमसँ चलिओ गेलहुँ तरवनो हुनका लोकनिक अहाँक जिज्ञासा बनल रहनि । ओ सभ अहाँक बारेमे पुछैत रहैत छलाह । अहाँकेँ दिल्ली घुमबाक बहुत इच्छा रहैत छल । मुदा शारीरिक असमर्थताक कारण से नहि भए पाबए । तथापि,हमरा संगे अहाँ अक्षरधाम,योगमाया मंदिर आ कुतुब मीनार देखि कए बहुत प्रसन्न भेल रही ।

अहाँ हमरा संगे इंदिरापुरमक डेरापर रही जरूर मुदा अहाँक मोन सदिखन गामेमे लटकल रहैत छल । करवनो कहितहुँ जुलीसँ गप्प करा दएह । करवनो कहितहुँ राधेसँ गप्प करा दएह। करवनो रोहिनी बहिनसँ गप्प करबाक मोन होइत । रहि-रहि कए गामक गप्प-सप्प करितहुँ । जखन चंद्रधर काकाक देहांतक समाचार सुनने रही तँ अहाँकेँ बहुत दुखी देखने रही । हुनकासभक बारेमे कतेको बात कहने रही । ओसभ पहिने अपनेसभक आङनमे रहथि । हुनकर माएसँ हमरासभकेँ बहुत नीक संबंध छल । जखन हुनकर माए दुखित रहथिन तँ कैकदिन अहाँ हुनका ओतहि रहि कए सेवा केने रहिअनि ।

अहाँकेँ इच्छा रहए जे गुरुग्राम स्थित हमर बहिनक ओतए किछु दिन रही । हमरा कहल करी-

“ओकरा ओहिठाम बहुत सुख होएत । तोरा ओतेक साधन नहि छह। ओहिठाम दूमास रहब । माए-बेटी भरि मोन गप्प करब । माए-बेटीकेँ आपसी बहुत सिनेह होइत छैक ।”

मुदा अहाँकेँ ओ अपन डेरा नहि लए गेलथि । संभवतः साहस नहि भेलनि । जखन हुनकासभकेँ नीकसँ बुझा गेलनि जे अहाँकेँ गाम जेबाक टिकट कटि गेल अछि तखन हमरा भागिन फोन केलथि-

“दो दिन के लिए नानीजी को हमारे यहाँ भेज दीजिए । हम एम्बुलेंस भेज देंगे । उनको कोई दिक्कत नहीं होगी ।”

आब जखन जेबाक समय छल तखन दू दिन लेल कतहु की करए जैतहुँ? हम मना कए देलिऐक । जातिओ गमेलहुँ आ स्वादो नहि पेलहुँ । तकरबाद ओसभ हमर आग्रहपर हमर डेरापर आबि कए भेंट कए गेल रहथि । अहाँ खुशीसँ नाचए लागल रही ।

अक्टूबर २०१५मे हम अहाँक संगे असगरे बिहार संपर्क क्रांतिक प्रथम श्रेणी एसी कोचसँ दरभंगा बिदा भेल रही । ओ टैक्सीबला कमाल आदमी छल । जखन कखनो हमरा अहाँक संगे कतहु जेबाक होइत छल तँ हम ओकरे टैक्सी लैत छलहुँ । ओ एकटा समांग जकाँ काज अबैत छल । नीकसँ अहाँकेँ शायिकापर सुता दैत छल । फेर अहाँक ह्वीलचेएर रखैत छल । गंतव्यपर पहुँचलाक बाद इतमिनानसँ अहाँकेँ उतारि दैत छल । एहिबेर सेहो ओ हमरा संगे रहए । अजमेरी गेट दिस हमरासभकेँ उतारि देलक। कूलीकेँ दोबर दाम दए अहाँकेँ ट्रेनमे बैसबाक ओरिआन केने रही । रस्ताभरि अहाँ बहुत प्रसन्न रही । हमरो आश्चर्य लागए जे असगरे

हम कोना अहाँकेँ सम्हारने जा रहल छी । मुदा सहयात्रीसभ बहुत सहयोग केने रहथि । जेना-तेना दोसर दिन करीब पाँच बजे हमसभ दरभंगा टीसन पहुँचल रही । दरभंगा टीसनपर राधे बहिन आ अहाँक पुतहु अपन जेठका बेटाकसंगे आएल रहथि । ओ सभ अहाँकेँ शुभंकरपुर(दरभंगा) अपन घरपर लए जाए चाहैत रहथि । परंतु,अहाँ अड़ि गेल रही जे गामे जाएब , आब गामेमे रहब , कतहु नहि जाएब । जखन अहाँक मोन औनाइत छल तँ अहाँक कहलापर कैकबेर हम फोन लगबैत छलहुँ । मुदा घंटी बजिते रहि जाइत छल। अहाँ एहि बातसँ बहुत दुखी भए जाइत छलहुँ । ताहि बातसभसँ अहाँ कहने रही-“आब कतहु नहि जाएब गाममे रहब।” संभवतःसएह बातसभ अहाँक मोनमे घुरिआ रहल छल ।

ओहि दिन विहार विधान सभाक हेतु मतदान होइत रहए। गामक हेतु टैक्सी नहि भेटैत रहए । हम जखन अहाँकेँ ई बात कहलहुँ तँ अहाँ रातिभरि दरभंगा (अनुजक घरपर) रहबाक हेतु मानि गेल रही। मुदा ताबे एकटा टैक्सीक जोगार भए गेल । हम दिल्ली अपन श्रीमतीजीकेँ फोन कए पुछलिअनि-

“गाम फोन कए दिऐक की?”

“नहि, नहि, कदापि नहि । ओ सभ गाम छोड़ि कए कतहु चलि जाएत ।”

हमरा हँसी लागि गेल रहए ।

“एहनो कतहु होइ जे गाम छोड़ि कए चलि जाएत ।”

तकर बाद राधे बहिनक संगे टैक्सीसँ गाम बिदा भेलहुँ । बेला मोर लग टैक्सी रोकि कए दू किलो मधुर किनलहुँ । कपिलेश्वर

पहुँचलापर महादेवकेँ प्रणाम केलिअनि । तकर थोड़बे कालमे हमसभ गाम पहुँचि गेल रही ।

गाम पहुँचि तँ गेलहुँ मुदा ओ तँ हमरासभकेँ देखितहि साइकिलपर चढ़ि चौकपर घसकि गेलाह । हाल-चाल के पुछैत अछि? घंटाभरि अहाँ ह्वील चेअरपर बैसल रहि गेलहुँ । के पानि देत,के पटिआ ओछाओत? आखिर,राधे बहिन चाह बनओलथि । तकर बाद हम मंदिरपर सुस्ताइत छलहुँ। नरेन्द्रजी मोटर साइकलसँ मतदान करए जाइत रहथि (ओहीदिन बिहार विधानसभाक मतदान रहैक)। हमरा देखि मोटर साइकिल रोकि हमरो ओहिपर बैसा लेलाह । हम मतदान केन्द्रपर फटकिए ठाढ़ भेल रही । हमर नाम गामक मतदाता सूचीमे नहि छल । नरेन्द्रजी मतदान कए अएलाह । फेर हुनके संगे चौकपर गेलहुँ । ओ दस-बारह गोटे संगे बैसल छलाह । हम पुछलिअनि-

"किएक तमसाएल छी?"

एतबा बात बजितहि लागल जेना बम फूटि गेल । तकरबाद जे ओ तमासा केलाह से लिखबाक जोग नहि अछि । गामोपर दूपहर राति धरि ओ हंगामा करैत रहलाह। कहुना कए राति बिता भोरे मधुबनी आबि गेल रही। जेना-तेना किछु दिनमे मामिला शांत भेल । अहाँ गामसँ दरभंगा पठा देल गेलहुँ आ हम दिल्ली वापस चलि गेलहुँ । (ई बात नवंबर २०१५क थिक)

अप्रैल २०१६मे हम दिल्लीसँ गाम गेल रही । अहूँ दरभंगासँ गाम आबि गेल रही । मुदा अहाँकेँ गाममे बहुत दिक्कत भेल। अहाँ वापस दरभंगा जाए चाहैत रही । मोसकिलसँ चारि मास बीतल होएत । अहाँक स्वास्थ गड़बड़ाए लागल । अगस्त २०१६मे हम फेर

गाम गेल रही । अहाँक प्रबल इच्छा छल जे दरभंगा अनुजक ओहिठाम जाइ। मुदा से नहि भए सकल । अंततोगत्वा,हम दिल्ली वापस चलि अएलहुँ ।

नवम्बर २०१६ छठिक पावनि लग-पासमे अहाँक हाल बहुत खराब भए गेल रहए । लोकक़ेँ पावनि संकटमे पड़ि गेल रहैक। मुदा से अहाँ बँचा देलिऐक । लोक छठिक पाबनि केलक । तकर बाद अहाँक हाल करवनो नीक,करवनो बेजाए होइत रहल । हमरा अनुमान भए गेल जे आब अहाँ नहि रहब । हमरा नहि रहल गेल । तुरंते हवाइ जहाजक टिकटक ओरिआन कए दोसर दिन भोरे हवाइ जहाजसँ पटना पहुँचलहुँ । पाँच बजैत-बजैत गाममे रही । मुदा अहाँकेँ तँ होस नहि रहए । हम गोर लगलहुँ । किछु उत्तर नहि देलहुँ। जोर-जोरसँ अहाँकेँ साँस लैत देखि डर होइत छल । देहक दुर्दशा देखि तँ अबाक रही । कहुना कए राति बीतल , भोर भेल । भरि दिन ओहिना समय बीतल आ साँझ होइत-होइत अहाँ हमरासभकेँ छोड़ि कए चलि गेलहुँ । अहाँ एहि संसारक मोह बंधनसँ मुक्त भए गेलहुँ ।

दोसर दिन दूपहरमे गाजा-बाजाक संगे अहाँक अंतिम यात्रा बहार भेल छल । करीब एक सएगोटे कलममे अंतिम संस्कारक समयमे रहथि । चौरानवे वर्षक बएसमे एकटा महान आत्मा एहि संसारकेँ छोड़ि कए चलि गेल रहथि । हमर कष्टक अंत नहि रहए । एकटा अहीं रही जे जीवन भरि दिन-राति आशीर्वादक वर्षा करैत रहलहुँ , हमर कल्याणक हेतु सदति सचेष्ट रहलहुँ । मुदा करवनो-ने-करवनो तँ अहाँ थकितहुँ। नओ वर्षक रही तरवने बिआहक बाद अहाँ अड़ेर डीह आएल रही आ पचासी वर्ष एहि गाममे रहलहुँ । जीवन भरि अनवरत संपूर्ण परिवारक सेवा करैत

रहलहुँ । नओटा बेटा-बेटी आ तकर सभक एकटा बृहद परिवारकेँ सुखी-संपन्न छोड़ि गेलहुँ ।

चारि दिनक बाद जखन हमसभ अहाँक सारापर गेल रही तँ साराक आगि मिझा गेल छल । ओहिमेसँ बाँचल-खुचल हड्डीकेँ चुनि सिमरिआमे गंगामे प्रवाहित कएल गेल छल । पाँचमदिन सौंसे गामक बैसारमे हमर भातिज छओगाम जबार भोज हेबाक घोषणा केने छलाह । दिन-राति एक कए छओ गामक भोज भेबो कएल । महापात्र लोकनिकेँ नीकसँ नीक बरतनसभ दान देल गेलनि। कुल मिला कए सात लाखसँ ऊपरे खर्च कएल गेल । मुदा हमरा ई सभ व्यर्थ लगैत रहए । ई बात हम कैकबेर बजबो करी । एहि खर्चक आधो जँ अहाँक सेवामे लगा देल गेल रहैत तँ बाते दोसर रहैत । भोज-भात भेलैक । बारहदिन धरि निरंतर कर्म भेलैक। सभ किछु भेलैक जे अपनासभक ओहिठाम एहि समयमे होइत छैक । मुदा तकर की फएदा? मरलाक बाद केओ घुरि नहि आएल,ने कहलक जे ओकरा हेतु कएल गेल दान-पुण्य ओकरा पैठ भेलैक कि नहि । मुदा से सभ केलासँ इलाकामे यश-प्रतिष्ठाक संभावना तँ बनिए जाइत छैक ।

हम नहि बूझि सकलहुँ जे अहाँकेँ श्राद्धमे एतेक खर्चा भेलासँ किछुओ फएदा भेल कि नहि? स्वर्ग भेटल कि नहि? अगिला जन्म नीकठाम हेबामे किछुओ मदति केलक कि नहि ? भए सकैत अछि जे अहाँक उत्तर प्राप्त भेलाक बाद एहि बातसभक किछु निराकरण होअए ।

हमरा मोन पड़ैत अछि जे जखन मधुबनीक मकान बनओने रही तँ अहाँकेँ बहुत आग्रहपूर्वक ओतए लए गेल रही ।

रातिभरि अहाँ ओतए रहलहुँ । रातिमे सुतबा काल अहाँ कहने रही- "धीरेकेँ सेहो एहने मकान भए जइतैक ।"

तकरबाद फेर अहाँ कहिओ मधुबनीक हमर घरपर नहि जा सकलहुँ। ओ गाममे अहाँक रहिते मकान बना लेने रहथि । मुदा अहाँ ओहि मकानमे कहिओ नहि रहि सकलहुँ । अहाँ अपन घरमे बेसी सुखी छलहुँ। मुदा आब अहाँक ओ घर तोड़ि देल गेल अछि। आब ओहूठाम कोठा बनि गेल अछि। घरे-घर भए गेल छैक । हमरा लगैत अछि जे एहिबातसँ अहाँ बहुत प्रसन्न होएब । मुदा आब जौँ अहाँ गाम अएबो करब आ ओहिठाम तकबो करब तँ अहाँक कोनो आन बेटा ओतए नहि भेटताह। संभवतः इएह नियति छल ।

चिठ्ठी लिखैत-लिखैत कैकबेर हम भावनाक अन्हरमे सुन्नभए जाइत छी। कलम रुकि जाइत अछि । आँखिसँ नोर बहब रुकिते नहि अछि । तेँ तँ हम अहाँकेँ चिठ्ठी लिखबासँ बचैत छलहुँ। कहीं एहि चिठ्ठीक चर्च सुनि कए अपने लोकसभ अहाँक शांति ने भंग कए देथि ? कहीं आबो अहाँपर पक्षपातक आरोप नहि लगा देथि ? कहीं इहो ने कहि देथि जे मरलाक बादो ई बुढ़िआ जेठके बेटाक पक्ष लए रहल अछि । मुदा तै सभक डरे कतेक दिन गुम्म रहितहुँ । ओहुना तँ बातसभ मोनमे अबिते रहैत अछि । फेर अहाँसँ मोनक बात नहि कहब तँ कहबैक ककरा? अहाँ हमर माए,जन्मदात्री तँ छीहे,गुरु सेहो छी । अहाँकेँ नीकसँ बूझल अछि जे हम आओर ककरो गुरु नहि बना सकलहुँ । एहि संसारक प्रपंचसँ मुक्त करबाक भारो हम अहींकेँ दए देलहुँ।

अपना भरि अहाँ हमर बहुत संग देलहुँ। हम दिल्लीमे रहैत छलहुँ आ अहाँ गाममे-एक हजार किलोमीटरसँ बेसीए दूर । तथापि

सदति अहाँ न्यायार्थ हमर पक्ष लैत रहलहुँ जाहि कारणसँ अहाँकेँ ओतेक तंग कएल गेल । से सभ सोचि हमरा मोनमे बहुत क्षोभ होइत छल । अहाँ किएक हमर बात रखैत छलहुँ? किएक ने ओकरासभकेँ हमरा खिलाफ बाजए दिऐक?जतेक मोन होइतैक हमरा श्राप दैत,जे करैत । मुदा अहाँ तँ चैनसँ रहितहुँ ।

“हम से कोना करितहुँ? हम तँ माए छलहुँ । अहूँक आओर ओकरोसभक । सही बात कोना नहि बजितहुँ?”

हम जनैत छी जे अहाँ इएहसभ कहितहुँ ।

चिठ्ठी बड़ीटा भए गेल । असलमे पुरान घावकेँ ई चिठ्ठी जेना फेरसँ हरिआ देलक । रहि-रहि कए हाथ ठाढ़ भए जाइत अछि। हमरा होइत रहैत अछि जे अहाँकेँ अपना लगसँ गाम नहि लए जेबाक छल । दरभंगाक डाक्टरक बात नहि मानक छल । दिल्ली आनि शल्यक्रिया कए अहाँक हड्डी जोड़ेबाक छल । मुदा दरभंगाक डाक्टरक बात सुगम बुझाएल छल । सभक सएह इच्छा रहैक । परिणाम जे भेल से जनिते छी । सभ एक-दोसरक मुँह तकैत रहल । अंततोगत्वा, अहाँ चलि जाइत रहलहुँ । तकर बाद हम बहुत दिन धरि दुखी रही। रहि-रहि कए अहींक बारेमे सोचैत रही । फेर गीता पढ़नाइ शुरु केलहुँ जे आइ धरि नियमित चलि रहल अछि। ओहीसँ मोनमे शांति भेल । जकरा जखन जतए मरबाक होइत छैक तखने मरैत अछि , से बात बुझलहुँ ।

ओना अहाँ तँ जीवन भरि तपस्या केने छी । दिन-राति परिश्रम कए एतेकटा परिवारक रक्षा केने छी । कोनो व्रत-उपवास नहि छल जे अहाँ नहि करैत रही । एकादशी,चतुर्दशी ,रवि,मंगल आ कहि ने की-की । अपन नओ संतानक पालन तँ केनहि

रही,अपन नाति,नातिन,पौत्र-पौत्रीसभक सालों पालन-पोषण केने छी। गाम-घरमे जकरा जे पार लागल से मदति करैत रहलहुँ । एहन पवित्र आत्माकेँ मरणोपरांत कर्मकाण्डक मदतिक काज नहि भए सकैत अछि । आशा अछि जे हमर अनुमान सही होएत आ अहाँकेँ मुक्ति भेटि गेल होएत ।

अहाँकेँ आब की हाल अछि,अगिला जन्म केहन की भेल? की मुक्ति भए गेल?स्वर्गक की हिसाब रहल?कहीं हमरासभक मोह अहाँकेँ अखनो तंग तँ नहि केने अछि?ई बातसभ जानबाक जिज्ञासा हमरा मोनमे बनल अछि । आशा अछि जे चिठ्ठीक उत्तर दैत काल एहि बातसभक ध्यान राखब।

एकराति सपनामे देखलहुँ जे अहाँ खूब संपन्न घरमे जन्म लेलहुँ । अहाँक पिता अहाँकेँ बहुत मानैत छथि । अहाँकेँ बहुत नीक इसकूल-कालेजमे पढ़ओलथि । पढ़ि-लिखि कए अहाँ बहुत पैघ विद्वान भए गेल छी । मिथिलाक नारीसभकेँ सम्मान आ अधिकारक हेतु अहाँ आगू भए काज कए रहल छी । जँ से सभ ठीके होइक तँ सेहो अपन चिठ्ठीमे जरूरसँ लिखि देब ।

एकटा आओर बात । अहाँक पिता अहाँक जन्मसँ किछु दिन पूर्वे मरि गेल रहथि । अहाँ हुनकर मुँहो नहि देखि सकल रही,ने ओ अपन पहिल संतानकेँ देखि सकल रहथि । भए सकैत अछि जे स्वर्गलोकमे अहाँकेँ अपन पितासँ भेंट भेल होअए । जँ से भेल होइक तँ अपन चिठ्ठीमे सभबात फरिछा कए लिखब । ओ केहन छथि ? अहाँकेँ देखितहि ओ केना की कहलथि? भए सकैत अछि जे पिताक पहिल बेर भेल भेंटसँ अहाँ ततेक आह्लादित भेल होइ जे हमरा सन-सन अज्ञानी ,मूर्ख पुत्रक अपराधसभ बिसरा गेल होअए। से भेल होअए तँ बुझू हमरा मुक्ति भेटि गेल । मुदा हम से

सभ बुझबैक कोना? ओ तँ अहाँ चिठ्ठी लिखब तखने ने । तँ बिसरब नहि, पत्रोत्तर शीघ्र देब।

एकटा बात तँ बिसरले जाइत छलहुँ । बाबूजीसँ भेंट भेल कि नहि ? ओ तँ अहाँ सँ २६साल पहिने चलि गेल रहथि । जँ भेल तँ हुनकर समाचार जरूर लिखब ।

चिठ्ठी कनी पैघ भए गेल । मुदा रोकने नहि रोकाइत छल। संकोचवश, अखनो बहुत रास बातसभ लिखब छुटि गेल। अस्तु, क्षमा करब।

पत्रोत्तरक अभिलाषी,

अहाँक पुत्र,

रबीन्द्र

12.7.2020

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)(पेपरबैक)
https://pothi.com/pothi/node/195476.

भोरसँ साँझ धरि (सजिल्द)

https://pothi.com/pothi/node/209754.

प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.
स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.
फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.
नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/199847.

शंखनाद(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/200903.

इएह थिक जीवन(संस्मरण)

https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.

पाथेय

https://pothi.com/pothi/node/205009.

हम आबि रहल छी(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/206093.

प्रलयक परात(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/207234.

बीति गेल समय(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208351.

प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208632.

बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/209281.

राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/210181.

संयोग(कथा संग्रह)

https://rb.gy/edit6k.

नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास)

https://bit.ly/3The07Y

दीप जरैत रहए(उपन्यास)

https://t.ly/nU_E.

ठेहा परक मौलाएल गाछ(उपन्यास)

http://surl.li/qbtsu.

माटि बजा रहल अछि(यात्रा प्रसंग)

https://t.ly/ShvWs.

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.

Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि।